Janvi
VI 'C'

Ananya Rastogi
XII 'D'

Ayushi Nimesh
VIII 'C'

Vaibhavi
VIII 'C'

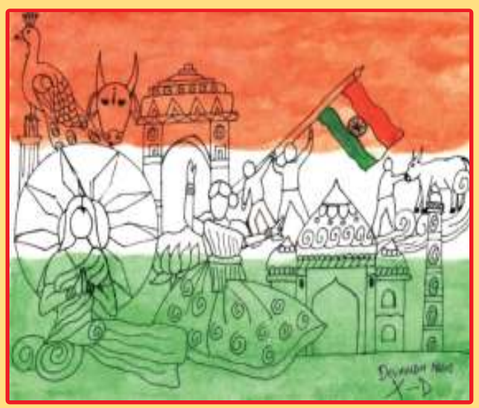

केंद्रीय विद्यालय संगठन

केंद्रीय विद्यालय सिख लाईन्स, मेरठ छावनी
Kendriya Vidyalaya Sikh Lines, Meerut Cantt.

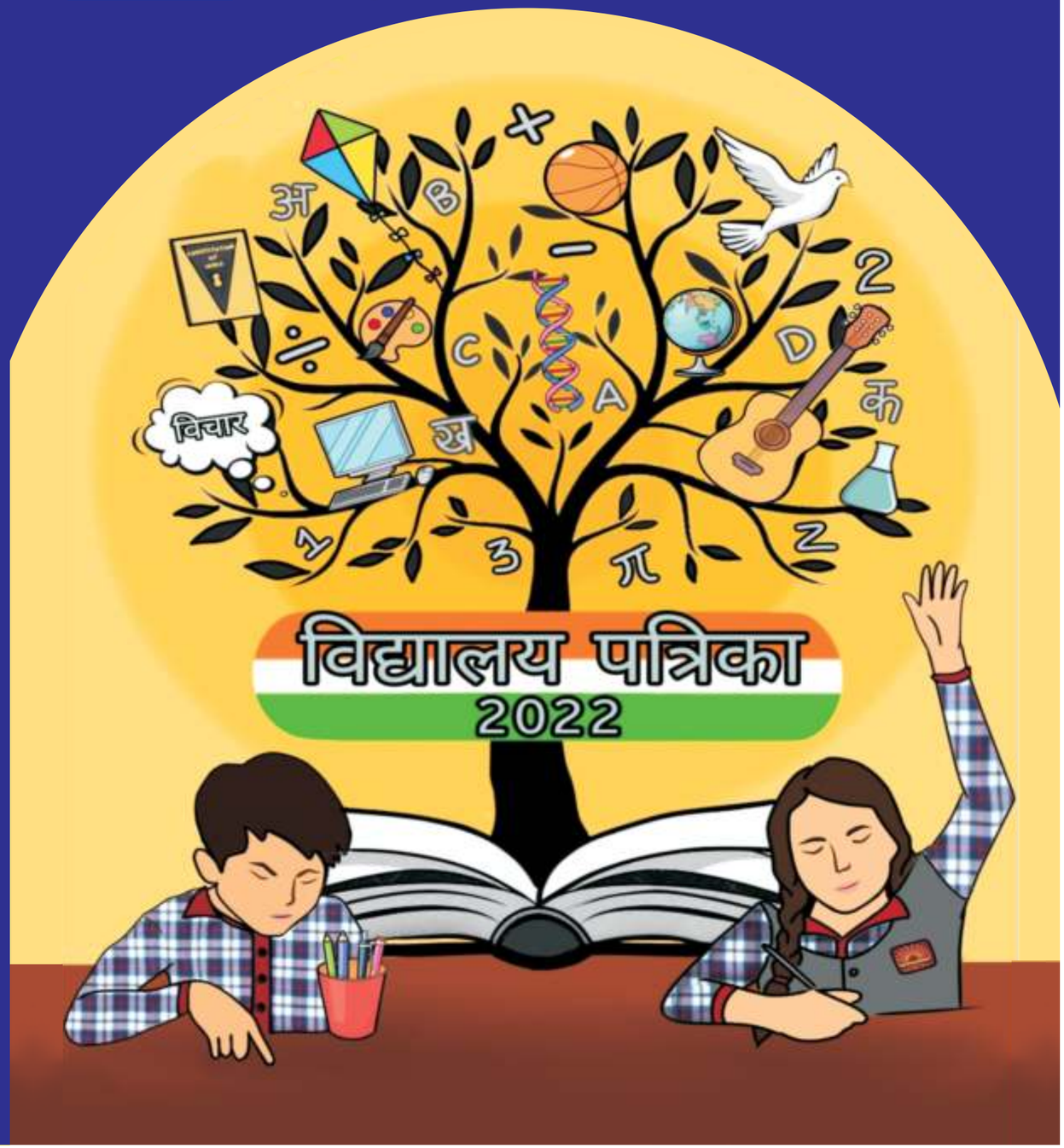

माध्यमिक विभाग

प्राथमिक विभाग

कार्यालय स्टाफ

उपायुक्त सर का विद्यालय आगमन

केन्द्रीय विद्यालय सिख लाईन्स, मेरठ छावनी

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

विद्यालय पत्रिका

सत्र–2022

संपादक मंडल

प्रारूप
श्री नवल सिंह
(प्राचार्य)

संपादिका
डॉ० ऋतु त्यागी
(पी.जी.टी. हिंदी)

सहायक संपादक

1. श्रीमती दिव्या कपूर (पी.जी.टी. अंग्रेजी)
2. श्रीमती विमलेश (टी.जी.टी. संस्कृत)
3. श्री अब्दुल आज़िम (टी.जी.टी. कला)
4. श्रीमती नीलम कुमार (पी.आर.टी.)

संपादक (विद्यार्थी वर्ग)

मा. सुजल	मा. अथर्व	कु. यूनिका	कु. चाँदनी	कु. शिवांगी मलिक
(बारहवीं 'ब')	(बारहवीं 'ब')	(बारहवीं 'ब')	(बारहवीं 'ब')	(आठवीं 'अ')

आवरण पृष्ठ

कु. प्रिंसेस शिवांगी वर्मा
(बारहवीं 'स')

केन्द्रीय विद्यालय संगठन / KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा/REGIONAL OFFICE, AGRA
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त निकाय)
(An Autonomous Body Under Ministry of Education, Govt. of India)
ग्रान्ड परेड रोड, आगरा छावनी / Grand Parade Road, Agra Cantt.
आगरा (उ.प्र.) - 282001 /Agra (U.P.) - 282001
फोन/Phone : 0562-2225523, 2225530, 2225583, 2225588
Email : dckvsroagra@gmail.com, Website : https://roagra.kvs.gov.in

(चन्द्रशेखर आजाद)
उपायुक्त

फा.स.30350/2022-23/के.वि.स.(आ.स.)/संदेश/

दिनांक : 26.09.2022

संदेश...

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय, सिख लाईन्स, मेरठ छावनी अपनी वार्षिक ई-पत्रिका 2022 का प्रकाशन करने जा रहा है।

विद्यालय पत्रिका वह दर्पण होती है जिसके द्वारा विद्यालय के चहुँमुखी विकास की जानकारी समाज को होती है।

पत्रिकाएँ छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों में निहित प्रतिभा और रचनात्मक क्षमता का विकास करती है और उनमें नव ऊर्जा के साथ आत्मविश्वास का भी संचार करती है। नव-निहाल बच्चों की लेखनी से निकली नवीन रचनाएँ अपने-अपने शब्द रंगों से आलोकित होकर विद्यालय गुलशन को और अधिक महकाती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन एवं साहित्यिक प्रतिभा के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

(चन्द्रशेखर आजाद)
उपायुक्त

Message by Chairman

'Education is the milk of tigress; One who drinks Roars'

1. A School is more than a concrete structure. It's a living organism with a spirit and its soul are student and teachers who bring the organism alive. Its no exaggeration when we refer to school as a Temple of Education.
2. School teachers shape the students who are in fact the future of the nation. A good school aim for overall development of its students. It also bears the responsibility of producing balanced personalities on the basis of imbibable values firmly ingrained in our culture & heritage. Kendriya Vidyalaya Sangathan has always exhibited a whole- hearted commitment in this auspicious & onerous responsiblity. As the Chairman of Kendriya Vidyalaya, Sikh Lines (Meerut Cantt), I can proudly state and appreciate that KV, Sikh Lines has left no stone unturned to churn out good human being who will become the responsibe citizens of the nation which is steadily growing towards its rightful place as VISHWA GURU. The school is consistently producing excellent results academically and in co-curricular activities. The management and staff have endeavoured to create the most conducive environment for its students and parents. KV Sikh Lines has achieved its vision only by functioning as a team of teachers, students and parents. It truly promotes the concept of a "Sabka Sath Sabka Vikaas" as envisaged by Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi.
3. I take pride to pen down a few words for the annual Vidyalaya Patrika. The Vidyalaya Patrika is a forum to showcase the creative expression of the students and also the hardwork & dedication of the Principal and Teachers. The School Principal, Teachers and Administrative staff have worked tirelessly towards achieving the aim of the school and I compliment them for their dedication.
4. The Vidyalaya Patrika is also a statement of the school's commitment to the field of education. It brings together the diverse and latent talent of the students and teachers alike. The Patrika is a manifestation of the students' literary and extra-curricluar skills. The Vidyalaya Patrika is a stepping stone for young minds to channelize their aptitude and discover their varied interests. I am sure you would find apt and interesting content in this edition of the magazine. I wish Kendriya Vidyalaya, Sikh Lines all the best for all its future endeavours.

Alind Srivastava
(Chairman)

From The Principal Desk

"Education is not the learning of facts but the training of the mind to think"

- Albert Einstein.

I am delighted to inform you that our Vidyalaya is bringing out a new edition of Vidyalaya magazine.

Magazine is the mirror of the Vidyalaya activities and achievements. Also, it is a document of reflecting student's literary skills. It gives a platform to students for showing their talent in the field of creativity.

Creative writing is a unique skill and to promote creativity in literary skills is the main purpose of publishing a Vidyalaya magazine. The variety and quality of the articles/poems/stories etc. in the magazine represent literary knowledge of the students. The reflection of the student's and teacher's creativity is epitome of the magazine.

I am sure that the positive attitude, hard work, sustained efforts and innovative ideas exhibited by our young writers will surely stir the mind of the readers.

Vidyalaya magazine is a milestone that marks our growth, unfolds our imagination and give life to our thoughts and aspirations.

I congratulate to the editorial board for its tireless efforts and dedication in bringing out this publication of the Vidyalaya magazine.

–With Best wishes

Naval Singh
(Principal)

संपादकीय

हेलो जूनियर्स,

हमारी विद्यालय पत्रिका का बहुप्रतीक्षित नवीन अंक एक बार फिर से कागज़ के पन्नों की भीनी-भीनी खुशबू के साथ हमारे हाथों में उपस्थित है। पिछले दो वर्षों में कोविड महामारी के जिस दौर का हम सभी ने सामना किया, उससे हमारी विद्यालय पत्रिका भी प्रभावित हुई...ख़ैर! तो जूनियर्स! होता ये है कि वक़्त रेत की तरह कब हाथों से फिसल जाता है? इसका पता स्मृतियों के ढेर से चलता है लेकिन जूनियर्स! आप बहुत अमीर हैं क्योंकि वक़्त का लम्बा टुकड़ा अभी आपके पास है.. तो वक़्त के इस टुकड़े के साथ इस बार मैं आपसे बात करूँगी आत्म विस्तार की..

जूनियर्स, कभी-कभी होता यह है कि हम अपने आत्म को एक पिंजरे में बंद करके अपने हिसाब से उसका दाना-पानी चलाने लगते हैं और भूल जाते हैं कि वह तो आकाश की निस्सीम ऊँचाइयों में उड़ने वाला परिंदा है जिसे हमने द्वेष, ईर्ष्या, घृणा और स्वार्थ के पिंजरे में बंद कर दिया है, ऐसे में वह सिकुड़ता चला जाता है और एक समय ऐसा आता है जब हमें उसकी जरूरत होती है तब हमारी पुकार उस तक नहीं पहुँच पाती... जूनियर्स, जानते हो तुम्हारे पास एक पेंसिल है जिसकी नोक इतनी धारदार है कि उस पिंजरे के दरवाज़े को खोल भी सकती है और तोड़ भी सकती है, बड़ी करामाती पेंसिल है यह, ये गोल-गोल घूमती दुनिया का अक्स बन सकती है पर इसके लिए इसे परिश्रम, ईमानदारी, सच और प्रेम के शब्दों का साथ चाहिए होता है और वह साथ आसानी से नहीं मिलता उसके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति भी चाहिए... जो मैं मानती हूँ कि तुममें है और अगर नहीं है तो तुम अपनी कोशिशों से उसे पा लोगे, कोशिशों में जादू होता है और जब ये घटता है तब हमारी हथेलियों के पर्वत ऊँचे हो जाते हैं....

आकाश थोड़ा नीचा हो जाता है ... तारें खिलखिलाकर हमारी पीठ पर बैठ जाते हैं...

अब बस इतना ही...

तुम सभी को हमेशा की तरह मेरा प्यार और आशीर्वाद.....

और इसी के साथ अंत में प्राचार्य महोदय श्री नवल सिंह जी का आभार जिनके निर्देशन के बिना इस पत्रिका का हम सभी के हाथों में आना संभव नहीं था, साथ ही पूरे संपादक मंडल का आभार और आप सभी का सबसे ज़ियादा जो इस विद्यालय की श्वासें हैं।

-डॉ० ऋतु त्यागी
पी.जी.टी. हिंदी
(संपादिका)

RESULT CBSE AISSE - 2022 (CLASS-XII)

(SCHOOL TOPPERS)

RAJU
PERCENTAGE-93.2%
COMMERCE STREAM

ISHA
PERCENTAGE-92.8%
SCIENCE STREAM

V. RENUKA
PERCENTAGE-92.6
HUMANITY STREAM

OVERRALL SCHOOL RESULT IS 99.35%

RESULT CBSE AISSE - 2022 (CLASS-X)

(SCHOOL TOPPERS)

MOHD OVESH
MARKS- 480
PERCENTAGE-96%

DEEPAK SINGH CHAUHAN
MARKS-479
PERCENTAGE-95.8%

VANSH KUMAR SAINI
MARKS-478
PERCENTAGE-95.6%

OVERRALL SCHOOL RESULT IS 99.39%

SCORE 100 MARKS :

SUB - SST

1. **MOHD OVESH (GUIDE TEACHER - MR. R.S. YADAV)**
2. **KANAK (GUIDE TEACHER - MRS. SIMMI SINGH)**

योग दिवस 21 जून 2022

योग और स्वास्थ्य

योग दिवस 21 जून 2022 माननीय सांसद लोक सभा श्री राजेन्द्र अग्रवाल जी एवं माननीय सांसद (राज्य सभा) श्रीमती कान्ता कर्दम जी की उपस्थिति में शहीद स्मारक पर मनाया गया।

योग और स्वास्थ्य

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

REGIONAL GAMES & SPORTS AGRA REGION, 2022-23

Performance

(1) Kho-Kho	U-17	Boys	Ist Place	Gold
(2) Kho-Kho	U-17	Girls	Ist Place	Gold
(3) Kho-Kho	U-14	Boys	IInd Place	Silver
(4) Kho-Kho	U-14	Girls	IInd Place	Silver
(5) Basket Ball	U-17	Boys	IIIrd Place	Bronze
(6) Basket Ball	U-17	Girl	IInd Place	Silver
(7) Boxing		Boys	IIIrd Place	Bronze
(8) Yoga		Girls	IIIrd Place	Bronze

U-14 Boys

(1) 100 m	Master Shiva	IX-A	Bronze
(2) RELAY 4x100 m Gold-			
(a) Master Lucky		VIII-C	
(b) Master Vansh		IX-B	
(c) Master Ayush		VIII-A	
(d) Master Shiva		IX-A	

U-19 Boys

(1) High Jump	Love Beniwal (Selected for National)	XI-C	Gold
(2) RELAY 4x400 m Silver-			
(a) Master Aman Tomar		XII-C	
(b) Master Harshit Yadav		XII-C	
(c) Master Deepak		XII-C	
(d) Master Manish Ch.		XII-A	

Performance

(1) Aditya Kumar	Gold	Selected for National
(2) Kunal Yadav	Gold	Selected for National
(3) Yashvir Kumar	Gold	Selected for National
(4) Priyanshu	Silver	
(5) Kshitiz	Bronze	
(6) Nishant	Silver	

Swimming

(1) Shivansh Kaushik	X-D	1-Silver	1-Bronze
(2) Vansh Devgun	XII-A	2-Gold	Selected for National

Taekwondo

(1) Shibanshu Marik	IX-D	Gold

U-17 /U-19 Girls

(1) Nidhi	VIII-A	1-Gold
(2) Sidhi	X-A	2-Gold, 1-Silver
(3) Khushboo	X-D	2-Gold, 1-Silver
(4) Tapasya	X-A	3-Gold
(5) Palak	X-D	2-Gold, 1-Bronze
(6) Aditi	IX-D	1-Silver

U-17 Boys

(1) Vansh Kumar	IX-A	1-Gold, 1 Silver
(2) Vaibhav	VII-A	2-Gold
(3) Kunal Sharma	VII-A	1-Gold, 1-Bronze
(4) Abhi	IX-D	1-Gold, 1-Bronze

Report on Inspire Award (Manak) 2021-22

Vidyalaya Programme I/C- Mr. Jitendra Kumar

(1) Master Anshul Kumar	IX-A	Guide Teacher-Mr. Jitendra Kumar
(2) Master Vansh Arya	X-A	Guide Teacher-Mrs. Sarita Yadav

MRS. SIMMI SINGH, TGT SOCIAL SCIENCE

IN 2022 Launched an Educational APP "Key 2 Study" on the Google Play Store, Especially Designed for CBSE Class X SOCIAL SCIENCE Students

---

"SCHOOL INNOVATION AMBASSADOR" by the Ministry of Education & Innovation Cell, Govt. of India. Aicte & CBSE

"REDRESS OF THE PUBLIC SECTOR UNITS AND A STEP TOWARDS PRIVATIZATION" recently in 2022 in the book

"PRIVATIZATION OF PUBLIC SECTOR IN INDIA"

ALL INDIA EDUCATION FORUM RESOURCE PERSON

INNOVATIONS/ ACHIEVEMENTS

Mrs. Shalini Bhandari, PGT Biology of KV Sikh Lines Meerut Cantt, Agra region has published an app in the month of June, 2022 called BIOLOGY MCQ's on Google play store which have all type of 1 Mark question like MCQ's, Fill in the Blanks, Very Short Questions and True/False to made learning easy and provide online platform for the students to check their grasp. This app will be highly recommended to Class XI

This is the link to her app
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.theappsstation.android5eb7580a84le7

हिन्दी विभाग

कोरोना निबंध

कोरोना वायरस कहाँ से आया, कैसे आया? हमें पता ही नही चला। लेकिन समाचार की दृष्टि से यह कोरोना वायरस चीन के वुहान राज्य से फैला। कहा जाता है कि चीन के वुहान राज्य के समुद्री-खाद्य बाजार अर्थात पशु मार्किट से निकलकर चीन के कई राज्यों में फैला और देखते ही देखते इसने लाखों लोगों की जिन्दगी से खेलना शुरू कर दिया। 7 जनवरी, 2020 को चीन ने वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन ने नए वायरस 'कोरोना वायरस' (Covid 19) के बारे में जानकारी दी।

कोरोना वायरस के लक्षण :-

तेज बुखार, गले में दर्द और साँस लेने में तकलीफ अंत में यह फेफड़ों को कमजोर बना देता है, जिससे मरीज को साँस लेने में तकलीफ होती है यह दूसरे अंगों को भी काम नहीं करने देता है, जिससे मरीज की मृत्यु हो जाती है।

कोरोना वायरस से बचने के कुछ उपाय :-

स्वयं को कोरोना वायरस से मुक्त रखने के लिए हमें 20 सेकेण्ड तक बार-बार अपने हाथ धोने चाहिए। हम चाहे तो हैन्ड सैनेटाइजर का उपयोग कर सकते हैं। हमेशा घर से बाहर निकालते समय मुँह पर मास्क पहन कर निकले और घर आकर मास्क को साफ कर लें। सामाजिक दूरी बना कर रखे। इस संकट की घड़ी में सभी देशों में लॉकडाउन करने का फैसला कर दिया जोकि सही उपाय है।

-सार्थक वर्मा
आठवीं 'स'

जिंदगी के झमेले

कुछ करना है तो डट कर चल।
थोड़ा दुनिया से हटकर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते है।
कभी इतिहास को पलटकर चल।।
बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के, दाम कैसा?
जब तक ना हासिल हो मंजिल।
तो राह में, आराम कैसा?
अर्जुन -सा निशाना रख।
मन में, ना कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने हैं, बस उसी पे अपना ठिकाना रख।।
सोच मत साकार कर।
अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।
किसी और का ना इंतजार कर।
जो चले थे अकेले उनके पीछे
आज मेले है.....
जो करते रहे इंतजार उनकी
जिंदगी में आज भी झमेले है।

-कशिश
आठवीं 'स'

रात एक आशा

चाँदनी रात हमें क्या कुछ नहीं सिखाती।
जिन्दगी के बारे में क्या कुछ नहीं बताती।
हौंसला मत खोना यदि सब खत्म–सा लगे,
उम्मीद की किरण हमेशा साथ होती हैं।
अंधेरा यदि आए तो कोने में मत छिप जाना,
चाँद–तारों की तरह खूबसूरती से चमक जाना।
यदि टूट जाओ तो आस न खो देना,
टूटते तारों की तरह इच्छाएँ पूरी कर देना।

–वैभवी
आठवीं 'स'

वीरों को नमन

नमन है उन वीरों को
जिसने गवाएँ थे अपने प्राण,
देश की रक्षा की खातिर
कर दिया जीवन का बलिदान।
नमन है उन वीरों को
जिसने लपेट लिया खुद को, तिरंगे में,
लेट गए उसकी गोदी में।
नमन है उन वीरों को
जिसने दिलाई आजादी हमें,
खुद का प्राण न्यौछावर कर
दिया सुनहरा कल हमें।

–खुशी शर्मा
बारहवीं 'स'

झंडा सदा रहे ऊँचा

नमन हैं उन वीरों को
जिन्होंने इस देश को बचाया
गुलामी की मजबूत बेड़ियों को
अपने बलिदान के रक्त से पिघलाया
और भारत माँ को आजाद हैं कराया।
झंडा ही हैं देश की शान
बना रहे यह सदा महान।

–नविष्टा
छठीं 'द'

आज का दौर

आज का दौर में लोग इतने मतलबी होने लगे है कि किसी को किसी से मतलब ही नहीं है सब अपने काम से काम रखते हैं और लोग किसी की मदद करना नहीं चाहते और करते भी है तो एहसान मानते है अगर दूसरा व्यक्ति उसकी मदद ना करें तो उस व्यक्ति को घमण्डी कहने में एक पल नहीं छोड़ते और एक दूसरे को नीचे दबाकर आगे बढ़ना चाहते है और कोई व्यक्ति किसी के नीचे काम नहीं करना चाहता और सोचता है कि वही सबसे बड़ा और बलवान है और अब के व्यक्ति को सिर्फ सोशल मीडिया से मतलब है कुछ भी करेंगे सबसे पहले अपने काम को सोशल मीडिया पर पोस्ट करेंगे यहीं तक नही बल्कि अगर किसी के साथ कुछ हादसा हो जाता है तो उसकी मदद करने की बजाय सबसे पहले सोशल मीडिया को दिखाएंगे और जिन लोगो के पास पैसा ज्यादा होता है उससे यह दोस्ती करना चाहते हैं उस व्यक्ति के लिए हर चीज करने के लिए तैयार रहते है और जो थोड़ा कम पैसे वाला व्यक्ति होता है चाहे वह कितना भी अच्छा क्यों ना हो उससे बात करना लोगों को पसंद नहीं होता लोग उसे कमजोर समझते है और अगर वह व्यक्ति कुछ करके आगे बढ़ जाता है तो लोग उसे द्वेष की भावना से देखते है और तो और यह भावना बड़ों में ही नहीं बल्कि बच्चों में भी आती जा रही है पुराने जमाने के बच्चे सबसे मिलजुल कर रहते थे और कभी भी दोस्ती करने में बराबरी नहीं देखते थे परन्तु आज के बच्चे अपने बराबरी वाले बच्चे से ही दोस्ती करते है और इस बराबरी वाली दोस्ती में बच्चे के माता–पिता को बच्चों को समझाने के बजाए उसका साथ देते है यदि अपने चारों तरफ देखा जाए तो लोगों के अंदर प्रेम की भावना खत्म होती जा रही है और द्वेष की भावना बढ़ती जा रही है ऐसा ही चलता रहा तो आगे चल के पता नहीं क्या होगा?

–अनुपम यादव
बारहवीं–ब

गुरू की महिमा

गुरू की ऊर्जा–, अम्बर–सा विस्तार।
गुरू की गरिमा से बड़ा, नहीं कहीं आकार।।
गुरू का सद्सान्निध्य ही, जग में है उपहार।
प्रस्तर को क्षण क्षण गढ़े, मूरत हो तैयार।।
गुरू वशिष्ठ होते नही, और न विश्वामित्र।
तुम्हीं बताओ राम का, होता प्रखर चरित्र?
गुरूवर पर श्रद्धा रखें, हृदय रखें विश्वास।
निर्मल होगी बुद्धि तब, जैसे रूई– कपास।।
गुरू की करके वन्दना, बदल भाग्य के लेख।
बिना आँख के सूर ने, कृष्ण लिए थे देख।।
गुरू ब्रह्मा–गुरू विष्णु है, गुरू ही मान महेश।
गुरू से अंतर पट खुलें, गुरू ही है परमेश।।
गुरू की कर आराधना, अंहकार को त्याग।
गुरू ने बदले जगत में, कितने ही हतभाग।।
गुरू की पारस दृष्टि से, लोहा बदलता रूप।
स्वर्ण कांति–सी बुद्धि हो, ऐसी शक्ति अनूप।।
गुरू ने लव–कुश गढ़े, बने प्रतापी वीर।
अश्व रोक कर राम का, चला दिए थे तीर।।
गुरू से नाता शिष्य का, श्रद्धा भाव अनन्य।
शिष्य सीखकर धन्य हो, गुरू भी होते धन्य।।
गुरू से लेकर प्रेरणा, मन में रख विश्वास।
अविचल श्रद्धा भक्ति ने, बदले है इतिहास।।
गुरू में अंतर ज्ञान का, चम–चम करे प्रकाश।
ज्ञान–ज्योति जाग्रत करे, करें पाप का नाश।।
गुरू ही सींचे बुद्धि को, उत्तम करे विचार।
जिससे जीवन शिष्य का, बने स्वयं उपहार।।

–गौरी अबरोल
आठवीं 'स'

सैनेटरी पैड/ पीरियड्स

सैनेटरी पैड/पीरियड्स ये शब्द हम सबने सुना ही होगा। हमारे समाज में इसे अलग या गलत नज़र से देखते है। दुकानदार इसे अखबार में छुपा कर देता है। लड़कियाँ पीरियड् या सैनेटरी पैड शब्द सुन बहुत शर्म महसूस करती है। मैं आज आप सबको यह बताना चाहता हूँ इस लेख के द्वारा कि सैनेटरी पैड या पीरियड्स कोई बुरी चीज़ या शर्माने वाला विषय नहीं हैं। पीरियड्स एक प्राकृतिक शरीर प्रक्रिया है जो हर 10–50 आयु वर्ग की महिला को होती है और सैनेटरी पैड पीरियड्स में उन्हें मदद करते है। यह हर उस लड़की या औरत को होते है जो आपकी माँ भी हो सकती है और आपकी बहन भी हो सकती है इसलिए इसका मजाक ना बनाकर हर उस नारी की मदद करें जो पीरियड्स के दौरान दर्द सहन कर रही है उससे प्यार या नम्रता से पेश आए। हर महीने दर्द सहन करना बहुत बड़ी बात होती है हम छोटी–सी चोट का दर्द सहन नही कर पाते और लड़कियाँ 5–7 दिन दर्द सहन करती है और किसी से कुछ कह नही पाती ये उनकी शक्ति है ना की एक ऐसा विषय जिस पर शर्म महसूस हो। हमें इसे अपनी आनेवाली पीढ़ी को भी समझाना चाहिए ताकि हमारी माँ बहन अपनी हर समस्या को खुल कर सामने रख सके।
(सोच बदलो भारत खुद बदल जाएगा)

–हिमांशु दहिया
सातवीं 'स'

तीन गुड़ियाँ

अकबर के दरबार में एक कलाकार आया। उसके पास बिलकुल एक जैसी तीन गुड़ियाँ थी। अकबर को वे गुड़ियाँ बहुत पसंद आई। उन्होने कलाकार से उनके दाम पूछे लेकिन वह उन्हे बेचना नही चाहता था वह बोला जहाँपनाह! ये गुड़ियाँ मैं उसी को दूँगा जो इनमें से सबसे अच्छी गुड़ियाँ चुनकर बताएगा। यही इनका दाम है अकबर ने अपने दरबारियों की ओर देखा कोई बोला इनमें तो कोई अंतर नही है। यह व्यक्ति हमें मूर्ख बना रहा है तो कोई बोला ये तो हुबहू एक जैसी हैं। सभी दरबारियों ने प्रयास किया। लेकिन कोई सफ़ल न हुआ। बीरबल की बारी आई उसने तीनों गुड़िया हाथ में लेकर देखीं। वे कभी गुड़ियाँ के कान में फूँक मारते तो कभी उनके मुँह पर हाथ रखकर देखते। कुछ समय बाद बीरबल बोले ''जहाँपनाह! यह तीसरी गुड़िया सबसे अच्छी है'' सब आश्चर्यचकित थे की बीरबल ने यह कैसे पता लगाया! अकबर बोले ''वह कैसे''? बीरबल ने समझाते हुए कहा–जब मैंने पहली गुड़िया के कान में फूँक मारी तो उसके दूसरे कान से हवा निकल गई। ऐसे लोग दूसरों की बातों को अनसुना कर देते हैं। जब दूसरी गुड़िया के कान में फूँक मारी तो उसके मुँह से हवा निकली। यह उन लोगों की तरह है जो सुनी हुई हर बात दूसरों को बता देते हैं। ऐसे लोग विश्वसनीय नही होते। जब तीसरी गुड़िया के कान में फूँक मारी तो न उसके मुँह से हवा निकली, न कान से। यह उन लोगों के समान हैं जो दूसरे की गुप्त बातों को सुनते है और किसी को नही बताते। ऐसे लोग श्रेष्ठ होते है। जहाँपनाह, इसलिए यह तीसरी गुड़िया सबसे अच्छी है। कलाकार आश्चर्य में कहता हैं आज तक में कईं राज्यों में यह सवाल लेकर गया पर किसी न इसका सही जवाब नही बताया परंतु बीरबल ने एकदम सही पहचाना। मैं उन्हें ये गुड़िया तोहफे में देना चाहता हूँ। एक बार फिर बीरबल ने अकबर का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया।

-कनिका
आठवीं 'ब'

तीन भाई एक बहन की कहानी

एक गाँव में एक सुखी परिवार रहता था। उस परिवार में तीन भाई और एक बहन थी। उनके माँ–बाप उन चारों से बेहद प्यार करते थे। मगर बीच वाले बेटे से थोड़ा परेशान थे। क्योंकि बड़ा बेटा पढ़ लिखकर डॉक्टर बन गया और छोटा बेटा भी पढ़ लिखकर इंजीनियर बन गया था। मगर उनका बीच वाला बेटा बिल्कुल अनपढ़ और आवारा ही बनकर रह गया। अब उनके दो बेटे डॉक्टर और इंजीनियर ने शादी भी कर ली थी। और कुछ महीनों के बाद ही उनकी बेटी की भी एक अच्छे घराने में शादी हो गई थी। मगर बीच वाला बेटा अभी भी कुँवारा ही था। क्योंकि वो बिल्कुल अनपढ़ था और कहीं पर मजदूरी का छोटा–सा काम करता था। इसीलिए उसकी शादी के लिए कोई भी लड़की नहीं मिल रही थी। और उसके माँ–बाप उससे बहुत परेशान हो चुके थे। अब जब भी उसकी बहन अपने मायके आती तो पहले वो अपने डॉक्टर और इंजीनियर भाइयों से मिलती थी। मगर बीच वाले से वो बहुत कम मिलती थी क्योंकि वो उसे ज्यादा पैसे नही दें पाता था लेकिन फिर भी वो अपनी बहन से बहुत प्यार करता था। अब उनके पिताजी की बीच वाले की शादी किये बिना ही मृत्यु हो गयी। उनकी माँ ने सोचा कहीं अब किसी के मुँह से बँटवारे की बात न निकले इसलिए अपने ही गाँव की एक सीधी–साधी लड़की से अपने गँवार बेट की शादी करवा दी। शादी होते ही न जाने क्या हुआ। अब उसका अनपढ़ बेटा पूरा मन लगाकार काम करने लगा। और पहले से कही ज्यादा मेहनत भी करने लगा। अब तो उसे कोई भी दोस्त बुलाने आता तो वो उसे यही कहता था। कि भाई पहले तो मैं जैसे–तैसे अकेला कमाकर खा लेता था। मगर अब मेरी शादी हो गई तो मुझे अपनी पत्नी के लिए भी कमाना पड़ता हैं। और कल को आनेवाले बच्चों के लिए भी तो कुछ जोड़ना ही पड़ेगा। इसलिए दोस्त अब मैं तेरे साथ नहीं घूम सकता। ये कहकर उसका गँवार लड़का सीधा अपने काम पर निकल जाता हैं।

-अंशू
आठवीं 'स'

हाँ! मैं लड़की हूँ!

वह लड़की है। वह जानती थी कि वह लड़की है। घर वाले भी जानते व कहते कि वह लड़की है। इसके अलावा रिश्तेदार, मुहल्ले वाले भी यही कहते कि वह एक लड़की है।

वह लड़की है, शायद इसी कारण घर और बाहर की निगाहें उसकें चारों तरफ ही रहती है कि वह कहाँ जाती है, कब आती है, क्या खा रही है, क्या पहन रही है, क्या कर रही है? अक्सर उसे उसकी औकात बताने को जताया जाता कि 'मत भूल तू एक लड़की है।' उसने जीवन में यह शब्द याद रखे कि 'याद रख तू एक लड़की है और इन्ही शब्दों ने उसे आगे पढ़ने की ओर प्रेरित किया और वह भी पढ़ाई में तन–मन से जुटी थी। आज जब सुबह सूरज ने अपनी किरणों को चारों ओर फैलाया तो मानों उसका जीवन भी आज रोशन हो उठा था आज सुबह के सभी समाचार पत्रों में मेरी तस्वीर छपी थी। क्योंकि उसने आई. ए. एस. अधिकारी के पद पर देश में प्रथम स्थान पर जगह बनाई थी। पत्रकारों ने उसका इन्टरव्यू लिया और पूछा कि आपकी कामयाबी के पीछे किसका हाथ है? किसने आपको इतनी बड़ी सफलता के लिए प्रोत्साहन दिया। उसने बड़े ही धैर्य से जवाब दिया।

'मैं एक लड़की हूँ।' इसी शब्द ने मुझे प्रेरित किया।

–सिमरन
बारहवीं 'ब'

अभिप्रेरणा आगे बढ़ने की

अगर आप फेल होते है तो हार न मानें, क्योंकि FAIL का मतलब होता है " First Attempt in Learning". End का मतलब होता है "Effort Never Dies". अगर जवाब में No मिले तो याद रखना कि No का मतलब है " Next Opportunity".

–सिमरन
बारहवीं 'ब'

बहुत जरूरी होती शिक्षा

बहुत जरूरी होती शिक्षा,
सारे अवगुण धोती शिक्षा।
चाहे जितना पढ़ ले हम पर,
कभी न पूरी होती शिक्षा।
शिक्षा पाकर ही बनते है,
नेता, अफसर, शिक्षक,
वैज्ञानिक, मंत्री, व्यापारी
या साधारण रक्षक।
कर्तव्यों का बोध करती,
अधिकारों का ज्ञान।
शिक्षा से ही मिल सकता हैं,
सर्वोपरि सम्मान।
बुद्धिहीन को बुद्धि देती,
अज्ञानी को ज्ञान।
शिक्षा से ही बन सकता है,
भारत देश महान।

–काजल दिवेदी
आठवीं–स

कविता

कुछ करना है तो डटकर चल।
थोड़ा दुनिया से हटकर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते है।
कभी इतिहास को पलटकर चल।।
बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के, दाम कैसा?
जब तक ना हासिल हो मंजिल।
तो राह में, आराम कैसा?
अर्जुन–सा निशाना रख।
मन में, ना कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने हैं, बस उसी पे अपना ठिकाना रख।
सोच मत साकार कर।
अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।
किसी और का ना इंतजार कर।
जो चले थे अकेले उनके पीछे
आज मेले है.....
जो करते रहे इंतजार उनकी
जिंदगी में आज भी झमेले है।।

धन्यवाद!

–प्राची त्यागी
चतुर्थ 'द'

आर्थिक ज्ञान का महत्व

दुनिया में हर व्यक्ति अमीर बनना चाहता है। वह भी चाहते है। वह भी चाहते है कि उनके पास अच्छी गाड़ी, अच्छा घर हो और उनका बिजनेस अच्छा चलता रहे, अच्छा कमाए और अच्छा खाएं। परन्तु कुछ लोग अमीर बन जाते और कुछ लोग अमीर नहीं बन पाते। बचपन से ही हमें स्कूल में और माता–पिता से सिखाया जाता हैं कि यदि हम अच्छे नंबर प्राप्त करेंगे तो हमें अच्छी नौकरी मिलेगी और हम बहुत सारा धन कमा सकेंगे। किन्तु जीवन में कई सारे लोग हैं जिन्हें कई सारी डिग्रियाँ प्राप्त हैं परन्तु आज भी उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं हैं।

असल में सच्चाई कुछ अलग हैं, जो लोग अमीर होते है उन्हें पैसों के मैनेजमेंट के बारे में ज्ञान होता हैं, उन्हें पैसो से पैसे कमाने का अजूबा ज्ञान होता है। वह अपना पैसा अच्छी जगह निवेश करते हैं जहाँ से उन्हें लाभ हो। उन्हें पैसों का अविष्कार करना आता हैं।

अमीर बनने के लिए हमें अपनी साकारात्मक सोच पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि हम किसी वस्तु को देखकर विचार करते हैं कि मैं यह चीज़ नहीं खरीद सकता तो हमें अपनी इस नाकारात्मक सोच को बदलकर सोचना चाहिए कि मैं इस चीज़ को कैसे खरीद सकता हूँ। हमें हमेशा इसी प्रकार अपनी सकारात्मक सोच रखनी चाहिए।

यदि हमें जीवन में सफल होना हैं तो हमें जोखिम अर्थात रिस्क अवश्य लेना पड़ेगा। हमें अपनी पढ़ाई पूरी करनी चाहिए परंतु पढ़ाई के साथ–साथ हमें फाइनेंसियल मैनेजमेंट का भी ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। हमें जीवन में सम्पत्ति और दायित्व का विशेष ज्ञान होना चाहिए क्योंकि संपत्ति से हमारी जेब में धन की बढ़ोतरी होती है वही दूसरी और दायित्व से हमारी जेब से धन की कमी होती हैं। हमारी सबसे बड़ी संपत्ति हमारा मस्तिष्क हैं।

–देवराज
नवीं 'अ'

हमारी जननी "माँ"

जब जन्म दिया उसने तुम्हें
तब दर्द वो सह गई,
जब चलना सिखाया उसने तुम्हें
तब सहारा वो बन गई,
खुद न खाकर तुम्हारा पेट
भरने वाली वो बन गई,
रोने पर आँसू पोंछ कर
होंठो पर मुस्कुराहट लाने वाली वो बन गई,
गलत राह से बचाकर
सही राह दिखाने वाली वो बन गई,
तुम्हें जन्म देकर
औरत से माँ कहलाने वाली वो बन गई।

–आयुषी निमेष
आठवीं 'स'

शिक्षक

हम स्कूल रोज हैं जाते
शिक्षक हमको पाठ पढ़ाते,
दिल बच्चों का कोरा कागज
उस पर ज्ञान अमिट लिखवाते,
जाति–धर्म पर लड़े न कोई
करना सबसे प्रेम सिखाते,
हमें सफलता कैसे है पानी
कैसे चढ़ना शिखर बताते,
सच तो ये हैं स्कूलों में
अच्छा एक इंसान बनाते,
रंग–बिरंगें फूलों से वो
संसार को सुंदर बाग बनाते,
तभी तो उनके शिष्य कभी अर्जुन
कभी राम बनकर हैं परचम लहराते।

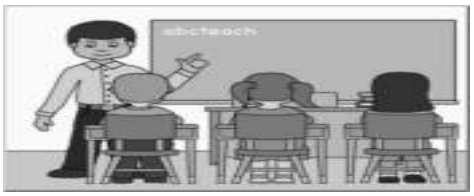

–दीक्षा सेंगर
आठवीं 'स'

चुटकुले

1. आज बहुत दिन बाद स्कूल के मैथ्स वाले टीचर से मुलाकात हुई उन्होंने पूछा–बेटा अब तो तेरे पेट में दर्द नहीं होता!
   'अब उन्हें कैसे बताऊँ की बात 17 के पहाड़े की थी'।
2. कल बहुत देर से दो लोग आपस में गाली–गलौच कर रहे थे, फिर वहाँ जाकर मैंने उन्हें समझाया तब जाकर मारपीट शुरू हुई।
3. आपको मालूम है? नाखून में खून क्यों नहीं होता है? क्योंकि उसका नाम हीं ना खून है।

4. हमारी दुआ में बहुत असर है :
   –एक दोस्त को दुआ दी कि सदा मुस्कुराते रहो, आज वो पागलखाने में हैं।
   –दूसरे को दुआ दी कि दुनियाँ तुम्हारे इशारे पर चले, आज वो ट्रैफिक पुलिस है।
   –तीसरे को दुआ दी कि तेरी जिन्दगी में फूल ही फूल हो, आज वो स्कूल में माली हैं।
   –चौथे को दुआ दी की सदा चमकते रहो, आज उसके सर पर एक भी बाल नहीं है।
   अब बताओं आपके लिए क्या दुआ दूँ।

–भारत चौधारी
छठीं 'अ'

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखाए।
माता–पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी राह न दूर मैं जिससे,
वह मेरा पथ दर्शक हैं जो।
कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में सदा गम्भीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा,
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

–कृतिका सैनी
नवीं 'ब'

योग

योग तंदुरुस्त रहने, स्वस्थ जीवन व्यतीत करने तथा संतुलन और सामजस्य बनाए रखने की मुख्य साधन है। योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'युज' शब्द से हुई हैं, जिसका मतलब 'जोड़ना' होता है। इसका अर्थ एकता भी है। योग स्वस्थ जीवन जीने की एक कला हैं। यह उचित जीवन जीने का विज्ञान हैं। यह व्यक्ति के विविध पहलुओं (जैसे–शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक) को प्रभावित करता है। यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का सम्मिश्रण है। योग इतना हीं प्राचीन है जितना कि यह संसार। इसकी उत्पत्ति सार्व–भौतिक इच्छा से हुई है जिसका उद्देश्य खुशी प्राप्त करना और पीड़ाओं से मुक्ति पाना हैं। यौगिक ज्ञान के अनुसार शिव को योग का संस्थापक माना जाता है। आजकल शारीरिक व्यायाम के लिए योग तकनीकों का सहारा लिया जाता है और अनेकों लोग व्यायाम के इस रूप को दैनिक जीवन पद्धति में अपनाते हैं जिससे शरीर अत्यधिक स्वस्थ रह सके। योग हमारे शरीर, मन और साँस का आपसी संबधों पर प्रकाश डालता है। यह आध्यात्मिक गतिविधियों का एक समूह है। योगाभ्यास मन, शरीर और चित्त एकीकृत करने के उद्देश्य से किया जाता है। जिससे कि प्रबोधन प्राप्त होता है। यह विश्व के साथ समन्वय स्थापित करता है। योग मुद्रा की एक श्रृंखला है यह हमारे विविध आयामों को संगृहित करता है। यह हमारे मन को भी नियंत्रित रखता है।

–गुनगुन शर्मा
नवीं 'ब'

कोरोना

''2020 में एक राक्षस आया था।
उसने सबको बड़ा डराया था।
हम सबको घरों में छुपाया था।
जिससे सारा जग घबराया था''
स्कूलों को बंद करवाया था।
अपनों से दूर करवाया था।
श्मशानों को भरवाया था।
अस्पतालों को भरवाया था।
घरों को सूना कराया था।
माँ–बाप का साया उठाया था।
वह एक कोरोना आया था।
वह एक कोरोना आया था।

-अनोखी
चतुर्थ 'ब'

साथी तू मुस्कुराए जा

एक दीप प्रज्वलित कर वहाँ
जहाँ गहन हो अंधकार
ज्योतिपुंज की हो पुकार
तू आशा का दीप जलाए जा
साथी, तू मुस्कुराए जा
तिमिरांचल फैलाये खड़ी विभावरी
दिशा न कोई दिखे
बन उसका सहभागी तू,
पथ प्रशस्त कराए जा
तू आशा का दीप जलाए जा
साथी, तू मुस्कुराए जा।।
वेदनाएँ साँस लेती जहाँ
दुखभरी कोठरियों में,
तिल–तिल मरती भावनाओं की
ज्वाला से भरी पोटलियों में,
आबशार बन तू हिम कुंज की,
आगोश में अपने लिपटाय जा
तू आशा का दीप जलाए जा
साथी तू मुस्कुराए जा।
साथी तू मुस्कुराए जा।

-नीलम कुमार नील
(प्राथमिक अधयापिका)

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म को दुनिया का चौथा सबसे बड़ा धर्म माना जाता है। भगवान बौद्ध धर्म की स्थापना की थी, भारत समेत कई देशों में बौद्ध धर्म के लोग रहते हैं, बौद्ध धर्म भगवान बुद्ध की शिक्षाओं और जीवन के अनुभवों पर आधरित है। बुद्ध का असली नाम सिद्धार्थ गौतम था। महान गौतम बुद्ध ने दुनिया को अहिंसा, करूणा और शांति से जुड़े उपदेश दिए हैं, आइये जानते हैं बौद्ध धर्म के अनुसार, गौतम बुद्ध के 8 ऐसे उपदेश, जो हमारी जिंदगी में बदलाव ला सकते हैं। गौतम बुद्ध के द्वारा दिए गए उपदेश :–

1. जीवन में अगर शांति और खुशी चाहिए, तो मनुष्य को भूतकाल और भविष्य काल में नहीं उलझना चाहिए।
2. मनुष्य को क्रोध की सजा नहीं मिलती, बल्कि क्रोध से सजा मिलती है।
3. हजारों लड़ाइयों के बाद भी मनुष्य तब तक नहीं जीत सकता, जब तक वह अपने ऊपर विजय प्राप्त नहीं कर लेता हैं।
4. सूर्य, चंद्र और सत्य..... ये तीन चीजें कभी नहीं छिप सकती।
5. मनुष्य को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने से अधिक अपनी यात्रा पर ध्यान देना चाहिए। जैसे हजारों शब्दों से एक अच्छा शब्द जो शांति प्रदान करता हो।
6. बुराई से बुराई खत्म नहीं होती, बुराई को प्रेम से ही खत्म किया जा सकता हैं।
7. सत्य की राह पर चलने वाला मनुष्य दो ही गलतियां कर सकता है, या तो पूरा रास्ता तय नहीं करता या फिर शुरूआत ही नहीं करता।
8. गुस्सा होने का मतलब जलता हुआ कोयला दूसरे पर फेंकना, जो पहले स्वयं के हाथों को ही जलाता है।

-देवराज
ग्यारहवीं 'अ'

मेरा अधिकार स्वच्छ पर्यावरण

गत वर्ष लॉकडाउन के दौरान जब नदियां साफ हो गई, शहरों में भी चिड़ियों की चहचहाट सुनाई देने लगी तो जैसे बचपन की यादें ताजा हो गईं। साफ आसमान प्रदूषण रहित वायु। आखिर हम देखें तो मानव भी एक प्रकार का जीव हीं है, परंतु उसने शायद प्रकृति पर अपना हक कुछ ज्यादा ही समझ लिया है। यदाकदा कहीं पर लक्कडब़ग्गा, कहीं अजगर जैसे जानवर रिहायशी जगहों पर दिखाई देते हैं और हमारे पास उनसे जुड़ी कहानियां और किस्से भी भरपूर हैं। हम लोग पूरा जोर लगा कर उस जानवर को अपराधी की तरह पकड़वाते हैं क्योंकि शायद हम पृथ्वी और उसके संसाधनों पर अपना ही अधिकार समझते हैं। पृथ्वी के संसाधनों का दोहन मानव ने पूरे ज़ोर शोर से किया क्योंकि शायद ये उसके अनुसार उसके लिए विकास का मार्ग है और जितना ज़्यादा विकास उतना ज़्यादा कचरा। फिर चिंतन होता है कचरे के प्रबंधन का और उसमें हमारी भूमिका का। इसका हल भी हमारे पास हीं है अगर पीछे मुड़ कर अपने बड़ों से कुछ सीख लें और अपने बचपन में झांके तो हम उसका हल भी ढूँढ पाएंगे। मुझे अपने बचपन में याद हीं नहीं कि गांव में रहते हुए कोई कचरा घर से निकलता था, केवल चूल्हे की राख होती थी उसका भी प्रयोग बर्तन माँजने के काम में लिया जाता था। बचा हुआ खाना, सब्जियों और फलों के छिलके पशुओं को खिलाए जाते थे। कुछ भी बेकार नहीं और हरचीज का प्रयोग पहले से तय था और वो भी शून्य बर्बादी के साथ। हमारे पूर्वेज प्रकृति का ध्यान रखने के साथ–साथ, पशु–पक्षियों के दाना पानी का भी ख्याल रखते थे। वे अपने पर्यावरण को प्रकृति के नियमों के अनुसार रखते थे। आजकल शहरों में जगह–जगह जमा कचरे के ढेर दिख ही जाते हैं। भौतिकतावाद इस कचरे की जननी है और इसी के कारण हम इस कचरे के नीचे दब रहे हैं। पर समस्या है तो उसका समाधान भी हमारे पास ही है। आप सब बच्चे अपने घरों से प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकते हो जैसे–

- अपने घर में कम प्लास्टिक की थैलियां लाने के लिए अपने माता–पिता से अनुरोध कर सकते हैं।
- केवल एक बार प्रयोग में लाने वाली प्लास्टिक का पूर्णतया बहिष्कार करें।
- आप अपनी जरूरतें कम करें। ज़रूरत और विलासिता का फर्क समझें। विद्यार्थी जीवन कम जरूरतों के साथ अधिक सीखने का नाम है।
- माता–पिता सब्जी और फल लेने जा रहें हों तो उन्हें कपड़े या जूट का थैला दें।
- अपनी पसंद के कम से कम पाँच पौधें लगाएं और उनका ख्याल भी रखें।
- अपने घर में होने वाले फलों सब्जियों, अंडो के छिलकों को एक जगह जमा करके खाद बनाएं और उस खाद का पौधों में प्रयोग करें।
- पक्षियों के पीने के लिए रोज मिट्टी के बर्तन में पानी रखें और दाना भी रखें।
- Recycle होने वाली चीजों को अलग–अलग करके रखें और उन्हें रद्दी में दें।

बच्चों ध्यान रखें आप साफ स्वच्छ पर्यावरण में रहने का अधिकार रखते हैं लेकिन अधिकार हमेशा कुछ कर्तव्यों के साथ ही मिलते हैं।

–श्रीमती सरिता यादव
टी.जी.टी. विज्ञान

वीर जावान

हम भारत के वीर जवान।
ऊँची रहे हमारी शान।
हमको प्यारा हिंदुस्तान।
गाएँ देश प्रेम के गान।
हमें तिरंगे पर अभिमान।
अमर–जवान, इस पर तन– मन धन कुर्बान।

–हरगुनदीप
चतुर्थ 'ब'

चुटकले

टीचर संजू– यमुना नदी कहाँ बहती है।
संजू – धरती पर
टीचर – नक्शे में बताओं कहाँ बहती है।
संजू– – नक्शे में कैसे बह सकती है नक्शा गीला हो जाएगा।
टीचर – गोलू 5 में से 5 घटाने पर कितने बचेंगें।
गोलू – पता नहीं।
टीचर – अगर आपके पास पाँच भटूरे हैं और मैं सारे भटूरे आपसे ले लूँ तो आपके पास क्या बचेगा?
गोलू – छोले।

–निकुंज
चतुर्थ 'ब'

आशा का संसार

आशा ही जीवन है, तू हार नहीं सकता,
बिन आशा के संसार कर पार नहीं सकता।
कभी खोना न हिम्मत डर के न जाना बैठ
तू जब तक न माने, कोई डिगा नहीं सकता।
काँटे हो या मखमल, आगे हीं बढ़ते रहना,
तू भर ले खुद में साहस, कोई हरा नहीं सकता।
कर सब जीवों से प्यार, कर सबको तू स्वीकार,
जब ठान लिया तूने, कोई मार नहीं सकता।
जीवन के दो पहलू हैं, आशा और निराशा,
रख आशा अपने साथ, कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

–गुंजन तोमर
बारहवीं 'ब'

एक शेर

बहुत समय पहले की बात है। एक जंगल के किनारे बहुत ही अच्छा गाँवं था। लेकिन उस गाँव के ही पास में एक चट्टान थी, जिस पर शेर ने अपना रहने का ठिकाना बनाया हुआ था। गाँव के लोग शेर से बहुत ज्यादा डरते थे। एक बार शेर को बहुत तेज भूख लगी। जंगल में तो वह जा नहीं सकता था क्योंकि जंगल चट्टान से बहुत दूर था। उसने निश्चय किया कि वह आज गाँव में ही जाकर शिकार करेगा। अब वह चलता गया, और उसे पास में ही एक झोपड़ी दिखी। उसमें दीये कि रोशनी दूर से ही चमक रही थी। दीये की रोशनी को देख शेर को लगा कि यहाँ कोई तो जरूर होगा, आज यहीं चलता हूँ। शेर झोपड़ी के पास आ पहुँचा। लेकिन जब उसने खिड़की से अंदर झांक कर देखा तो वहां एक बच्चा था जो बहुत जोर–जोर से रो रहा था। शेर अंदर प्रवेश करने ही वाला था, कि वहां उस बच्चे की माँ आ गयी और अपने बच्चे को चुप कराने लगी। बच्चे की माँ बोल रही थी, ''चुप हो जा बेटा नहीं तो भालू आ जाएगा।'' बच्चा चुप नहीं हुआ। इस पर शेर सोचने लगा कि, कैसा बच्चा है भालू से नहीं डर रहा। तब फिर उसकी माँ बोली, ''बेटा चुप हो जा, लोमड़ी बाहर ही खड़ी है, वह तुझे ले जाएगी।'' बच्चा तो फिर भी चुप नहीं हुआ। शेर का आश्चर्य अब बढ़ता ही जा रहा था। अब उसके चुप न होने पर उसकी माँ बोली, ''बेटा चुप हो जा, देख तुझे लेने शेर आया है, वह खिड़की के पीछे से झांक रहा है।'' बच्चा तभी भी चुप नहीं हुआ। शेर अब बालक और उसकी माँ से बहुत भयभीत हो गया। वह सोचने लगा, इसे कैसे पता लगा कि मैं यहाँ हूँ, और यह बालक तो मुझसे भी नहीं डरता। जरूर यह कोई मायावी बालक होगा। फिर उसकी माँ ने उसे किशमिश दी और वह तुरंत चुप हो गया। तब उसकी माँ बोली, ''सब तुम्हारा नाटक था, तुम्हे तो किशमिश चाहिए थी! है न? ''अब शेर किशमिश का नाम सुनकर डर गया और सोचने लगा कि, कौन है यह किशमिश, शायद मुझसे अधिक शक्तिशाली जानवर होगा तभी तो यह बच्चा चुप हो गया। तभी एक जोर की आवाज हुई और शेर के पास कुछ गिरा। शेर को लगा कि किशमिश को उसके बारे में पता चल चुका है और वह उसको मारने आया हैं। शेर बहुत डर गया और उसने झटपट अपनी चट्टान की ओर दौड़ लगा दी। वह बिना कुछ खाए ही अपनी गुफा में चला गया।

–चारू भारती
दसवीं 'द'

इप्सिता विश्वास

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 8 मार्च 2019 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक विशेष समारोह में 44 महिलाओं और संस्थानों को नारी शक्ति पुरस्कार 2018 से सम्मानित किया देश में सर्वोच्च नागरिक सम्मान कहलाने वाला यह नारी शक्तिपुरस्कार महिला सशक्तिकरण और सामाजिक कल्याण में उल्लेखनीय योगदान देने वाली महिलाओं और संस्थानों को केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा प्रदान किया जाता हैं।

वर्ष 2018 के इन पुरस्कारों हेतु 1,000 से अधिक नामांकन प्रस्तुत किए गए थे जिनमें से 41 हस्तियों और 3 संस्थानों सहित कुल 44 चयन किया गया। इप्सिता बिस्वास एक भारतीय टर्मिनल बैलेस्टिक वैज्ञानिक है। 2019 में उन्हें भारत के सशस्त्र बलों, अर्धसैनिक बलों और रक्षा अनुसंधान और विकास में महिला सशक्तिकरण मे योगदान के लिए महिलाओं के लिए भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार नारी शक्ति सम्मान से सम्मानित किया गया।

इप्सिता विश्वास का जन्म और पालन–पोषण कोलकाता में हुआ था वह इंजीनियरों के परिवार में जन्मी लेकिन गणित से प्यार करने वाली इप्सिता सदैव डीआरडीओ को आगे बढ़ाना चाहती थी इसलिए 1988 में जाधवपुर विश्वविद्यालय से अनुप्रयुक्त गणित अर्थात अप्लाइड मैथ्स में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। स्नातकोत्तर के तुरंत बाद उन्होंने और विकास संगठन डीआरडीओ में नौकरी के लिए आवेदन किया और उनका चयन भी हो गया 1998 में टर्मिनल बैलेस्टिक रिसर्च लैबोरेट्री में शमिल हुई और अब एक लैब के तीन डिवीजनों का नेतृत्व करती हैं उनके काम में जीवन रक्षक उपकरणों, सुरक्षात्मक प्रणालियों और नाजुक गोलियों का मूल्यांकन शामिल है। 2016 में इप्सिता ने टीबीआरएल टीम का नेतृत्व किया जिसने कम घातक प्लास्टिक की गोलियां विकसित की जिनका प्रयोग जम्मू कश्मीर में भीड़ नियंत्रण के लिए किया गया। इन प्लास्टिक की गोलियों का प्रयोग सुरक्षाबलों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले मौजूदा हथियारों में किया जा सकता है।

मार्च 2019 में इप्सिता को महिलाओं के लिए भारत का सर्वोच्च नागारिक पुरस्कार 2018 को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा डीआरडीओ में महिला सशक्तिकरण में उनके योगदान और भारत के लिए बुलेट प्रूफ बनियान और अन्य सुरक्षात्मक पर प्रणालियों पर उनके काम के लिए सम्मानित किया गया था यह पुरस्कार राष्ट्रपति भवन में दिया गया उन्हें आत्मरिलायंस में उत्कृष्टता के लिए अग्नि पुरस्कार और उच्च ऊर्जा सामग्री सोसाइटी ऑफ इंडिया एच एम एस आई टीम अवॉर्ड फॉर मेरीटोरियस सर्विस से भी सम्मानित किया गया गोलियों का इस्तेमाल एके–47 राइफल में किया जा सकता है विश्वास और उनकी टीम भी ऐसी नाजुक गोलियां बनाने में शामिल रही हैं जो गोली से ज्यादा सख्ती से टकराने पर टूट जाती हैं प्रयास के मामले में को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। 57 साल की वैज्ञानिक इस इप्सिता बिस्वास टीबीआरएल में 3 तकनीकी डिविजनों की प्रमुख है 1998 से वे जीवन रक्षक उपकरणों के परीक्षण और मूल्यांकन कवच सामग्री के लक्षण वर्णन और अन्य क्षेत्रों में 10 वैज्ञानिक की टीम का नेतृत्व करती हैं।

महिलाओं की बढ़ती संख्या विज्ञान और अनुसंधान में कैरियर का विकल्प चुन रही है हिन्दुस्तान टाइम्स ने ट्राइसिटी की महिला वैज्ञानिकों पर नया साप्ताहिक कॉलम शुरू किया टर्मिनल बैलेस्टिक रिसर्च लैब की वैज्ञानिक इप्सिता विश्वास इस संभाग श्रृंखला में सबसे आगे हैं पिक्चरों का विकास और परीक्षण 57 वर्षीय इप्सिता विश्वास और उनकी टीम ने डीआरडीओं के तहत टी वी आर एल चंडीगड़ में सिर्फ डेढ़ साल में किया था जो 23 मई 2019 को हुआ। 2016 में आतंकवादी समूह हिज्बुल मुजाहिदीन के कमांडर बुरहान वानी की हत्या को लेकर कश्मीर वासियों और सेना के जवानों के बीच हुई झड़प में भीड़ को नियंत्रित करने के लिए छर्रो को दंगा नियंत्रत के रूप में भी जाना जाता है अपनी टीम के काम पर गर्व करते हुए विश्वास कहती हैं कि प्लास्टिक की गोलियां गैर घातक होती हैं और भीड़ को तितर–बितर करने के साधन के रूप में काम करती हैं, इन्ह फायर करने के लिए किसी खास हथियार की आवश्यकता नहीं होती और AK–47 का काम ठीक–ठाक होता है जिससे भारतीय सेना का 70% है यह गोली एक समय में केवल एक एक छोड़ी जाती है जो लक्ष्य के क्षेत्र को हिट करती हैं गोली की गति धीमी हो जाती है इसलिए मृत्यु दर को कम करती है कि मैं जीवन रक्षक उपकरणों के याथ काम करती हूं और वह भी हमारे सैन्य बलों के लिए अगर कोई छोटी चिड़िया को बचाता है तो यह अपने आप में एहसास है और जब मैं अपनी सुरक्षा के लिए जिम्मेदार बलों के लिए कवच बनाने का काम करती हूं तो यह जिम्मेदारी मुझे बहुत अच्छी लगती है।

–डॉ. श्रीमती पीयूष लता भाटी
(टी.जी.टी. हिंदी)

जब हवा चलती है..

बहुत समय पहले की बात है, आइस्लैंड के उत्तरी छोर पर एक किसान रहता था, उसे अपने खेत में काम करने वालों की बड़ी जरूरत रहती थी लेकिन ऐंसी ख़तरनाकजगह, जहाँ आये दिन आँधी–तूफ़ान आते रहते हो, कोई काम करने को तैयार नहीं होता था। किसान ने एक दिन शहर के अखबार में इश्तहार दिया कि उसे खेत में काम करने वाले एक मजदूर की जरूरत है, किसान से मिलने कई लोग आये लेकिन जो भी उस जगह के बारे में सुनता वो काम करने से मना कर देता, अंततः एक सामान्य कद का पतला–दुबला अधेड़ व्यक्ति किसान के पास पहुँचा। किसान ने उससे पूछा, ''क्या तुम इन परिस्थितियों में काम कर सकते हो ?'' ''हम्म, बस जब हवा चलती है तब मैं सोता हूँ।'' व्यक्ति ने उत्तर दिया। किसान को उसका उत्तर थोड़ा अजीब लगा लेकिन चूँकि उसे कोई और काम करने वाला नहीं मिल रहा था इसलिए उसने व्यक्ति को काम पर रख लिया। मजदूर मेहनती निकला, वह सुबह से शाम तक खेतों में मेहनत करता, किसान भी उससे काफी संतुष्ट था, कुछ हीं दिन बीते थे कि एक रात अचानक ही जोर–जोर से हवा बहने लगी, किसान अपने अनुभव से समझ गया कि अब तूफान आने वाला है। वह तेजी से उठा, हाथ में लालटेन ली और मजदूर के झोपड़े की तरफ दौड़ा। ''जल्दी उठो, देखते नहीं तूफान आने वाला है, इससे पहले सबकुछ तबाह हो जाए कटी फसलों को बाँध कर ढक दो और बाड़े के गेट को भी रस्सियों से कस दो, ''किसान चीखा, मजदूर बड़े आराम से पलटा और बोला, ''नहीं जनाब, मैने आपसे पहले ही कहा था कि जब हवा चलती है तो मैं सोता हूँ!! यह सुन किसान का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया, जी में आया कि उस मजदूर को गोली मार दें, पर अभी वो आने वाले तूफान से चीजों को बचाने के लिए भागा। किसान खेत में पहुँचा और उसकी आँखे आश्चर्य से खुली रह गयी, फसल की गांठें अच्छे से बंधी हुई थी और तिरपाल से ढकी भी थी, उसके गाय–बैल सुरक्षित बंधे हुए थे और मुर्गियां भी अपने दडबों में थी बाडे का दरवाजा भी मजबूती से बंधा हुआ था, सारी चीजें बिलकुल व्यवस्थित थी नुकसान होने की कोई संभावना नहीं बची थी, किसान अब मजदूर की ये बात कि ''जब हवा चलती है तब मैं सोता हूँ'' समझा चुका था, और अब वो भी चैन से सो सकता था। मित्रों, हमारी ज़िन्दगी में भी कुछ ऐसे तूफान आने तय है, जरूरत इस बात की है कि हम उस मजदूर की तरह पहले से तैयारी करके रखें ताकि मुसीबत आने पर हम भी चैन से सो सकें, जैसे कि यदि कोई विद्यार्थी शुरू से पढ़ाई करें तो परीक्षा के समय वह आराम से रह सकता है, हर महीने बचत करने वाला व्यक्ति पैसे की जरूरत पड़ने पर निश्चित रह सकता है, इत्यादि तो चलिए हम भी कुछ ऐसा करे कि कह सकें–''जब हवा चलती है तो मैं सोता हूँ।''

–ओम अग्रवाल
दसवीं 'द'

मिथिला की विदुषी गार्गी

मिथिला की विदुषी गार्गी वाचकन्वी ऋषि की पुत्री थी। अतः उनका पूरा नाम गार्गी वाचकन्वी था। वेदों और उपनिषद में उच्चस्तरीय ज्ञान रखने वाली गार्गी अपने समकालीन पुरूष दार्शनिकों के समकक्ष या उनसे अधिक ज्ञानवती मानी जाती थी। गार्गी को मिथिला के राजदरबार के नवरत्नों में स्थान प्राप्त था, वह काल मिथिला में विद्वता के स्वर्णकाल था। राजा जनक स्वयं विद्वान थे और उनके राज्य में विद्वान पूजित एवं प्रतिष्ठित थे, समय–समय पर उनके दरबार में विद्वानों के बीच शास्त्रार्थ तथा ज्ञान सभा का आयोजन होता रहता था, एक बार राजा जनक की पुत्रियों (सीता, उर्मिला, मांडवी एवं श्रुतकृति) की शिक्षा आरम्भ करने के समय इसी तरह का ज्ञान सभा आयोजन जनकपुर के दरबार में किया गया। इस ज्ञान सभा में याज्ञवल्क्य जैसे विद्वान से शास्त्रार्थ करने की हिम्मत किसी और में न था। वहाँ उपस्थित मिथिला के सारे विद्वान जब चुप बैठे थे तो निडर एवं खुले विचारधारा की स्वामिनी गार्गी ही ऐसी विदुषी थी जिन्होंने उनसे कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जिनका उत्तर विद्वान गुरू याज्ञवल्क्य ने कुछ ऐसे दिया जो आज भी सत्य और सांदर्भिक है।

प्रस्तुत है गार्गी और याज्ञवल्क्य के मध्य हुई प्रश्न उत्तर संवाद रूप में :–

गार्गी–ऐसा माना जाता है, स्वयं को जानने के लिए आत्मविद्या के लिए ब्रह्मचर्य अनिवार्य है परन्तु आप ब्रह्मचारी तो नहीं, आपकी तो स्वयं दो–दो पत्नियाँ हैं, ऐसे में नहीं लगता कि आप एक अनुचित उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है?

याज्ञवल्क्य–ब्रह्मचारी कौन होता हैं गार्गी? (जवाब में याज्ञवल्क्य पूछते हैं)

गार्गी–जो परमसत्य की खोज में लीन रहे।

याज्ञवल्क्य–तो ये क्यों लगता हैं, गृहस्थ परम सत्य की खोज नहीं कर सकता।

गार्गी–जो स्वतन्त्र हैं वही केवल सत्य की खोज कर सकता, विवाह तो बंधन है।

याज्ञवल्क्य–विवाह बन्धन हैं?

गार्गी–निसंदेह,

याज्ञवल्क्य–कैसे?

गार्गी–विवाह में व्यक्ति को औरों का ध्यान रखना पड़ता हैं, निरंतर मन किसी न किसी चिंता में लीन रहता हैं, और संतान होने पर उसकी चिंता अलग, ऐसे में मन सत्य को खोजने के लिए मुक्त कहाँ से हैं? तो निसंदेह विवाह बन्धन हैं महर्षि।

याज्ञवल्क्य–किसी की चिंता करना बन्धन हैं या प्रेम?

गार्गी– प्रेम भी तो बन्धन हैं महर्षि?

याज्ञवल्क्य–प्रेम सच्चा हो तो मुक्त कर देता हैं, केवल जब प्रेम में स्वार्थ प्रबल होता हैं तो वह बन्धन बन जाता हैं, समस्या प्रेम नहीं स्वार्थ हैं।

गार्गी–प्रेम सदा स्वार्थ ही होता हैं महर्षि।

याज्ञवल्क्य–प्रेम से आशाएँ जुड़ने लगती हैं तब स्वार्थ का जन्म होता हैं, ऐसे प्रेम अवश्य बन्धन बन जाता हैं, जिस प्रेम में आपेक्षाएं न हों, केवल देना जनता हो वही प्रेम मुक्त करता हैं।

गार्गी–सुनने में तो आपके शब्द प्रभावित कर रहे हैं महर्षि, परन्तु क्या आप इस प्रेम का कोई उदहारण दे सकते हैं?

याज्ञवल्क्य–नेत्र खोलो और देखो समस्त जगत निःस्वार्थ प्रेम का प्रमाण हैं, ये प्रकृति निःस्वार्थ प्रेम का प्रमाण हैं, ये प्रकृति निःस्वार्थता का सबसे महान उदाहरण हैं, सूर्य की किरणें, ऊष्मा, उसका प्रकाश इस पृथ्वी पर पड़ता हैं तो जीवन उत्पन्न होता है, ये पृथ्वी सूर्य से कुछ नहीं मांगती हैं, वो तो केवल सूर्य के प्रेम में खिलना जानती हैं और सूर्य भी अपना इस पृथ्वी पर वर्चस्व स्थापित करने का प्रयत्न नहीं करता हैं, ना हीं पृथ्वी से कुछ मागंता हैं, स्वयं को जलाकर समस्त संसार को जीवन देता हैं, ये निःस्वार्थ प्रेम हैं गार्गी! प्रकृति और पुरूष की लीला और जीवन उनके सच्चे प्रेम का फल हैं, हम सभी उसी निःस्वार्थता से उसी प्रेम से जन्मे हैं और सत्य को खोजने में कैसी बाधा। इन उत्तरों को सुन गार्गी पूर्णतः संतुष्ट हो जाती और कहती हैं '' मैं पराजय स्वीकार करती हूँ''। तब याज्ञवल्क्य कहते हैं गार्गी तुम इसी प्रकार प्रश्न पूछने से संकोच न करो, क्योंकि प्रश्न पूछे जाते हैं तो हीं उत्तर सामने आते हैं, जिसने यह संसार लाभान्वित होता हैं। मेरे विचार में उपरोक्त सम्बाद अभी भी सामायिक है।

–मो. ओवेश
ग्यारहवीं 'अ'

कुछ खास बातें..

1. अगर जिंदगी में कुछ पाना है तो तरीके बदलिए..... इरादे नहीं।
2. जब सड़क पर बारात नाच रहीं हो तो हार्न मार–मार कर परेशान न हों.. गाड़ी से उतरकर थोड़ा नाच लें, मन शान्त होगा, टाइम तो उतना ही लगना है।
3. इस कलयुग में रुपया चाहे कितना भी गिर जाए, इतना कभी नहीं गिर पाएगा जितना रुपयों के लिए इंसान गिर चुका है।
4. रास्ते में अगर मंदिर देखों तो प्रार्थना नहीं करो तो चलेगा, पर रास्ते में एम्बुलेंस मिले तब प्रार्थना जरूर करना, शायद कोई जिंदगी बच जाए।
5. जिसके पास उम्मीद है, वो लाख बार हार के भी, नहीं हार सकता।
6. बादाम खाने से उतनी अकल नहीं आती जितनी धोखा खाने से आती है।
7. आपका खुश रहना हीं आपका बुरा चाहने वालों के लिए सबसे बड़ी सज़ा है।
8. जिंदगी की मुसीबत उन बच्चों का रास्ता कभी नहीं रोक सकती, जो... बचपन में पेंसिल छोटी हो जाने पर उसके पीछे पेन का ढक्कन लगाकर, उसे फिर से पकड़ने लायक बना लेते थे।
9. रिश्ते और रास्ते एक ही सिक्के के दो पहलू हैं..... कभी रिश्ते निभाते–निभाते रास्ते खो जाते हैं..... और कभी रास्तों पर चलते–चलते रिश्ते बन जाते हैं।
10. बेहतरीन इंसान अपनी मीठी जुबान से ही जाना जाता है.....वरना अच्छी बातें तो दीवारों पर भी लिखी होती हैं।

–वरूण
बारहवीं 'ब'

विचार

- समस्याओं का अपना कोई साईज नहीं होता। वो तो सिर्फ हमारी हल करने की क्षमता के आधार पर छोटी और बड़ी होती हैं।
- बुराई को खुद में और अच्छाई को दूसरों में तलाश करो, यही आपकी सबसे बड़ी अच्छाई है।
- जीवन में सबसे बड़ा गुरू वक्त होता है...क्योंकि जो वक्त सिखाता है वो कोई और नहीं सिखा सकता।

–सुष्मिता
आठवीं 'ब'

स्काउट–गाइड की वार्षिक गतिविधियाँ

स्काउट–गाइड, कब व बुलबुल की सभा हर बुधवार को प्रार्थना सभा होती है जिसमें इनकी प्रार्थना व क्रिया–कलाप सम्मिलित हैं। वर्ष 2021–22 में द्वितीय सोपान शिविर लगा जिसमें 16 स्काउट व 16 गाइड्स ने सफलता प्राप्त की। इस सोपान में विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ स्काउट–गाइड की विशेष रूचि दिखाई। यह शिविर संभागीय स्तर पर था। द्वितीय सोपान के बाद तृतीय सोपान का ऑनलाइन आयोजन हुआ जिसमें आठ स्काउट व पाँच गाइड ने सफलता प्राप्त की। यह शिविर जिला स्तर पर था। राज्य पुरस्कार के लिए ऑनलाइन छः स्काउट ने चार गाइड्स ने सफलता प्राप्त की। स्काउट–गाइड के साथ –साथ कब–बुलबुल उत्सव भी ऑनलाइन आयोजित हुआ जिसमें आगरा, मेरठ कलस्टर के, यानि विद्यालय शामिल थे यह आयोजन संभागीय स्तर पर था जिसमें अपने विद्यालय के 6 कब्स, 4 बुलबुल थे। यह उत्सव 22 फरवरी यानी चिन्तन दिवस पर आयोजित हुआ। वार्षिक गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने में स्काउट–गाइड इंचार्ज श्री दलीप कुमार व अन्य सदस्यों का विशेष रूप से योगदान रहा।

–श्री उमेश कुमार
(टी.जी.टी. अंग्रेजी)
(प्रभारी स्काउट/गाइड)

जिंदगी

कल एक झलक ज़िंदगी को देखा,
वो राहों पर गुनगुना रही थी।
फिर ढूँढा उसे इधर–उधर,
वो आँख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी।
एक अरसे के बाद आया मुझे करार,
वो सहला के मुझे सुला रही थी।
हम दोनों क्यूँ खफ़ा हैं एक–दूसरे से,
मैं उसे और वो मुझे समझा रही थी।
मैंने पूछ लिया–क्यों इतना दर्द दिया कमबख्त तूने,
वो हँसी और बोली–मैं जिंदगी हूँ, पागल तुझे जीना सिखा रही थी।

–तरूण कुमार
ग्यारहवीं 'अ'

पर्यावरण और हम

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है परि+आवरण इसमें परि का अर्थ है 'चारों तरफ से' एवं आवरण का अर्थ है 'ढके हुए' अंग्रेजी में पर्यावरण को Environment कहते हैं इस शब्द की उत्पत्ति 'Envirnerl' से हुई और इसका अर्थ है–Neighbourhood अर्थात् आस–पड़ोस। पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है हमारे आस–पास जो कुछ भी उपस्थित है जैसे–जल–थल, वायु तथा समस्त प्राकृतिक दशाएँ, पर्वत, मैदान व अन्य जीवजन्तु, घर, मोहल्ला, गाँव, शहर, विद्यालय, महाविद्यालय आदि जो हमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

पर्यावरण की परिभाषा

विद्वानों द्वारा पर्यावरण की परिभाषा इस प्रकार है– **डगलस** व **रोमन हॉलेण्ड** के अनुसार ''पर्यावरण उन सभी बाहरी शक्तियों व प्रभावों का वर्णन करता है जो प्राणी जगत के जीवन स्वभाव, व्यवहार विकास एवं परिपक्वता को प्रभावित करता है।''

जे.एस. रॉस के अनुसार–''पर्यावरण या वातावरण वह वाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती हैं।''

हर्स, कोकवट्स के अनुसार–''पर्यावरण इन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है तो प्राणी के जीवन तथा विकास पर प्रभाव डालता है।''

डॉ. डेविज के अनुसार–''मनुष्य के सम्बन्ध में पर्यावरण से अभिप्राय भूतल पर मानव के चारों ओर फैले उन सभी भौतिक स्वरूपों से है जिनसे वह निरन्तर प्रभावित होते रहते हैं।''

डडले स्टेम्प के अनुसार– ''पर्यावरण प्रभावों का ऐसा योग है जो किसी के विकास एवं प्रकृति को परिस्थितियों के सम्पूर्ण तथ्य आपसी सामंजस्य से वातावरण बनाते हैं।''

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशन रिसर्च (मिट्जेल 1682) पर्यावरण के लिए शिक्षा वास्तव में एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा पर्यावरण संबधित असली और मूल मुद्दों की जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की है कि बच्चे इन समस्याओं के प्रति जागरूक बने और उनके संबध में गहराई से सोच–विचार करें और उन्हें हल करने में जुट जाये।'' उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि जो कुछ भी हमारे ओर विद्यमान है तथा हमारी रहन–सहन की दशाओं एवं मानसिक क्षमताओं को प्रभावित करता है पर्यावरण कहलाता है।

पर्यावरण के घटक

सौरमंडल का पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिस पर कि मानव जीवन, वनस्पति जीवन और पशु जीवन विकसित हो सका। पृथ्वी पर मानव सभ्यता और संस्कृति की प्रगति हुई। पृथ्वी को भूमण्डल भी कहते हैं इसके चार मण्डल हैः–

स्थल मण्डल–पृथ्वी के सबसे ऊपर की ओर ठोस परत पाई जाती है यह अनेक प्रकार की चट्टानों, मिट्टी तथा ठोस पदार्थों से मिलकर बनी होती है। इसे ही स्थल मंडल कहते है। स्थल मंडल में भूमि भाग व समुद्री तल दोनों ही आते हैं। स्थल मंडल सम्पूर्ण पृथ्वी का केवल 3/10 भाग है, शेष 7/10 भाग समुद्र ने ले लिया है।

जल मण्डल–पृथ्वी के स्थल मण्डल के नीचे के भागों में स्थित जल से भरे हुए भाग को जल मण्डल कहते हैं, जैसे–झील, सागर व महासागर आदि। 97.3% महासागरों में है। शेष 2.7% हिमनदों और बर्फ के पहाड़ों, मीठे जल की झीलों, नदियों और भूमिगत जल के रूप में पाया जाता है।

वायुमण्डल–भूमण्डल का तीसरा मण्डल वायुमण्डल है। स्थल मण्डल व जल मण्डल के चारों और गैस जैसे पदार्थों का एक आवरण है। इसमें नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, कार्बनडाइऑक्साइड व अन्य गैसें, मिट्टी के कण, पानी की भाप एवं अन्य अनेक पदार्थ, मिले हुए हैं। इन सभी पदार्थों के मिश्रण से बने आवरण को वायु मण्डल कहते हैं। वायु मण्डल पृथ्वी की रक्षा करने वाला रोधी आवरण हैं। यह सूर्य के गहन प्रकाश व ताप को नरम करता है। इसकी ओजोन (O_3) परत सूर्य से आने वाली अत्यधिक हानिकारक पराबैंगनी किरणों को सोख लेती है। इस प्रकार यह जीवों का विनाश होने से रक्षा करती है।

जैव मण्डल–जैव मण्डल का विशिष्ट लक्षण यह है कि वह जीवन को आधार प्रदान करती है। यह एक विकासात्मक प्रणाली है। इसमें अनेक प्रकार के जैविक व अजैविक घटकों का संतुलन बहुत पहले से क्रियाशील रहा है। जीवन की इस निरन्तरता के मूल में अन्योन्याश्रित सम्बन्धों का एक सुघटित तंत्र काम करता है। वायु–जल, मनुष्य, जीव–जन्तु, वनस्पति, लवक मिट्टी एवं जीवाणु ये सभी जीवन चरण प्रणाली में अदृश्य रूप से एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं और यह व्यवस्था पर्यावरण कहलाती है। सौर ऊर्जा सूर्य से प्राप्त होती है। ये जैव मण्डल को सजीव बनाए रखती है। जैव मण्डल को मिलने वाली कुल ऊर्जा का 99.98% भाग इसी से प्राप्त होता है।

–हर्ष भड़ाना
ग्यारहवीं 'अ'

पर्यावरण के प्रकार

पर्यावरण के कई प्रकार होते है। वैसे मुख्य रूप से पर्यावरण तीन प्रकार के होते है

1. भौतिक पर्यावरण या प्राकृतिक पर्यावरण–इसके अंतर्गत वायु, जल व खाद्य पदार्थ, भूमि, ध्वनि, उष्मा, प्रकाश, नदी, पर्वत, खनिज पदार्थ, विकिरण आदि शामिल हैं। मनुष्य इनसे लगातार सम्पर्क में रहता है। इसलिए ये मनुष्य के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव डालते हैं।
2. जैविक पर्यावरण–जैविक पर्यावरण बहुत बड़ा अवयव है जो कि मनुष्य के इर्द–गिर्द रहता है। यहाँ तक कि एक मनुष्य भी पर्यावरण का एक भाग है। जीवजन्तु व वनस्पति इस घटक के प्रमुख सहयोगी है।
3. मनो–सामाजिक पर्यावरण– मनो–सामाजिक पर्यावरण मनुष्य के सामाजिक संबंधों से प्रकट होता है। इसके अन्तर्गत सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास का अध्ययन करते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसे परिवार में माता–पिता, भाई–बहन, पत्नी तथा समाज में पड़ौसियों के साथ संबंध बनाकर रहना पड़ता है। उसे समुदाय प्रदेश एवं राष्ट्र से भी सम्बन्ध बनाकर रहना पड़ता है। मनुष्य सामाजिक व सांस्कृतिक पर्यावरण का उत्पाद है जिसके द्वारा मनुष्य का आकार तैयार होता है। रहन–सहन, खान–पान, पहनावा– औढ़ावा, बोल–चाल या भाषा शैली व सामाजिक मान्यताएँ मानव व्यक्तिगत का ढ़ाँचा बनाती है।

पर्यावरण के हानिकारक तत्व

1. हानिकारक गैसें– जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही है वैसे–वैसे मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वन काटकर औद्योगिक धंधों का विस्तार करता जा रहा है। कल–कारखानों से जहरीली गैसों का उत्सर्जन होता है जिससे हमारे सम्पूर्ण विश्व का पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। प्रदूषण से विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ फैलती जा रही हैं। नाक से साँस लेने म्रें परेशानी, पीलिया होना, सिरदर्द, दृष्टि दोष, क्षयरोग व कैंसर आदि रोग जहरीली गैसों के कारण होते हैं।
2. जल प्रदूषण– जल प्रदूषण का प्रभाव विश्व के समस्त देशों को प्रभावित करता है। समुद्री प्रदूषण को खनिज तेलों को ले जाने वाले जहाजों के दुर्घटनाग्रस्त होने व नदियों के प्रदूषित जल का समुद्र में मिलना आदि बढ़ावा देते हैं। समुद्री जल के प्रदूषण से जीव–जन्तु व मनुष्य के जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ते हैं और संक्रमण रोग हो जाते हैं।
3. विकरणीय प्रदूषण–विकरणीय प्रदूषण मानवीय स्वास्थ्य एवं उसके विकास के लिए हानिकारक होता है। इसका प्रभाव मानव शरीर के आंतरिक व बाहरी भागों पर पड़ता है। इसलिए रेडियोधर्मी विकिरण से बचना चाहिए।

–सुजल
बारहवीं 'ब'

सुविचार

1. रिश्तों में वैसा ही संबंध होना चाहिए.....
   जैसे हाथ और आँख में होता है।
   हाथ पर चोट लगती है तो आँखों से आँसू निकलते हैं और.....आँसू आने पर हाथ ही उनको साफ करता है।
2. गलतियाँ, विफलता, अपमान, निराशा और अस्वीकृति, ये सभी 'उन्नति' और 'विकास' का ही एक हिस्सा है। कोई भी व्यक्ति इस सभी पाँचों चीज़ों का सामना किए बिना ''जीवन'' में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता।
3. अच्छे व्यवहार का कोई आर्थिक मूल्य भले ही न हो लेकिन अच्छा व्यवहार करोड़ों दिलों को खरीदने की शक्ति रखता है।
4. इस संसार में.....

   सबसे बढ़िया दवा 'हँसी'
   सबसे बड़ी सम्पत्ति 'बुद्धि'
   सबसे अच्छा हथियार 'धैर्य'
   सबसे अच्छी सुरक्षा 'विश्वास'
   और आनंद की बात यह है कि ''ये सब निःशुल्क है''।
5. जिस तरह आकाश से गिरा हुआ जल किसी न किसी रास्ते से होकर समुंद्र तक पहुँच ही जाता है, उसी प्रकार निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा और प्रार्थना किसी न किसी रास्ते से ईश्वर तक पहुँच ही जाती है।
6. जिसका जैसा चरित्र होता है, उसका वैसा मित्र होता है। शुद्धता होती है विचारों में, आदमी कब पवित्र होता है। फूलों में भी कीड़े पाए जाते हैं, पत्थरों में भी हीरे पाए जाते हैं, बुराई को छोड़कर अच्छाई देखिए तो सही नर में भी नारायण पाएजाते हैं।
7. जैसे हलवे में काजू, बादाम, सूजी ये सब दिखाई देते हैं पर उसे मीठा बनाने वाली शक्कर हमें दिखाई नहीं देती, ठीक ऐसे ही हमारे जीवन में भी कुछ ऐसे लोग होते हैं, जो दिखाई नहीं देते पर उनके अपनेपन की मिठास हमारे जीवन को हमेशा आनंदित करती रहती है।
8. हमेशा खुश रहना चाहिए क्योंकि परेशान होने से कल की मुश्किल दूर नहीं होती बल्कि..... आज का सुकून भी चला जाता है।
9. इंसान जन्म के दो वर्ष बाद बोलना सीख जाता है, पर बोलना क्या है ये सीखने में उसे पूरा जन्म लग जाता है।

–लवलेश
बारहवीं 'ब'

महात्मा गांधी का सत्याग्रह सिद्धांत या सत्याग्रह की अवधरणा

सत्याग्रह की अवधारणा आधुनिक चिन्तन को गाँधी जी की विशिष्ट देन है। गाँधी जी ने अहिंसा के सिद्धांत को मूर्त रूप देने के लिये राजनीतिक क्षेत्र में जिस कार्य पद्धति का प्रयोग किया वह सत्याग्रह हैं। गाँधीजी का मानना था कि सत्याग्रह से एक शक्तिशाली साम्राज्य की जड़ें हिलाई जा सकती हैं और उन्होंने यह सिद्ध भी कर दिखाया था। यह कहा जा सकता है कि यह अपने में कोई मौलिक अवधारणा नहीं है। क्योंकि उपनिषदों में यह कहा गया है कि विश्व सत्य पर टिका हुआ है और अहिंसा का संदेश बुद्ध एवं महावीर स्वामी ने दिया ही था। परन्तु गाँधी जी का मुख्य योगदान इस तथ्य में है कि एक पुरानी अवधारणा के आधार पर उन्होंने बृहत पैमाने पर बुराई और अन्याय के विरूद्ध लड़ने की पद्धति आविष्कृत की।

सत्याग्रह से अभिप्राय

सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है–सत्य के लिये आग्रह करना। दूसरे शब्दों में, ''अहिंसा के माध्यम से असत्य पर आधारित बुराई का विरोध करना ही सत्याग्रह है।'' यह शारीरिक बल अथवा शस्त्रों की भौतिक शक्ति से सर्वथा भिन्न है। यह आत्मा की शक्ति है। सत्याग्रह का संचालन आत्मिक शक्ति के आधार पर किया जाता है। सत्याग्रह के सम्पूर्ण दर्शन का आधारभूत सिद्धांत यह है कि, 'सत्य की ही जीत होती है।'

सत्याग्रह से विशेषताएँ

सत्याग्रह की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) यह अहिंसात्मक होना चाहिए।

(2) सत्याग्रह विरोधी को कष्ट पहुँचाए बिना स्वयं कष्ट सहने की क्षमता है।

(3) यह विरोधी के पशुबल का सामना अपने आत्मबल व नैतिक शक्ति के आधार पर करता है।

(4) सत्याग्रह की पद्धति में विरोधी से घृणा नहीं की जाती वरन् उसकी सामान्य अवज्ञा से की जाती है।

(5) सत्याग्राही सदैव बुराई से घृणा करता है, बुरा करने वाले से नहीं।

(6) सत्याग्रह सबल एवं वीर का अस्त्र है, कायर एवं निर्बल का नहीं।

(7) सत्याग्रह के नैतिक शास्त्र का प्रयोग सभी व्यक्तियों द्वारा और सभी परिस्थितियों के अन्तर्गत किया जा सकता है।

सत्याग्रह के नियम

सत्याग्रह के प्रमुख नियम निम्न प्रकार हैं :

(1) सत्याग्रहियों को गिरफ्तार होना चाहिए।

(2) उन्हें अपने सेनापतियों के आदेशों का हृदय से पालन करना चाहिए, कोई बात अपने मन में छिपाकर नहीं रखनी चाहिए।

(3) सत्याग्रही को शत्रु के प्रति मन–वचन–कर्म में हिंसा नहीं रखना चाहिए सत्याग्रही में मृत्यु का कष्ट हंसते–हंसते सह लेने की शक्ति होनी चाहिए।

(4) सत्याग्रही को किसी पर क्रोध नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे विरोधी का क्रोध सहन करना चाहिए।

(5) सत्याग्रही को विरोध का अपमान नही करना चाहिए।

सत्याग्रह का मूल्यांकन

युद्ध एवं क्रान्ति के रूप में राजनीतिक क्षेत्र में सत्याग्रह के साधन का आविष्कार गाँधीजी की एक बहुत बड़ी देन है। सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने सत्याग्रह के अस्त्र का सफलतापूर्वक प्रयोग किया और यह सिद्ध किया कि सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में इसका प्रयोग युद्ध एवं क्रान्ति के समान महत्त्वपूर्ण है। मार्क्सवादी जिसे परिवर्तन को हिंसक क्रान्ति के माध्यम से करना चाहते थे, गाँधीजी ने उसे अहिंसक सत्याग्रह से सम्पन्न किया। फिर भी सत्याग्रह की धारणा की अनेक आधारों पर आलोचना की जाती है जो कि निम्नलिखित हैं :

(1) सत्याग्रह अहिंसा की धरणा के अनुकूल नहीं हैं।

(2) सत्याग्रह का प्रयोग सभी परिस्थितियों में सम्भव नहीं है।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में या आक्रमण के प्रतिरोध में सत्याग्रह का प्रयोग सम्भव नहीं है।

(4) अहिंसक साधनों से सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाना अत्यधिक कठिन है।

(5) सत्याग्रह के नाम के दुरुप्रयोग की सम्भावना बराबर बनी रहती है।

–आशुतोष
रहवीं 'स'

प्रकृति

आज प्रकृति के साथ हम जो व्यवहार कर रहे हैं, वह आज स्वयं हमारे सामने है। पहले क्या हुआ? यह बात अब व्यर्थ है। इंसान ने पृथ्वी पर जो भी रचना रची उसको कृति नाम दिया गया। परन्तु इंसान को रचने वाले के बारे में हमारा ज्ञान और समझ अभी अधूरी है, इसलिए उसे एक शक्ति मानकर हमने चमत्कार के रूप में स्वीकारा है और इस अनसुलझे विज्ञान को नाम दिया ईश्वर। परमात्मा की रचना को नाम दिया गया ''प्रकृति'' पश्चिम की भौतिकवादी धारणा के अनुसार मनुष्य अपने सुख के लिए प्रकृति का किसी भी मात्रा में उपभोग कर सकता है, उसका शोषण कर सकता है। प्रकृति को पूरी तरह काबू किया जा सकता है, क्योंकि वह प्रकृति का स्वामी है। भारतीय विचार है कि मानव स्वयं भी प्रकृति की उपज है, उसी का अंग है। एक अंग पूरे शरीर का स्वामी नहीं हो सकता है, यदि प्रयास करेगा तो दूसरे अंगों को हानि पहुँचाकर ही, उन्हें पंगु बनाकर ही। प्रकृति से स्वामी और दासी का रिश्ता नहीं हो सकता है, माँ और बेटे का हो सकता है। वनों को प्राचीन भारत में कई वर्गों में बाँटा गया है। ग्राम वन, जो बस्तियों के आसपास होते हैं जिनके पत्तों, लकड़ी और वनोपज पर ग्रामवासियों की जीविका निर्भर होती है। श्रीवन, जो ग्राम से कुछ दूर तो होते हैं लेकिन जिनका उत्पादन मानव की श्री वृद्धि के लिए आवश्यक होता है और जिनका नियमित दोहन हो सकता है और अंतिम देव वन। जो वन ऊँची पहाड़ियों पर होते हैं और जलवायु और प्राकृतिक संतुलन के लिए आवश्यक होते हैं, देव वन कहलाते हैं। इनका नुकसान नहीं किया जाना चाहिए। ये वन साधना और भ्रमण के लिए तो खुले होते थे लेकिन दूसरे उपयोगों की सीमाएँ बँधी थी। वनों को प्राचीन लोग अरण्य भी कहते थे। अरण्य जहाँ रण नहीं हो सकता है, जिनके विरू कोई जोर–जबरदस्ती या हिंसा नहीं हो सकती।

–मुस्कान
बारहवीं 'ब'

मेहनत की कमाई

बहुत पुरानी बात है, रविदास जी का जन्म एक मोची परिवार में हुआ था। उनके दादा, परदादा और पिताजी जूते सिलने का काम करते थे। जब वह बड़े हुए तो उनके पिता ने उनको अपने साथ जूते सिलने के काम में लगा लिया। वह दिन भर में जितना पैसे कमाते उस पैसे को गरीबों और साधु–संतों में बाँट देते। उनकी यह आदत के कारण उनके पिता ने उनको घर से निकाल दिया। घर से अलग होकर भी उनकी आदतों में कोई बदलाव नहीं आया। वह दिन भर जूते सिलते और वह पैसा साधू, संतों और गरीबों में बाँट देते। वह जूते सिलते–सिलते भगवान के गीत गाया करते, उनके गीत मंदिरों में गए जाने लगे। एक दिन वहाँ पर एक साधु आया वह देखता है कि रविदास जी जूते सिल रहे हैं और गाना गा रहे हैं वह उनके पास आए और कहा कि आपके भजन मंदिरों में लोग गाकर पैसे कमाते हैं और आप अभी भी जूते सिल रहे हैं। इस बात पर रविदास जी ने कुछ नहीं कहा। साधू कहता है मैं आपको एक पारस पत्थर देता, हूँ इसको लोहे के साथ छुआने पर लोहा सोना बन जाता है इस पर रविदास जी बोले आप इसको मेरी कुटिया की छत पर दबा कर रख दीजिए। साधू ने ऐसा ही किया और वहाँ से चला गया। वह साधू वहाँ पर चार दिन बाद फिर आता है तो देखता है कि रविदास जी जूते सिल रहे हैं और उनकी कुटिया में कोई भी बदलाव नहीं आया। इसको देखकर साधू रविदास जी के पास आए और पूछा कि मैंने तो आपको पारस पत्थर दिया था तो ये सब कैसे? रविदास जी बोले मैंने उस पत्थर का कुछ नहीं किया वह पत्थर वहीं पर ही है। मुझको ऐसे किसी धन का लालच नहीं जो मेहनत के बिना मिले। मेहनत की रूखी–सूखी रोटी में ही मैं और मेरा परिवार खुश है।

नोट : मेहनत का फल बहुत ही मीठा होता है।

–आमिर मिर्जा
बारहवीं 'ब'

माँ बदल रही है

- माँ अब दिखती नहीं मैली साड़ी में, काम करती दिन भर नज़र आती है ट्रेंडी जींस में। अपने लिए भी समय निकाल रही है। माँ बदल रही है। चूल्हे के धुओं से अब आँखें नहीं होती लाल, स्मार्ट किचन में अब नयी रेसीपी बनती बेमिसाल। जब मन नहीं होता स्वीगी से पार्सल मँगवा रही है। सच माँ बदल रही है।
- पापा के सामाने हर बात पर हाथ नहीं फैलाती है, ना ही सास और पति की मार खाती है। कंधे से कंधा मिलाकर सारा भार उठा रही है। सच माँ बदल रही है।
- पुराने दिनों का राग नही सुनाती, सास, ननद, जवाई का नखरा नहीं लेती। नहीं कहती औरत तेरी यहीं कहानी, बेटे को पराठे और बेटी को कराटे सिखा रही है। सच, माँ बदल रही है।
- माँ अब हँसती है, नाचती है, मनमर्जी से जीती है, समय के साथ बदलती है, जैसा चाहे रहती है। पर....बच्चे का रोना सुनते ही थम जाते हैं उसके कदम तब लगता है– क्या सचमुच माँ बदल रही है?
- नोट– माँ पूरी बदल रही है, पर उसकी ममता उसका प्यार नहीं बदला। और
- आज के इस युग में इस बदली हुई माँ की ही जरूरत है। जो समय के साथ, समाज के साथ, बच्चों के साथ, जनरेशन के साथ बदले। क्योंकि बदलाव प्रगति की निशानी है.....

–दिव्यांशी
ग्यारहवीं 'स'

हर व्यक्ति का महत्व

एक बार एक विद्यालय में परीक्षा चल रही थी सभी बच्चे अपनी तरफ से पूरी तैयारी करके आये थे। कक्षा का सबसे ज्यादा पढ़ने वाला और होशियार लड़का अपने पेपर की तैयारी को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त था। उसको सभी प्रश्नों के उत्तर आते थे लेकिन जब उसने अंतिम प्रश्न देखा तो वह चिंतित हो गया।

सबसे अंतिम प्रश्न में पूछा गया था कि ''विद्यालय में ऐसा कौन व्यक्ति है जो हमेशा सबसे पहले आता है? वह जो भी है, उसका नाम बताइए।'' परीक्षा दे रहें सभी बच्चों के ध्यान में एक महिला आ रही थी। वही महिला जो सबसे पहले स्कूल में आकर स्कूल की साफ–सफाई करती। पतली, साँवले रंग की और लम्बे कद की उस महिला की उम्र करीब 40 वर्ष के आस–पास थी।

ये चेहरा वहाँ परीक्षा दे रहे सभी बच्चों के आगे घूम रहा था। लेकिन उस महिला का नाम कोई नहीं जानता था इस सवाल के जवाब के रूप में कुछ बच्चों ने उसका रंग–रूप लिखा तो कुछ ने इस सवाल को ही छोड़ दिया। परीक्षा समाप्त हुई और सभी बच्चों ने अपने अध्यापक से सवाल किया कि ''इस महिला का हमारी पढ़ाई से क्या सम्बन्ध है।''

इस सवाल का अध्यापक जी ने बहुत ही सुन्दर जवाब दिया ''ये सवाल हमने इसलिए पूछा था कि आपको यह एहसास हो जाये कि आपके आस–पास ऐसे कई लोग है जो महत्वपूर्ण कामों में लगे हुए है और आप उन्हें जानते तक नहीं। इसका मतलब आप जागरूक नहीं हैं।''

शिक्षा : हमारे आस– पास की हर चीज, व्यक्ति का विशेष महत्व होता है, वह खास होता है। किसी को भी नजर अंदाज नहीं करें।

–शगुन वर्मा
ग्यारहवीं 'स'

ज़िंदगी

लौट जाती हूँ वापस घर की तरफ
हर रोज़ थका हारा.....
आज तक समझ नहीं आया
कि काम करने के लिए जीती हूँ
या जीने के लिए काम करती हूँ
बचपन में सबसे बार–बार पूछा गया सवाल
बड़े होकर क्या बनना है?
जबाव..... अब मिला
फिर से बच्चा बनना है
ए ज़िंदगी मुनासिब होगा
मेरा हिसाब कर दे.....
दोस्तों से बिछुड़ कर ये हकीकत खुली
बेशक कमीने थे पर रौनक उन्हीं से थी
भरी जेब से दुनिया की पहचान करवाई
और खाली जेब से अपनों की
जब लगे पैसे कमाने तो समझ आया कि शौक तो
माँ–बाप के पैसों से पूरे होते थे
अपने पैसों से तो बस जरूरतें ही पूरी हो पाती हैं

हँसने का दिल ना हो तो भी हँसना पड़ता है
कोई जब पूछे कैसी हो
मजे में हूँ कहना पड़ता है
ये ज़िंदगी का ड्रामा है दोस्तों
यहाँ हर एक को नाटक करना पड़ता है
माचिस की जरूरत यहाँ नहीं पड़ती यहाँ तो आदमी
आदमी से जलता है
दुनिया के साइन्टिस्ट ढूँढ रहे हैं
कि मरीख पे ज़िंदगी है या नहीं
पर आदमी यह नहीं ढूँढ रहा कि ज़िंदगी में खुशी है या नहीं
नींद और मौत में क्या फर्क है.....??

किसी ने क्या खूबसूरत जवाब दिया है
नींद आधी मौत है.... और मौत मुकम्मल नींद है
ज़िंदगी तो अपने तरीके से चलती है
औरों के सहारे तो जनाजे उठा करते हैं
सुबह होती है, शाम होती है उम्र यूँ ही तमाम होता है
कोई रोकर दिल बहलाता है और कोई हँसकर दर्द छुपाता है
क्या करामात है कुदरत की
जिंदा इंसान पानी में डूबता है
और मुर्दा तैर कर दिखाता है
बस ये कन्डक्टर सी हो गई है ज़िंदगी
सफ़र भी रोज़ का है और जाना भी कहीं नहीं।
हर सवाल का जवाब मैं ढूँढता रहा और अपने कमरे में
जाते ही जवाब मिल गया

छत ने कहा ऊँची सोच रखो
पंखे ने कहा ठंडे से रहो
घड़ी ने कहा हर मिनट कीमती है
शीशे ने कहा कुछ करने से पहले अपने अन्दर झाँक लो
खिड़की ने कहा दुनिया को देख लो
कैलेण्डर ने कहा अप–टू डेट रहो
और दरवाजे ने कहा अपनी मंजिल को पाने के लिए पूरा जोर लगाओ
लकीरें भी बड़ी अजीब होती हैं
माथे पर खिंच जाये तो किस्मत बना देती हैं
जमीन पर खिंच जाये तो सरहद बना देती है
खाल पे खिंच जाये तो खून ही निकाल देती है
और रिश्ते पर खिंच जाये तो दीवार बना देती है
एक रूपया एक लाख से निकल जाये तो वह लाख भी नहीं रहता
हम आप लाखों दोस्तों में एक वो ही रूपया है संभाल के रखियेगा।
बस यहीं है ज़िन्दगी का सच।

–अनुष्का
बारहवीं 'ब'

पानी

(बहुत अनमोल है पानी)
बहुत–बहुत अनमोल है पानी
मत करो इसे ख़त्म करने की नादा
यह जो ख़त्म हुआ एक बार।
ख़त्म हो जाएगी सबकी जिन्दगानी।
इसकी कीमत जिसने पहचानी '
वही है सबसे बड़ा ज्ञानी।
ख़त्म हुई इसकी जो कहानी।
बन जाएगी धरती रेगिस्तानी।

–वंश कुमार
नवीं 'अ'

माँ

ममता का सागर है माँ।
पालपोस कर हमें बड़ा किया।।
ना जाने कितने दुख सही है माँ।
हमारी हर जिद को पूरा करती है माँ।।
हमारे लिए दिन–रात जागती है माँ।
रोज सुबह उठकर प्रभु से कहती है माँ।।
मेरे सारे सुख तेरे, तेरे सारे दुख मेरे।
ऐसी होती है माँ।
हमारी हर जिद को पूरा करती हैं माँ।।
हमारे लिए दिन–रात जागती है माँ।
ऐसी माँ को कोटि–कोटि प्रणाम।।

–आराधया वर्मा
पाँचवीं 'ब'

प्रकृति के आँसू

क्यूँ न सहेज के रख लें
इस प्रकृति को
आने वाले कल के लिए
आने वाले अपनों के लिए

ये कटते वृक्ष
ये सूखती नदियाँ
ये सिमटते पर्वत
एक रोज़
यूँ ही खत्म हो जायेंगे

आज हम कुछ कर सकते हैं
इस रोती हुई प्रकृति के आँसू
हम पोंछ सकते हैं
एक वक़्त बाद प्रकृति के
सारे आँसू सूख जायेंगे

पर आँसू होंगे
हमारी आँखों में
जिसे चाह कर भी
हम पोंछ नहीं पाएँगे

हम पुकारेंगे प्रकृति को
अपनी मदद के लिए पर
मौत की खामोशी ओढ़े
वो बेजान पड़ी
बस यूँ ही देखती रहेगी

–दिपाली
आठवीं 'ब'

पश्चाताप का भाव

मदन उड़ीसा के एक छोटे से गाँव में पला–बढ़ा। पढ़–लिखकर वह एक अच्छी–सी नौकरी करने लगा। नौकरी में लगातार हुए प्रमोशन से उसे खूब तरक्की और शोहरत की प्राप्ति हुई। वह अब शहर में रहने लगा, वहाँ मदन को ग्यारहवीं मंजिल पर एक आलीशान फ्लैट कंपनी के द्वारा मिला। मदन अपनी पत्नी एवं एक बच्चे के साथ खूब ऐशो आराम से रहने लगा। कुछ समय बाद मदन के पिताजी उनसे मिलने शहर आए। उसके पिताजी बेहद ही वृद्ध और सरल, निश्चल स्वभाव के व्यक्ति थे। उन पर समय का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता था। हाथ पैर काबू से बाहर हो गए थे, अर्थात ना चाहते हुए भी हाथ–पैर हिलाना, धुँधला दिखना आदि। मदन के पिताजी और वह उसकी पत्नी के कार्य स्थल पर जाने के बाद अपने पोते के साथ फ्लैट में दिनभर रहते और दोनों खूब बातें करते। अपने पोते को बढ़िया–बढ़िया कहानी, रामायण, महाभारत और बुद्धिवर्धक कहानियाँ सुनाते। पोता खूब मन लगाकर उन कहानियों को सुनता। उस नन्हें से पोते का नाम श्याम था घर में महँगे–महँगे चीनी–मिट्टी और अन्य क्रोकरी के समान थे। एक दिन की बात है दादाजी को बर्तन में खाने को मिला। उनका हाथ काबू में ना रहने के कारण हाथ हिलकर क्रोकरी गिरकर टूट गई। इस पर मदन की पत्नी बाजार से एक लकड़ी का बर्तन सेट ले आई, जिसमें थाली–कटोरी आदि शामिल था। अब दादाजी को नित्य–प्रतिदिन उन बर्तनों में खाना मिलने लगा। दादाजी को इन बातों का बुरा तो लगा किंतु उन्होंने किसी से कहा नहीं। एक दिन श्याम खेल–खेल में लकड़ी से कुछ बर्तन बना रहा था, इस पर मदन और उनकी पत्नी यानी कि श्याम के मम्मी–पापा ने डाँट लगाई और कारण पूछा कि यह क्या कर रहे हो? श्याम ने बालोचित उत्तर दिया। मैं लकड़ी के कटोरे और बर्तन बना रहा हूँ। इस पर श्याम के मम्मी–पापा ने पूछा कि इसकी क्या आवश्यकता है? इसे क्यों बना रहे हो। श्याम ने जवाब दिया कि जब आप बूढ़े होंगें तो आपको इस बर्तन की जरूरत पड़ेगी इसलिए बना रहा हूँ। अब मदन और उनकी पत्नी को अपनी गलती पर पछतावा हुआ। दोनों पति–पत्नी ने पिताजी से पैर छूकर क्षमा याचना की। बड़े लोग स्वभाव के सरल होते हैं अतः उनसे माफी मिलने में देरी नहीं होती।

<u>नैतिक शिक्षा</u> :
हम जैसा कर्म करते हैं फल भी वैसा ही मिलता है अतः अपने कर्म अच्छे करने चाहिए।

–आयुष कुमार
ग्यारहवीं 'अ'

पर्यावरण

खतरे में है वन्य जीव सब, मिलकर इन्हें बचाना है।
आओं हमें पर्यावरण बचाना हैं।

पेड़ न काटे बल्कि पेड़ लगाना हैं।
वन हैं बहुत कीमती इन्हें बचाना हैं।
वन देते हैं हमें ऑक्सीजन
इन में न आग लगाओं।
आओं हमें पर्यावरण बचाना हैं।
जंगल अपने आप उगेंगें, पेड़ फल फूल बढ़ेगें।
कोयल कूके मैना गाये, हरियाली फैलाओ।

आओं हमें पर्यावरण बचाना हैं।
पेड़ों पर पशु पक्षी रहते।
पत्ते घास हैं खाते चरते।
घर न इनके कभी उजाड़ों, कभी न इन्हें सताओं।
आओं हमें पर्यावरण बचाना हैं।

–साँची शर्मा
आठवीं 'स'

तुम मन की आवाज सुनो

तुम मन की आवाज सुनो,
जिंदा हो, न शमशान बनों,
पीछें नहीं आगे देखों,
नई शुरूआत करो।
मंजिल नहीं, कर्म बदलो,
कुछ समझ ना आए,
तो गुरू का ध्यान करो,
तुम मन की आवाज सुनो।
लहरों की तरह किनारों से टकराकर,
मत लौट जाना फिर से सागर,
साहस में दम भरों फिर से,
तुम मन की आवाज सुनो।

सपनों को देखकर आँखें बंद मत करो,
कुछ काम करो,
सपनों को साकार करो,
तुम मन की आवाज सुनो।
इम्तिहान होगा हर मोड़ पर,
हार कर मत बैठ जाना किसी मोड़ पर,
तकदीर बदल जाएगी अगले मोड़ पर,
तुम अपने मन की आवाज सुनो।

–तानिया
ग्यारहवीं 'स'

हम होंगे कामयाब

लेखक – A.P.J. अब्दुल कलाम
प्रकाशन – प्रभात प्रकाशन
मूल्य – 95 रूपये

डॉ० A.P.J.अब्दुल कलाम 15 Oct 1931 को जन्म हुआ था। 27 जुलाई 2015 को उनका निधन हुआ था। उन्हें मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति के रूप में भी जाना जाता था। भारत के पूर्व राष्ट्रपति और जाने माने वैज्ञानिक और इंजीनियर के रूप में विख्यात थे। उन्होंने सिखाया कि जीवन में चाहे जैसी भी परिस्थिति क्यों न हो पर जब आप अपने काम को पूरा करने की ठान लेते हैं तो उन्हें पूरा करके ही रहते हैं। प्रश्नोत्तरी शैली में प्रस्तुत यह पुस्तक भारत के महान प्रेरणा–पुरूष और पूर्व राष्ट्रपति A.P.J. अब्दुल कलाम द्वारा बच्चों से बातचीत पर आधारित है।

बच्चे समाज और राष्ट्र का भविष्य होते हैं, बच्चे जितने शिक्षित, संस्कारी व चरित्रवान होते हैं समाज और राष्ट्र का उतना ही विकास होता है। बच्चों की जिज्ञासाएँ अद्‌भुत व अनुपम होती है। उनके साथ की व्यापकता प्रदान करती है। उनकी जिज्ञासाओं का समाधान जीवन–पथ पर आगे बढ़ने हेतु उन्हें बल प्रदान करता है।

इसमें डॉ० कलाम के जीवन के अनूठे प्रसंगों और भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने में उनके महान स्वप्न तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, चिकित्सा, उद्योग व प्रोद्योगिकी एक देश को विकसित बनाने वाले अन्य महत्व पूर्ण क्षेत्रों के बारे में बच्चों से उनकी रोचक व प्रेरक बातचीत प्रस्तुत है।

डॉ० कलाम के जीवन–प्रसंगों और उनके विचारों को प्रस्तुत करके प्रेरणादायी पुस्तक।

–दिपाली
आठवीं 'ब'

कहावतें

1. जिसके पास उम्मीद है, वह हार कर भी नहीं हरता!

–अज्ञात

2. श्रेष्ठ होना कोई कार्य नहीं बल्कि यह हमारी एक आदत है जिसे हम बार–बार करते हैं!

–अरस्तु

3. विजेता बोलते हैं कि मुझे कुछ करना चाहिए, जबकि हारने वाले बोलते हैं कि कुछ होना चाहिए!

–शिव खेरा

4. क्रोध हमेशा मनुष्य को तब आता है जब वह अपने आप को कमजोर. और हारा हुआ पाता है!

–अज्ञात

5. मैं हर कदम पर हारा हूँ, पर जन्मा केवल जीत के लिए हूँ!

–एमर्सन

6. अब तक की सबसे बड़ी खोज यह हैं कि व्यक्ति महज अपना दृष्टिकोण बदल कर अपना भविष्य बदल सकता हैं!

–स्वामी विवेकानंद जी

7. जिन्दगी में मनुष्य के आँखें बन्द करने से कभी मुसीबत नहीं टला करती है, बल्कि उस मुसीबत का सामना करने से मनुष्य की आँखें खुला करती है!

–अज्ञात

8. उस मनुष्य की ताकत का कोई मुकाबला नहीं कर सकता जिसके पास सब्र की ताकत है!

–महात्मा गाँधी

9. अवसर सूर्य उदय की तरह होते हैं यदि आप ज्यादा देर प्रतीक्षा करेंगे तो आप उन्हें गवा देंगे!

–अज्ञात

10. बड़ा सोचो, जल्दी सोचो, आगे की सोचो क्योंकि विचारों पर किसी का एकाधिकार नहीं है!

–धीरूभाई अम्बानी

11. मैं कर सकता हूँ, यह विश्वास है, केवल मैं ही कर सकता हूँ, यह अंधविश्वास हैं!

–अज्ञात

12. बिना विश्वास के कोई काम हो ही नहीं सकता!

–नारायण दास

13. उन सभी कारणों को भूल जाए कि कोई कार्य नहीं होगा, आपको केवल एक अच्छा कारण खोजना है कि यह कार्य सफल होगा!

–डॉ. राबर्ट

14. जब भी कोई हंसने का अवसर मिले तो ''हंसे'' यह एक सुलभ दवा हैं!

–लार्ड ब्रायन

15. लंबी जिंदगी का महत्व नहीं है, जितना महत्व इसकी गहनता का है!

–राल्फ वाल्डो एमर्सन

16. अपने सपनों को साकार करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है कि आप जाग जाएं!

–पॉल वैलेरी

17. सफलता हमेशा के लिए नहीं होती, विफलता कभी घातक नहीं होती यह तो लगे रहने की प्रवृत्ति हैं जो मायने रखती है!

–विंस्टन चर्चिल

18. जब तक तुम स्वयं पर विश्वास नहीं करते, परमात्मा में विश्वास कर नहीं सकते!

–विवेकानंद

19. मित्रता आनंद को दोगुना और दुख को आधा कर देती है!

–मिस्र की कहावत

20. धोखा देने में भले ही बल हो, लेकिन प्यार वो बल है जिसमें आज भी हल है!

–मुहावरा

21. यदि हम समाधान का हिस्सा नहीं हैं तो इसका मतलब यही हैं कि हम खुद समस्या हैं!

–कहावत

22. एक पल में मान लेते हैं कि क़िस्मत में लिखे फ़ैसले बदला नहीं करते, लेकिन आप फ़ैसले तो लीजिए क्या पता क़िस्मत ही बदल जाए!

–आर्यभ

23. प्राण देकर भी मित्र के प्राण की रक्षा करनी चाहिए।

–बाणभ

24. अगर व्यक्ति अपनी पूरी लग्न के साथ कोई भी काम करता है, तब उसे कभी हार का मुँह देखना नहीं पड़ता हैं!

– अज्ञात

25. हर मनुष्य को ये याद रखना चाहिए, जब तक हम खुद पर विश्वास नहीं करेंगे, तब तक हम अपना सम्मान नहीं कर सकते!

–कहावत

26. जो काम पड़ने पर सहायक होता है, वही मित्र है!

–दीर्घनिकाय

27. मनुष्य का असली चरित्र जब सामने आता है, जब वह नशे में होता है फिर नशा चाहे धन का हो, पद का हो, रूप का हो, या शराब का !

–महाभारत

28. अभागों के मित्र नहीं होते!

–एमर्सन

29. .जिंदगी छोटी नहीं होती, बस हम ही इसे देरी से जीना शुरू करते हैं!

–अज्ञात

-कार्तिक
ग्यारहवीं 'अ'

संगति का असर

राम-श्याम दो भाई थे, दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ा करते थे और यहाँ तक कि एक ही कक्षा में। किंतु राम पढ़ने में होनहार था। वहीं उसका भाई श्याम पढ़ने से बचता था, और ना पढ़ने के ढेरों बहाने ढूँढता था। राम के दोस्त पढ़ने वाले थे और श्याम के दोस्त ना पढ़ने वाले और काम चोरी करने वाले थे। राम अपने भाई श्याम को उन दोस्तों से बचने के लिए कहा करता, मगर श्याम उसे डाँट लगा देता और कहता अपने काम से काम रखा करो। श्याम के दोस्त घर से स्कूल जाने के लिए निकलते और रास्ते में कहीं और चले जाते। कभी पार्क में बैठते, कभी जाकर कहीं खाना-पीना करते, और कभी फिल्म देखा करते थे। श्याम भी उनकी संगति में आ गया और वह भी धीरे-धीरे स्कूल जाने से बचता रहता। श्याम भी उन दोस्तों के साथ बाहर खाना-पीना और घूमा करता। राम उसकी इस प्रकार की धोखाधड़ी से बहुत चिंतित था। श्याम ने परीक्षा में फेल होने की बात कही मगर श्याम ने नहीं माना। एक दिन की बात है श्याम स्कूल जा रहा था, उसके दोस्त मिल गए और उन्होंने कहा आज स्कूल नहीं जाना है। हम सभी अपने दोस्त हरि का जन्म दिवस मनाएँगे और बाहर खाना-पीना करेंगे और खूब मजे करेंगे। पहले तो श्याम ने मना किया किन्तु दोस्तों के बार-बार बोलने पर उनके साथ चला गया। श्याम और उसके मित्रों ने खूब पार्टी करी और उस दिन स्कूल नहीं गये। इस प्रकार का काम वह और उसके दोस्त निरंतर करते रहते। परीक्षा हुई जिसमें श्याम और उसके दोस्त सफल नहीं हो पाए वह फेल हो गए। राम ने इस बार भी और हर बार की तरह प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्याम अपने घर मार्कशीट लेकर गया जिस पर उसके माता-पिता ने देखा और बहुत उदास हुए। उन्हें उदासी हुई कि एक मेरा बेटा इतना अच्छा पढ़ने में है और दूसरा इतना नालायक। श्याम किसी भी विषय में पास नहीं हो पाया। श्याम के माता- पिता को बहुत दुखी हुई उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा मगर अंदर ही अंदर वह बहुत दुखी होते रहे। उन्होंने सोचा कि अब मैं दूसरे लोगों को क्या बताऊँगा कि मेरा बेटा एक भी विषय में पास नहीं हो पाया। इस प्रकार माँ-पिताजी को श्याम ने बहुत चिंतित व दुखी देखा जिस पर उसे भी दुख हुआ। श्याम ने अपने माँ-बाप को भरोसा दिलाया कि मैं अगली परीक्षा में सफल होकर दिखायेगा। श्याम ने अपने उन सभी दोस्तों को छोड़ दिया जिन्होंने उसकी सफलता में उसका मार्ग रोका था। उन सभी छल और कपट करने वाले दोस्तों को छोड़कर अपनी पढ़ाई में ध्यान लगाया। नतीजा यह हुआ कि साल भर की मेहनत से वह परीक्षा में सफल ही नहीं अपितु विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। इस पर उसके माता-पिता को बहुत खुशी हुई है और अपने पुत्र श्याम को गले से लगाया उन्हें शाबाशी दी। श्याम को पता चल गया था कि जैसी संगति मिलेगी वैसा ही परिणाम मिलेगा।

नैतिक शिक्षा :

जैसी संगति में रहते हो उससे वैसा ही गुण आता है। अर्थात् अच्छी संगति का संगत करना चाहिए।

- अमित नेगी
ग्यारहवीं 'अ'

काम पूरा करने की सीख देती प्रेरणादायक कहानी

एक मकड़ी थी। उसने आराम से रहने के लिए एक शानदार जाला बनाने का विचार किया और सोचा की इस जाले में खूब कीड़े, मक्खियाँ फसेंगी और मैं उसे आहार बनाऊँगी और मजे से रहूँगी। उसने कमरे के कोने को पसंद किया। कुछ देर बाद आधा जाला बुन कर तैयार हो गया। यह देखकर वह मकड़ी काफी खुश हुई कि तभी अचानक उसकी नजर एक बिल्ली पर पड़ी जो उसे देखकर हँस रही थी। मकड़ी को गुस्सा आ गया और वह बिल्ली से बोली, ''हँस क्यों रही हो?'' ''हँसू नहीं तो क्या करू'', बिल्ली ने जवाब दिया, यहाँ मक्खियाँ नहीं है ये जगह तो बिलकुल साफ-सुथरी है, यहाँ कौन आयेगा तेरे जाले में।'' ये बात मकड़ी के गले उतर गई। उसने अच्छी सलाह के लिये बिल्ली को धन्यवाद दिया और जाला अधूरा छोड़कर दूसरी जगह तलाश करने लगी। उसने इधर-उधर देखा, उसे एक खिड़की नज़र आयी और फिर उसमें जाला बुनना शुरू किया कुछ देर तक वह जाला बुनती रही, तभी एक चिड़ियाँ आयी और मकड़ी का मज़ाक उड़ाते हुए बोली,''अरे मकड़ी, तू भी कितनी बेवकूफ है।'' ''क्यों?'', मकड़ी ने पूछा, चिड़ियाँ उसे समझाने लगी,''अरे यहाँ तो खिड़की से तेज हवा आती है, यहाँ तो तू अपने जाले के साथ ही उड़ जायेगी।'' मकड़ी को चिड़ियाँ की बात ठीक लगी और वह वहाँ भी जाला अधूरा बना छोड़कर सोचने लगी अब कहाँ जाला बनाया जाये। समय काफी बीत चुका था और उसे भूख भी लगने लगी थी। अब उसे आलमारी का खुला दरवाजा दिखा और उसने उसी में अपना जाला बुनना शुरू किया। कुछ जाला बुना ही था तभी उसे एक काक्रोच नज़र आया जो जाले को अचरज भरे नज़रों से देख रहा था। मकड़ी ने पूछा-'इस तरह क्यों देख रहे हो?' काक्रोच बोला-''अरे यहाँ कहाँ जाला बुनने चली आयी ये तो बेकार की आलमारी है। अभी ये यहाँ पड़ी है कुछ दिनों बाद इसे बेच दिया जायेगा और तुम्हारी सारी मेहनत बेकार चली जायेगी। यह सुन कर मकड़ी ने वहाँ से हट जाना ही बेहतर समझा। बार-बार प्रयास करने से वह काफी थक चुकी थी और उसके अन्दर जाला बुनने की ताकत ही नहीं बची थी। भूख की वजह से वह परेशान थी। उसे पछतावा हो रहा था कि अगर पहले ही जाला बुन लेती तो अच्छा रहता। पर अब वह कुछ नहीं कर सकती थी उसी हालात में पड़ी रही। जब मकड़ी को लगा कि अब कुछ नहीं हो सकता है तो उसने पास से गुजर रही चींटी से मदद करने का आग्रह किया। चींटी बोली-''मैं बहुत देर से तुम्हें देख रही थी, तुम बार-बार अपना काम शुरू करती और दूसरों के कहने पर उसे अधूरा छोड़ देती, और जो लोग ऐसा करते हैं, उनकी यही हालत होती है।'' और ऐसा कहते हुए वह अपने रास्ते चली गई और मकड़ी पछताती हुई निढाल पड़ी रही। दोस्तों, हमारी जिन्दगी में भी कई बार कुछ ऐसा ही होता है, हमें कोई काम start करते हैं। शुरू-शुरू में तो हम उस काम के लिये बड़े उत्साहित रहते हैं पर लोगों के comments की वजह से उत्साह कम होने लगता है और हम अपना काम बीच में ही छोड़ देते हैं और जब बाद में पता चलता है कि हम अपने सफलता के कितने नजदीक थे तो बाद में पछतावे के अलावा कुछ नहीं बचता।

-कुलदीप सिंह सागर
ग्यारहवीं 'अ'

ईमानदार वीर बालक

रमेश बहुत ही प्यारा बालक था। वह कक्षा दूसरी में पढ़ता था। रमेश के विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस का राष्ट्रीय त्यौहार मनाया जाने वाला था रमेश बहुत उत्साहित था इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए। रमेश को उसकी कक्षा अध्यापिका ने स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग लेने के लिए बोला था। उसके हर्ष का कोई ठिकाना नहीं था, वह खुशी-खुशी इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए तैयारियाँ करने लगा। स्वतंत्रता दिवस की होने वाली परेड में सभी साथियों के साथ पूर्व अभ्यास निरंतर करता रहा और अत्यंत उत्साह से भरा हुआ था। परेड वाले दिन जब वह स्कूल के लिए तैयार होने लगा तो रमेश ने अपने दादा जी को खोजा। दादाजी रमेश के साथ निरंतर विद्यालय जाया करते थे उसे पहुँचाने। किन्तु दादाजी नहीं मिले माँ से पूछा तो माँ ने बताया दादाजी गाँव गए हैं। वहाँ दादी की तबीयत खराब है, और हॉस्पिटल में है। पिताजी भी गए हुए हैं, अब मैं तुम्हें स्कूल पहुँचा कर गाँव निकलूँगी। रमेश ने यह बात सुनी तो बहुत दुखी हुआ और वह स्वयं भी दादी के पास जाने के लिए जिद करने लगा। इस पर उसकी माँ रमेश को अपने साथ लेकर गाँव चली गई। जब वह कुछ दिन बाद विद्यालय पहुँचा वहाँ, प्रधानाचार्य ने उन सभी बालकों को बुलाया जिन्होंने परेड में भाग नहीं लिया था। इस पर रमेश का नाम नहीं पुकारा गया, बाकी सभी विद्यार्थियों को उनके अभिभावक को लाने के लिए कहा गया। रमेश ने सोचा कि मेरा नाम प्रधानाचार्य ने नहीं बोला लगता है वह भूल गए होंगे। रमेश प्रधानाचार्य के ऑफिस में गया और उसने प्रधानाचार्य से कहा कि मैं भी उस दिन परेड में नहीं आया था। मगर आपने मेरा नाम नहीं लिया क्या मुझे भी माता-पिता को बुलाकर लाना है? रमेश के इस सरल स्वभाव को देखकर प्रधानाचार्य खुश हुए और उन्होंने रमेश को बताया कि तुम्हारे माता-पिता ने फोन करके तुम्हारे स्कूल ना आने का कारण मुझे पहले ही बता दिया था। तुम्हारी ईमानदारी से मुझे खुशी हुई। तुम अच्छे से पढ़ाई करो और अगली बार परेड में निश्चित रूप से भाग लेना।

नैतिक शिक्षा :

सदैव सत्य बोलना चाहिए और सत्य का साथ देना चाहिए। व्यक्ति का स्वभाव ही उस व्यक्ति का परिचय है।

-मनीषा
ग्यारहवीं 'स'

हिंदी भाषा का इतिहास और हिंदी भाषा का विकास

हिंदी भाषा का विकास पढ़ने से पहले हम हिंदी के इतिहास के बारे में थोड़ा पढ़ लेते हैं इसके बाद हम हिंदी भाषा के विकास के बारे में पढ़ेगे

हिंदी भाषा का इतिहास

भारत– यूरोपीय कुल की भाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन या स्पष्ट करता है कि कुल की भाषाओं को बोलने वाले पूर्वज किसी युग में एक ही स्थान पर रहते थे तथा विभिन्न सम या वादियों में उनके समूह भिन्न–भिन्न स्थानों में फैल गए। सन 1870 ईस्वी में अस्कोली नामक विद्वान ने लैटिन और अवेस्त ध्वानियों का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला कि मूल भारोपिय भाषा की कंठ्य ध्वनियाँ कुछ शाखाओं में कण्ठ्य और कुछ में संघर्षी (श, स, ज) रूप में परिवर्तित होकर विद्यमान हैं फ्रान ब्रेडके नामक विद्वान ने इन दोनों वर्गो को 'शतम' और 'केण्टुम' वर्क में विभाजित कर दिया, इस प्रकार हिंदी भारोपीय परिवार की भारत ईरानी स्कूल की 'शतम' उप शाखा के अन्तर्गत आती हैं इस कुल की जो शाखा भारत में रहें उससे भारतीय आर्य भाषाओं का विकास हुआ इस निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता है–

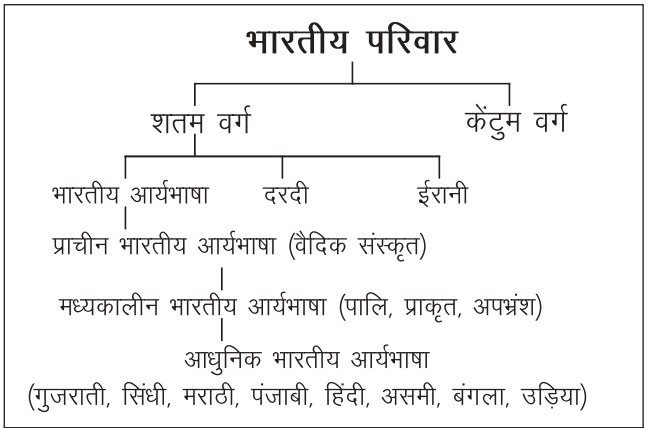

हिंदी भाषा का इतिहास और हिंदी भाषा का विकास

इस प्रकार आधुनिक आर्य भाषा के अंतर्गत हिंदी का उद्भव अन्य भारतीय आर्य भाषाओं पंजाबी, गुजराती, मराठी, सिंधी, असमी, बांग्ला, उड़िया के साथ हुआ इनके कालक्रम को कुछ इस प्रकार भी विभाजित किया जा सकता :

1. पुरातनकाल (500 ईसवी पूर्व तक) वैदिक संस्कृत।
2. मध्यकाल (500 ईसवी पूर्व से 1000 ईसवी पूर्व तक) पालि, प्राकृत, अपभ्रंश।
3. आधुनिककाल (1000 ईसवी से अब तक) : हिंदी तथा अन्य भारतीय आर्य भाषाएं।

प्रथम सदी आते– आते सामान्य अभिव्यक्ति की भाषा में परिवर्तन हुआ या परिवर्तन प्राकृत भाषा के नाम से जाना गया। इस कालखंड के दौरान कई क्षेत्रीय बोलियाँ भी प्रचलित में थी, इनमें मुख्य शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड, महाराष्ट्र, मागधी और अर्ध्द–मागधी थी, प्राकृतों से ही विभिन्न रूपों में अपभ्रंशों का उद्‌गम वह विकास हुआ अपभ्रंशों के इस विकास में हिंदी भाषा का उ-व स्पष्ट दिखाई देता हैं।

अपभ्रंश	बोलियाँ
1. शौर सेनी	पश्चिमी, हिंदी, राजस्थानी, गुजराती, पहाड़ी
2. पैशाची	लहदा, पंजाबी
3. ब्राचड	सिंधी
4. महाराष्ट्र	मराठी
5. मागधी	बिहारी, बंगला, उड़िया, असमिया
6. अर्थ मागधी	पूर्वी हिंदी

इस प्रकार शौरसेनी, मागधी और अर्ध्दमागधी के रूपों में हिंदी का विकास हुआ।

हिंदी भाषा का विकास

हिंदी भाषा की जननी 'संस्कृत' हैं। संस्कृत पाली प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है।फिर अपभ्रंश, अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन/आरंभिक हिंदी का रूप लेती है विशद्ध हिंदी भाषा के इतिहास का आरंभ से माना जाता है।

हिंदी का विकास क्रम

संस्कृत पाली प्राकृत अपभ्रंश अवहट्ट प्राचीन/प्रारंभिक हिंदी हिंदी भाषा के विकास को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :

1. प्राचीन काल
2. मध्यकाल
3. आधुनिक काल

1. प्राचीन काल आदिकाल (1100 ईसवी से 1400 ईसवी तक) हिंदी भाषा का यह शैशवकाल था। साधारण बोलचाल की भाषा में हिंदी का प्रयोग आरंभ हो गया था तथा अपभ्रंशों का प्रभाव समाप्त हो रहा था। अपभ्रंश की रचनाओं में हिंदी के विभिन्न बोलियों और खड़ी बोली के बिम्ब उभरने लगे थे।

2. मध्यकाल (1400 ईसवी से 1850 ईसवी तक) मध्यकाल में अपभ्रंशों का प्रभाव नगण्य हो गया हिंदी खड़ी बोली के साथ–साथ उन बोलियों के रूप में सीमित होने लगी। अमीर खुसरो ने हिंदी के शुद्ध स्वरूप को लेखन शैली में प्रयोग किया। उधर निर्गुण धारा के कवि कबीर, दादू, नानक, रैदास आदि भी खड़ी बोली का प्रयोग करने लगे। इस काल में ब्रज और अवधी ने भी साहित्य के क्षेत्र में अपना अधिकार जमा लिया।

3. आधुनिक काल (1850 ईसवी से अब तक) आधुनिक काल को हम पाँच प्रमुख भागों में बाँट सकते हैं :

1. पूर्व भारतेंदु युग
2. भारतेंदु युग
3. द्विवेदी युग
4. प्रेमचंद युग
5. स्वातन्त्र्योन्तर युग

1. पूर्व भारतेंदु युग– सन् 1800 ईसवी खड़ी बोली का यह काल आरंभ हुआ। हिंदी खड़ी बोली में गद्य साहित्य का सृजन हुआ। हिंदी के क्षेत्र में खड़ी बोली का स्वरूप उर्दू से प्रभावित था। इस युग में ब्रजभाषा का प्रभाव स्थायी था।
2. भारतेंदु युग–सन् 1850 तक खड़ी बोली का स्वरूप निखरने लगा था। भारतेंदु जी के प्रभाव से खड़ी बोली का गद्य व पद्य दोनों साहित्य समाप्त होने शुरू हो गए थे। इस काल में भारतेंदु के अतिरिक्त प्रताप नारायण मिश्र, श्रीधर पाठक एवं अन्य साहित्यकार भी खड़ी बोली को दिशा प्रदान कर रहे थे।
3. द्विवेदी युग (महावीर प्रसाद)–खड़ी बोली के विकास का यह तृतीय चरण था। 1900 से 1925 तक द्विवेदी जी ने खड़ी बोली को स्थिरता प्रदान की। द्विवेदी जी ने भाषा की अशुद्धियों को दूर किया, उसे परिमार्जित किया इस युग में महावीर प्रसाद द्विवेदी के अतिरिक्त बाबू श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा आदि के साथ प्रयासों से खड़ी बोली का परिमार्जित रूप निकल कर आया।
4. प्रेमचंद युग–इस युग में संस्कृत निष्ठ हिंदी का प्रचलन आरंभ हुआ प्रेमचंद के अतिरिक्त भगवती वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन, सुभद्रा कुमारी चौहान, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह 'सुमन', डॉक्टर नगेंद्र, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉक्टर धीरेंद्र वर्मा आदि साहित्य सृजन में तल्लीन थे।
5. स्वातन्त्र्योन्तर युग–स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात संविधान में हिंदी राजभाषा के रूप में और विभिन्न सरकारी कार्यालयों, आकाशवाणी, दूरदर्शन विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं का माध्यम हिंदी हो गई आज भी हिंदी का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा हैं विभिन्न शोध प्रबंध, गद्य–पद्य लेखन हिंदी के विकास हेतु विश्वविद्यालयों की स्थापना आदि कार्य चल रहे हैं।

-अपूर्वा
बारहवीं 'ब'

बाज की उड़ान

एक बार की बात है कि एक बाज का अंडा मुर्गी के अण्डों के बीच आ गया। कुछ दिनों बाद उन अण्डों में से चूजे निकले, बाज का बच्चा भी उनमें से एक था। वो उन्हीं के बीच बड़ा होने लगा। वो वही करता जो बाकी चूजे करते, मिटटी में इधर–उधर खेलता, दाना चुगता और दिन भर उन्हीं की तरह चूँ–चूँ करता। बाकी चूजों की तरह वो भी बस थोड़ा–सा ही ऊपर उड़ पाता और पंख फड़–फड़ाते हुए नीचे आ जाता। फिर एक दिन उसने एक बाज को खुले आकाश में उड़ते हुए देखा, बाज बड़े शान से बेधड़क उड़ रहा था, तब उसने बाकी चूजों से पूछा, कि–'' इतनी ऊँचाई पर उड़ने वाला वो शानदार पक्षी कौन है?'' तब चूजों ने कहा– ''अरे वो बाज है, पक्षियों का राजा, वो बहुत ही ताकतवर और विशाल है, लेकिन तुम उसकी तरह नहीं उड़ सकते क्योंकि तुम तो एक चूजे हो!'' बाज के बच्चे ने इसे सच मान लिया और कभी वैसा बनने की कोशिश नहीं की। वो ज़िन्दगी भर चूजों की तरह रहा, और एक दिन बिना अपनी असली ताकत पहचाने ही मर गया। दोस्तों, हममें से बहुत से लोग उस बाज की तरह ही अपनी असली potential जाने बिना एक second-class जिन्दगी जीते रहते हैं, हमारे आस–पास की mediocrity हमें भी medicare बना देती है। हम ये भूल जाते हैं कि हम आपार संभावनाओं से पूर्ण एक प्राणी हैं। हमारे लिए इस जग में कुछ भी असंभव नहीं है, पर फिर भी बस एक औसत जीवन जी के हम इतने बड़े मौके को गँवा देते हैं। आप चूजों की तरह मत बनिए, अपने आप पर, अपनी काबिलियत पर भरोसा कीजिए, आप चाहें जहाँ हों, जिस परिवेश में हों, अपनी क्षमताओं को पहचानिए और आकाश की ऊँचाइयों पर उड़ कर दिखाइए क्योंकि यही आपकी वास्तविकता हैं।

-देवांश बत्र
नवीं 'स'

अकबर और बीरबल

1. एक बार अकबर अपने दो पुत्रों के साथ यमुना में स्नान करने गए। बीरबल भी उनके साथ था। यमुना किनारे पहुँचकर अकबर और उनके दोनों पुत्रों ने अपने कपड़े उतारे और उन्हें रखवाली के लिए बीरबल को देकर पानी में उतर गए। बीरबल ने उन कपड़ों को अपने कंधों पर टाँग लिया और किनारे खड़े होकर उन तीनों के बाहर आने का इंतज़ार करने लगा। नहाते –नहाते अकबर की नज़र जब किनारे खड़े बीरबल पर पड़ी, तो वे ज़ोर– ज़ोर से हँसने लगे, बीरबल अकबर को यूँ हँसता देख हैरान हो गया और पूछ बैठा, ''हुज़ूर! आपको किस बात पर इतनी हँसी आ रही हैं?'' इस पर अकबर ने कहा, ''बीरबल! तुम्हें देखकर ऐसा लग रहा है, मानो धोबी का गधा कपड़ों लादकर खड़ा है।'' यह कहकर अकबर और ज़ोर से हँसने लगे, बीरबल भी कहाँ पीछे रहने वाला था, उसने भी तपाक से उत्तर दिया,'' हुज़ूर! धोबी के गधे के पास तो एक गधे का बोझ होता है। लेकिन मुझे देखो, मैं तो तीन–तीन गधों का बोझ उठाये खड़ा हूँ'' बीरबल के इस उत्तर ने हँसी के साथ–साथ अकबर की बोलती भी बंद कर दी।

2. एक दिन अकबर और बीरबल हमेशा की तरह नगर भ्रमण पर निकले, रास्ते में अकबर को एक कुत्ता बासी और जली हुई रोटी खाते हुए दिखाई दिया। यह देख अकबर ने बीरबल का मजाक. उड़ाते हुए कहा, ''देखो तो, कुत्ता कैसे काली को खा रहा है।'' यहाँ अकबर का इशारा जली काली रोटी की तरफ नहीं था, बल्कि बीरबल की माँ की तरफ था, जिनका नाम ' काली' था। बीरबल को ये बात कुछ चुभी, इसलिए वो भी चुप नहीं रहा और बोला, ''अरे .हुजूर! उसके लिए तो वही नियामत हैं।'' 'नियामत' अकबर की माँ का नाम था, बीरबल का दो टूक जवाब सुनकर अकबर की बोलती फिर बंद हो गई।

3. एक बार अकबर को मसखरी सूझी और उन्होंने बीरबल के जूते छिपा दिये। बीरबल जब घर जाने को हुआ और उसे अपने जूते नहीं मिले, तो वह कुछ परेशान हो गया। तब अकबर ने बीरबल की चुटकी लेते हुए सेवकों हो कहा, ''बीरबल को दो जूते दिए जायें।'' बीरबल अकबर की टाँग खिंचाई की आदत से वाकिफ़ था। वह अकबर के व्यंग्य बाण का अर्थ समझ गया। जब उसे जूते लाकर दिए गए, तो मुस्कुराते हुए वह बड़े ही अदब से बोला,''जहाँपनाह! आपने मुझे दो जूते दिए, भगवान आपको ऐसे हजारों जूते दें'' इतना कहकर वह वहाँ से निकल गया। इधर अकबर बीरबल के कहीं बात का मतलब निकालते रह गए।

–अक्षिता शर्मा
नवीं 'अ'

अकबर और बीरबल

अकबरः बीरबल, हम अनारकली को क्यों नहीं ढूँढ पा रहे हैं?
बीरबलः क्योंकि हम मुगल. है, गूगल नहीं!!

1. एक बार अकबर और बीरबल दावत पर गए, वहाँ उन्हें बैंगन की सब्जी परोसी गई। अकबर ने बैंगन की सब्जी खाकर कहा, ''वाह! कितनी स्वादिष्ट सब्जी है।'' बीरबल भी बैंगन की सब्जी के तारीफ़ों के पुल बांधने लगे। कुछ दिनों बाद अकबर और बीरबल एक दूसरी दावत पर गए, वहाँ भी उन्हें बैंगन की सब्जी परोसी गई, जिसे देख अकबर नाक– भौं सिकोड़ने लगे। तब बीरबल ने बैंगन की जमकर बुराई की। यह देख अकबर ने कहा, ''बीरबल! तुम तो बड़े चापलूस निकले।'' ''जहाँपनाह! मैं आपका नौकर हूँ, बैंगन का नहीं'' बीरबल ने तपाक से उत्तर दिया।

2. अकबर ने बीरबल से तीन सवाल पूछते हुए कहा कि इन तीनों सवालों का जवाब एक ही होना चाहिए। सवाल थेः
1. दूध क्यों उफ़न जाता है?
2. पानी क्यों बह जाता है?
3. सब्जी क्यों जल जाती हैं?

बीरबल–'' Whatsapp चालू होने की बजह से।''

3. एक दिन अकबर बहुत खुश था, उन्होंने जेल में कैद सभी कैदियों को रिहा करने का आदेश दे दिया। जेल से सारे कैदी आज़ाद कर दिए गए। उन कैदियों में एक बूढ़ा कैदी भी था। अकबर ने पूछा, तुम बड़े बुजुर्ग लग रहे हो, कब से कैद में हो?'' बूढ़े ने जवाब दिया, ''हुज़ूर , मैं आपके पिता के समय से कैद हूँ।''''इसे फिर से बंद कर दो, ये हमारे अब्बा हुज़ूर की निशानी है।'' अकबर बोला।

4. एक बार मुगल सैनिकों ने संता को रात में महल के पास फालतू भटकते हुए देख पकड़ लिया। वे उसे पकड़कर बादशाह अकबर के सामने ले गए।
अकबर : कौन हो तुम?
संता : हुज़ूर! मैं संता हूँ।
अकबर : इतनी रात को महल के आस–पास क्या कर रहे हो?
संता : वो हुज़ूर ..... मैं तो यूं ही.....
अकबर : सैनिकों इसे बंदी बना दिया जाये।
संता : नहीं हुज़ूर! रहम करें! मुझे बंदी मत बनाइये, मुझे बंदा ही रहने दीजिए।

5. अकबर ने बीरबल से कहा – इस दीवार पर कुछ ऐसा लिखो कि खुशी में पढ़ूँ, तो दुःख हो और दुःख में पढ़ूँ तो खुशी हो, बीरबल ने दीवार पर लिखा– ये वक़्त गुज़र जायेगा।

–अंजली यादव
छठीं 'अ'

पहेली बूझों तो जाने

1. काली है पर नाग नहीं, लम्बी है पर नाग नहीं। बल खाती है पर डोर नहीं, बाँधते है पर छोर नहीं।
   - चोटी।
2. काले वन की रानी है, लाल पानी पीती है।
   - खटमल।
3. अपनों के ही घर ये जाये, तीन अक्षर का नाम बताये। शुरू के दो अति हो जाये, अंतिम दो से तिथि बताये।
   - अतिथि।
4. बीमार नहीं रहती, फिर भी खाती है गोली। बच्चे, बूढ़े डर जाते, सुन इसकी बोली।
   - बंदूक।
5. एक पहेली मैं बुझाऊँ, सिर को काट नमक छिड़काऊँ
   - खीरा।
6. एक झाड़ी में तीस डाली, आधी सफेद आधी काली।
   - महीने के दिन- रात।
7. ऐसा कौन-सा अंधेरा है, जो रोशनी से बनता है।
   - परछाई।
8. ऐसा क्या है?
   जो खराब हो जाए तो, हम काम नहीं कर सकते है।
   - दिमाग।
9. ऐसा क्या है?
   जिसे हम छू तो नहीं सकते है, पर देख सकते है।
   - सपना।
10. बोल नहीं पाती हूँ मैं, और सुन नहीं पाती। बिन आँखों के हूँ अंधी, पर सबको राह दिखाती।
    - पुस्तक/ किताब।
11. खाते नहीं चबाते लोग, काटने में कड़वा रस निकले। दाँत जीभ की करे सफाई, बोलो बात समझ में आई।
    - दाँतुन।
12. चार ड्राइवर एक सवारी, उसके पीछे जनता भारी।
    - मुर्दा।
13. मैं मरूँ या मैं कटूँ, तुम्हें क्यों आँसू आए।
    - प्याज।
14. काला मुहँ लाल शरीर, कागज को वह खाती। रोज शाम को फाड़कर कोई उन्हें ले जाए।
    - लेटर बॉक्स।
15. हरी डंडी, लाल कमान, तौबा-तौबा करे इंसान।
    - मिर्च।
16. तीन अक्षर का मेरा नाम, उल्टा-सीधा एक सामान।
    बताओं क्या है मेरा नाम।
    - जहाज।
17. काला हण्डा, सफेद भात, ले लो भाई हाथों-हाथ।
    - सिंघाड़ा।
18. पानी से निकला दरख्त एक, पात नहीं पर डाल अनेक।
    एक दरख्त की ठंडी छाया, नीचे एक बैठ न पाया।
    - फुहारा।
19. हमने देखा अजब एक बंदा, सूरज के सामने रहता ठंडा।
    धूप से जरा नहीं घबराता, सूरज की तरफ मुहँ लटक जाता।
    - सूरजमुखी।
20. परत-परत पर जमा हुआ है, इसे ज्ञान की जान।
    बस्ता खोलोगे तो इसको, जाओगे तुम पहचान।
    - किताब।
21. हाथी, घोड़ा, ऊँट नहीं, खाए न दाना, घास।
    सदा ही धरती पर चले, होता ना कभी निराश।
    - साईकिल।
22. मैं हरी मेरे बच्चे काले, मुझको छोड़ मेरे बच्चे खा लें।
    - इलायची।
23. चार है रानियाँ और एक है राजा,
    हर एक काम में उसका साझा।
    - अंगूठा और अंगुलियाँ।
24. कान मोड़ो तो मैं पानी दूँगा,
    इसका मैं कोई दाम भी नहीं लूँगा।
    - नल।
25. आते-जाते ये दुःख है देते, बीच में देते आराम।
    कड़ी-दृष्टि रखना इन पर, सदा सुबह और शाम।
    - दाँत।
26. यह हमको देती आराम, यह ऊँची तो ऊँचा नाम।
    बड़े-बड़े लोगो को देखा, इसके लिए होता संग्राम।
    - कुर्सी।
27. जा को जोड़ने पर बने जपान, बड़े-बड़े के मुँह का यह शान।
    - पान।
28. गिन नहीं सकता कोई, है तुझसे ही रूप।
    दिमाग को ढके रखता, सर्दी, बरसात और धूप में।
    - सर के बाल।
29. तुम मेरे पीठ पर बैठों,
    मैं तुम्हें आकाश का सैर कराऊँगा।
    - हवाई जहाज।
30. रंग-बिरंगी मेरी काया है, बच्चों का मुझ भाया हैं।
    धरा चला मुझको भाया है मुरली उधर न लाया है।
    फिर भी नाद सुनाया है।
    - लट्टू

-प्रियांशी
नवीं 'अ'

भारत के बारे में तथ्य

अति प्राचीनकाल से ही भारत दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए जिज्ञासा का विषय रहा है। यह एक दक्षिण एशियाई देश है जिसकी सीमा बंगाल की खाड़ी से दक्षिण-पूर्व में और अरब सागर से दक्षिण-पश्चिम में लगी है। भारत का मुख्य आधार कृषि है क्योंकि इसकी 50 प्रतिशत से ज्यादा आबादी इस रोजगार में लगी है। बची हुई आबादी उद्योग और सेवा क्षेत्र में कार्यरत है। भारत के बारे में महत्वपूर्ण और सामान्य तथ्यों पर नज़र डालते हैं :

- भारत को 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली।
- भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को अपनाया गया था।
- हर साल 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है।
- एक संघीय सरकार के साथ भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।
- भारत में 29 राज्य और सात केन्द्र शासित प्रदेश हैं।
- भारत की राजधानी नई दिल्ली है।
- 18 साल या उससे अधिक आयु के किसी भी भारतीय नागरिक को मतदान का अधिकार है।
- 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की आबादी 1210569573 है।
- 2000 की रिपोर्ट के अनुसार भारत के एथनिक समूहों में 72 प्रतिशत इंडो-आर्यन, 25 प्रतिशत मंगोलियाई और 3 प्रतिशत अन्य हैं।
- भारत देश का टेलीफोन कोड +91 है।

आधिकारिक नाम	संस्कृत में भारत, अंग्रेजी में रिपब्लिक ऑफ इंडिया
राजधानी	नई दिल्ली
आबादी	2011 की जनगणना के अनुसार-1210569573
क्षेत्र	3287263 वर्ग किलोमीटर
भौगोलिक स्थिति	अक्षांश 84' और 37 डिग्री 6' उत्तर के बीच और देशांतर 687, और 97 डिग्री 25, पूर्व
तटरेखा लंबाई	7526 किलोमीटर
मुख्य धर्म	हिंदू, इस्लाम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन, यहूदी, पारसी
जनसंख्या घनत्व	382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
लिंग अनुपात	1000 पुरूषों पर 943 महिलाएँ
साक्षरता	73 प्रतिशत
राष्ट्रपति	प्रणम मुखर्जी
उपराष्ट्रपति	मोहम्मद हामिद अंसारी
प्रधानमंत्री	नरेंद्र मोदी
राष्ट्रगान	जन गण मन - लेखक रवींद्रनाथ टैगौर
राष्ट्रगीत	वंदे मातरम- संस्कृत में बंकिमचंद्र चटर्जी ने लिखा
राष्ट्रीय प्रतीक	सारनाथ के अशोक के सिंह का रूपांतरण
राष्ट्रीय पशु	रॉयल बंगाल टाइगर
राष्ट्रीय पक्षी	मोर
राष्ट्रीय फूल	कमल
राष्ट्रीय वृक्ष	बरगद
राष्ट्रीय फल	आम
राष्ट्रीय मुद्रा	भारतीय रूपया
राष्ट्रीय खेल	हॉकी- अनाधिकारिक
भाषाएँ	भारत गणराज्य की कोई राष्ट्रीय भाषा नहीं हालांकि भारत की केन्द्र सरकार की दो आधिकारिक भाषाएँ है हिंदी और अंग्रेजी
राष्ट्रीय ध्वज	शीर्ष पर गहरे भगवा, तल में गहरा हरा और मध्य में सफेद रंगों के बराबर अनुपात का क्षैतिक तिरंगा जिसमें बीच में गहरे नीले रंग का चक्र है।

-मानवी
बारहवीं 'स'

भारत के इतिहास के बारे में तथ्य

- भारत दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी सभ्यता है।
- पिछले 10,000 सालों के इतिहास में किसी अन्य देश पर हमला ना करने का भारत का रिकॉर्ड है। 17वीं सदी में ब्रिटिश हमले के पहले भारत दुनिया का सबसे अमीर देश था और यह दुनिया के उन पहले देशों में से था जहाँ हीरे पाए गए थे।
- संस्कृत दुनिया का सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है और इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार से आती है, जिससे ज्यादातर आधुनिक यूरोपीय भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।
- 13 वीं सदी के भारतीय कवि संत ज्ञानदेव को मशहूर खेल साँप और सीढ़ी बनाने का श्रेय जाता है। इस खेल में सीढ़ियाँ गुण और साँप दोष का प्रतीक है। समय के साथ इस खेल में बहुत बदलाव हुए, हालांकि इसका मूल अर्थ वही रहा जिसका अर्थ था अच्छे कर्म आपको स्वर्ग और बुराई पुनर्जन्म के चक्र में ले जाती है।
- शतरंज जिसका मूल नाम 'चतूरंगा' था उसका आविष्कार भी भारत में ही हुआ। चतुरंगा का मतलब है सेना के चार सदस्य।
- भारतीय गणितज्ञ बह्मगुप्त ने सबसे पहले शून्य की अवधारणा विकसित की, जबकि आर्यभट्ट ने स्थान मूल्य प्रणाली विकसित की। छठी सदी में एक-दूसरे भारतीय गणितज्ञ बुधयाना 'पाई' के मूल्य की गणना करने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने ये यूरोप के किसी भी गणितज्ञ से काफी पहले ही कर लिया था। पश्चिमी खगोलविदों से बहुत पहले भास्कराचार्य ने धरती द्वारा सूर्य की परिक्रमा में लगने वाले समय 365.258756484 दिनों की सही गणना की थी।
- साल 15262 में बाबर ने भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की थी।
- मुगल बादशाह जहाँ ने 1653 ईसवी में ताजमहल का निर्माण पूरा करवाया था।
- साल 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई थी।
- अमृतसर नरसंहार यानि जलियाँवाला बाग नरसंहार 13 अप्रैल 1919 में हुआ था।
- महात्मा गाँधी की हत्या 30 जनवरी 1948 में हुई थी।
- दुनिया की सबसे आरंभिक चिकित्सा आयुर्वेद भारत में हजारों साल पहले उत्पन्न हुई थी।

-अनुष्का
बारहवीं 'ब'

भारत के भूगोल के बारे में तथ्य

- भारत 20 डिग्री 00' उत्तर और 77 डिग्री 00' पूर्व के भौगोलिक निर्देशांक पर स्थित है।
- यह दुनिया का सातवां सबसे बड़ा देश है। भारत का कुल क्षेत्र 3287263 वर्ग किलोमीटर है जिसमें से भूमि क्षेत्र 2973790 वर्ग किलोमीटर है।
- यह आकार में पाकिस्तान से चार गुना, यू०के० से 13 गुना और जापान से नौ गुना बड़ा है।
- भारत की मुख्य अक्षांश 8°4' और 37 डिग्री 6' उत्तर के बीच और देशांतर 68°7' और 97 डिग्री 25' पूर्व तक है।
- इसका सबसे ऊँचा बिंदु कंचनजंगा पर्वत और सबसे निचला बिंदु हिंद महासागर है।
- भारत की तट रेखा 7516.6 किलोमीटर लंबी है। भारत अपनी सीमा पाकिस्तान, चीन, अफगानिस्तान, म्यांमार, भूटान, नेपाल और बांग्लादेश से साझा करता है।
- भारत पूरी तरह से उत्तरी और पूर्वार्द्ध गोलार्द्धों में स्थित है।
- भारत की जलवायु स्थिति ट्रापिकल मानसून प्रकार की रहती है।
- पौधों की विविधता के मामले में भारत का दुनिया में दसवां और एशिया में चौथा स्थान है।
- भारत में जीवजंतुओं की लगभग 91,000 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। भारत में गंगा सबसे लंबी नदी है।
- वुलर झील भारत में ताजे पानी की सबसे बड़ी झील है।

-खशी कुमारी
बारहवीं 'ब'

भारत के अर्थव्यवस्था के बारे में तथ्य

- 1996 बिलियन डॉलर के सकल घरेलू उत्पाद के साथ भारत दुनिया की दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।
- बंबई स्टॉक एक्सचेंज दुनिया के सबसे बड़े बाजारों में से एक है। इससे 5000 से ज्यादा कंपनियाँ शामिल हैं।
- उत्पादन की मात्रा के मामले में भारत का दवा उद्योग दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा उद्योग है।
- भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक है।
- भारत दुनिया में चाय, रेशम, चीनी, मसाले, कपास, रबर, कॉफी और मछली के पाँच शीर्ष उत्पादकों में से एक है।
- भारत में कृषि क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद का 13.7 प्रतिशत है।
- इस देश की कुल आबादी का पचास प्रतिशत कृषि पर निर्भर है।
- भारत दुनिया का सबसे बड़ा केला उत्पादक है।
- भारत दुनिया में काजू का सबसे बड़ा निर्यातक, उत्पादक, प्रोसेसर और उपभोक्ता है।
- भारत में दुनिया का दस प्रतिशत फल उत्पादन होता है।
- कोयला भारत में ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत है और यह देश में 67 प्रतिशत व्यवसायिक जरूरतें पूरी करता है।
- आरबीआई भारत में मुद्रा छापने का अकेला अधिकारी है।
- ओडिसा भारत में सबसे बड़ा ग्रेफाइट उत्पादक है।
- 1965 में गुजरात के कांडला में पहला स्पेशल इकोनोमिक ज़ोन बना था ।

भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के बारे में तथ्य

- भारत दुनिया के उन चंद देशों में शुमार है जो सुपर कम्प्यूटर के निर्माता हैं।
- भारत दुनिया के उन चंद देशों में शुमार है जिन्होंने सैटेलाइट लॉन्च की हैं।
- भारत दुनिया में पहला देश है जिसने पहले ही प्रयास में मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश किया।

भारत के बारे में कुछ अन्य तथ्य

- भारत के प्राकृतिक संसाधनों में कोयला, मेंगनीज़, बॉक्साइट, लाइमस्टोन, प्राकृतिक गैस, लौह अयस्क आदि शामिल हैं।
- भारतीय रेलवे दुनिया का आठवां सबसे बड़ा नियोक्ता है जिसमें 1.4 मिलीयन लोगों को रोजगार मिलता है।
- भारत में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा इंजीनियरों, सॉफ्टवेयर डेवलपरों और वैज्ञानिकों का पूल है।
- भारत दुनिया का दूसरा बड़ा अंग्रेजी बोलने वाला देश है।
- भारत में 187 छोटे बंदरगाह और 12 प्रमुख बंदरगाह हैं।
- दुनिया में सबसे ज्यादा डाकघर भारत में मिलते हैं। देश में डेढ़ लाख डाकघर हैं।
- दुनिया के चार प्रमुख धर्मों का जन्म भारत में हुआ है जिसमें हिंदु, बौद्ध, जैन और सिख धर्म हैं। इस्लाम भारत और दुनिया का दूसरा बड़ा धर्म है। भारत में 3 लाख से ज्यादा मस्जिद हैं जो किसी भी देश के मुकाबले सबसे ज्यादा हैं।
- दुनिया का सबसे ऊँचाई पर स्थित पुल जम्मू-कश्मीर में लद्दाख में बैली ब्रिज है। यह 300 मीटर लंबा और 5600 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह सुरू और दास के बीच है। भारतीय सेना ने इसे 1982 में बनाया था।
- दुनिया का सबसे ऊँचाई पर स्थित क्रिकेट मैदान हिमाचल प्रदेश के चैल में है। यह मैदान 1893 में बना था। यह समुद्र तल से 2444 मीटर की ऊँचाई पर हैं।
- 500 ईसा पूर्व में भगवान बुद्ध ने वाराणसी का दौरा किया था। यह दुनिया का सबसे पुराना लगातार बसा हुआ शहर है।
- भारत में दुनिया का 40 प्रतिशत से ज्यादा आम पैदा होता है।
- देश की सबसे बड़ी न्यूज एजेंसी प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया है।
- भारत में एक मिलीयन से ज्यादा लोग करोड़पति हैं लेकिन भारत की आबादी का एक बड़ा भाग दिन में दो डॉलर से भी कम कमाता है। यूएन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 2010 में 30 प्रतिशत से ज्यादा लोग गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं।
- भारत की आबादी का अंदाज़ा आप इस बात से लगा सकते हैं कि यहाँ हर रोज ऑस्ट्रेलिया की आबादी के बराबर लोग पैदा होते हैं।

-साँची और सभ्या जैन
ग्यारहवीं 'अ'

पिता के पत्र

''पिता के पत्र'' महज एक किताब का नाम नहीं है बल्कि यह एक पिता की भूमिका में बेटी को लिखा गया जवाहर लाल नेहरू के वह पत्र हैं जो सभ्यता की सबसे सुंदर और सरल व्याख्या करती है। किताब में एक तरफ नेहरू के विचार हैं तो वहीं उन विचारों को कहानी के सम्राट प्रेमचंद ने इतनी सरल भाषा में पेश किया है कि पत्र सिर्फ पत्र न रहें बल्कि पिता और बेटी के बीच की भावनात्मक कहानी बन गई। सह पत्र जवाहरलाल नेहरू ने बेटी इंदिरा को लिखे थे। इन पत्रों के संग्रह 'लेटर फ्रॉम फादर टू हिज डॉटर' नाम की पुस्तक में छपी जिसे बाद में प्रेमचंद ने हिंदी में अनुवाद किया। ''पिता के पत्र'' किताब में नेहरू का कुदरत के प्रति लगाव और बेटी का देश-दुनिया के सरोकारों के प्रति एक दृष्टि विकसित कर सकने की चिंता देखी जा सकती है। इस किताब में जो पत्र हैं वह जवाहर लाल नेहरू ने 1928 में लिखी थी। उस वक्त इंदिरा गाँधी सिर्फ 10 साल की थी। दरअसल 2 साल यूरोप में रहने के बाद जब 1927 में जवाहरलाल नेहरू, कमला नेहरू और इंदिरा मद्रास के रास्ते भारत लौटे तो जहाज के ऊपर खड़ी इंदिरा ने पिता नेहरू से कई सवाल किए। यह संसार कैसे बना ? तरह-तरह के जीव कैसे बने ? मनुष्यों की सभ्यता कैसे विकसित हुई ? अलग-अलग राष्ट्र, धर्म और जातियाँ कैसे बनी ? अनेकों सवाल इंदिरा के जहन में उठ रहे थे और वह पिता नेहरू से पूछ रही थी। जब 1928 की गर्मी आई तो इंदिरा मसूरी में थी और पंडित नेहरू इलाहाबाद में, इस दौरान उन्होंने इंदिरा को 31 पत्र लिखे और इनमें इंदिरा के उन सवालों का जवाब देने की कोशिश की जो वह अक्सर पूछा करती थी। नेहरू ने अपने पत्र में इंदिरा को सभ्यता, धर्म, जाति समेत कई पहलूओं की जानकारियाँ दी। उन्होंने अपने पहले ही पत्र में लिखा ''जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अक्सर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन, अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते, इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की जो इन दुनिया में हैं, छोटी-छोटी कथाएँ लिखा करूँ'' इसके बाद एक-एक करके नेहरू ने कई खत लिखे और इन खतों को पढ़ने से साफ पता चलता है कि कितनी सहजता से एक पिता अपनी बेटी को लाखों साल का इतिहास बड़ी आसानी से समझा देता है। नेहरू ने बेटी इंदिरा को लिखें खत में क्या-क्या बताया ? संसार एक पुस्तक है नेहरू ने इंदिरा को कहा कि वह इतिहास की किताबें तो पढ़ती हैं मगर उनको अगर उस वक्त के बारे में जानना है जब किताबें नहीं छपती थी तो उन्हें संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ने की जरूरत हैं। उन्होंने अपने खत में लिखा,''तुम इतिहास किताबों में ही पढ़ सकती हो लेकिन पुराने जमाने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था। किताबें कौन लिखता ? तब हमें उस जमाने की बातें कैसे मालूम हों ? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मजे की बात होती, क्योंकि हम जो चीज चाहते हैं सोच लेते हैं, और सुंदर परियों की कहानियाँ गढ़ लेते हैं। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाए वह ठीक कैसे हो सकती हैं ? लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने जमाने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीजें हैं जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होती। ये पहाड़, समुंद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और इसी तरह की और भी कितनी ही चीजें हैं जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता हैं। मगर हाल जानने का असली तरीका यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़े।''सभ्यता क्या है नेहरू ने इंदिरा को लिखे खत में सभ्यता की परिभाषा भी बताई है और साथ ही उन्होंने किशोरी इंदिरा को इस बात की जानकारी दी कि आखिर समाज में सभ्य कौन है ? उन्होंने लिखा, ''मैं आज तुम्हें पुराने जमाने की सभ्यता का कुछ हाल बताता हूँ लेकिन इसके पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि सभ्यता का अर्थ क्या है ? कोश में तो इसका अर्थ लिखा है अच्छा करना, सुधारना, जंगली आदतों की जगह अच्छी आदतें पैदा करना और इसका व्यवहार किसी समाज या जाति के लिए ही किया जाता है। आदमी की जंगली दशा को, जब वह बिल्कुल जानवरों-सा होता है, बर्बरता करते हैं। सभ्यता बिल्कुल उसकी उल्टी चीज है। हम बर्बरता से जितनी ही दूर जाते हैं उतने ही सभ्य होते जाते हैं।''

-कनक
ग्यारहवीं 'स'

शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय जीवनी

शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय बांग्ला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार थे। उनका जन्म हुगली जिले के देवानंदपुर में हुआ। वे अपने माता-पिता की नौ संतानों में से एक थे। अठारह साल की अवस्था में उन्होंने इंट्रेंस पास किया। इन्हीं दिनों उन्होंने ''बासा'' (घर) नाम से एक उपन्यास लिख डाला, पर यह रचना प्रकाशित नहीं हुई। रवींद्रनाथठाकुर और बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। शरतचन्द्र ललित कला के छात्र थे लेकिन आर्थिक तंगी के चलते वह इस विषय की पढ़ाई नहीं कर सके। रोजगार की तलाश में शरतचन्द्र बर्मा गए और लोक निर्माण विभाग में क्लर्क के रूप में काम किया। कुछ समय बर्मा में रहकर कलकत्ता लौटने के बाद उन्होंने गंभीरता के साथ लेखन शुरू कर दिया। बर्मा से लौटने के बाद उन्होंने प्रसिद्ध उपन्यास श्रीकांत लिखना शुरू किया।

प्रारंभिक जीवन :

जन्म 1876 ई० के 15 सिंतबर को हुगली जिले के छोटे से गाँव देवानंदपुर में हुआ। वे अपने माता-पिता की नौ संतानों में एक थे। घर में बच्चों का ठीक-ठीक शासन नहीं हो पाता था। जब शरत भागने लायक उम्र के हुए तो जब तक पढ़ाई-लिखाई छोड़कर भाग निकलते। इस पर कोई विशेष शोर नहीं मचता था, पर जब वह लौटकर आते तो उन पर मार पड़ती थी। रवींद्रनाथ का प्रभाव उन पर बहुत अधिक पड़ा पर बंकिमचंद्र का प्रभाव भी कम नहीं था। उनकी कालेज की पढ़ाई बीच में ही रूक गई। वह तीस रूपये मासिक के क्लर्क होकर बर्मा पँहुच गए। इन दिनों उनका संपर्क बंगचंद्र नामक एक व्यक्ति से हुआ जो था तो बड़ा विद्वान् पर शराबी और उछंखल था। यहीं से चरित्रहीन का बीज पड़ा, जिसमें मेस जीवन के वर्णन के साथ मेस की नौकरानी से प्रेम की कहानी है। पाँच वर्ष की उम्र में ही देवानंदपुर के प्यारी पंडित की पाठशाला में दाखिल कराया। भागलपुर में शरतचन्द्र का ननिहाल था। नाना केदारनाथ गांगुली का आदमपुर में अपना मकान था और उनके परिवार की गिनती खाते पीते परिवार सभ्रांत बंगाली परिवार के रूप में होती थी, पिता मोती लाल वेफिक्र स्वभाव के थे और किसी नौकरी में टिक पाना उनके वश की बात नहीं था। परिणाम स्वरूप गरीबी के गर्त में चला गया और उन्हें बाल बच्चों के साथ देवानंदपुर छोड़कर भागलपुर अपने ससुराल में रहना पड़ा। इस कारण उनका बचपन भागलपुर में गुजरा और पढ़ाई-लिखाई भी यहीं हुई। गरीबी और अभाव में पलने के बावजूद शरत दिल के आला और स्वभाव के नटखट थे। वे अपने हम उम्र मामाओं और बाल सरणाओं के साथ खूब शरारते किया करते थे। कथाशिल्पी शरत के प्रसिद्ध पात्र देवदास, श्रीकांत, सत्यसाची, दुर्दान्त राम आदि के चरित्र को झांके तो उनके बचपन की शरारतें और सभी साथियों की सहज दिख जाएगी। सन् 1883 में शरतचन्द्र का दाखिला भागलपुर दुर्गाचरण एम० ई० स्कूल की छात्रवृति क्लास में कराया गया। नाना केदारनाथ गांगुली इस विद्यालय के मंत्री थे। अब तक उसने वोधोदय ही पढ़ा था, लेकिन यहाँ पढ़ना पड़ा। सीता बनवास 'चारू पाठ', 'सद्भाव सदुरू' और 'प्रकांड व्याकरण', नाना कई भाई थे और संयुक्त परिवार में एक साथ रहते थे। इसलिए मामा तथा मौसियों की संख्या काफी थी। छोटे नाना अघोरीनाथ गांगुली का बेटा मणिन्द्रनाथ उनका सहपाठी था। छात्रवृति की परीक्षा पास करने के बाद अंग्रेजी स्कूल में भर्ती हुए, उनकी प्रतिभा उत्तरोत्तर विकसित होती गयी। शरत नहीं जानते थे कि उनकी साधना पूरी हो चुकी है। जब वह एक बार बर्मा से कलकत्ता आए तो अपनी कुछ रचनाएँ कलकत्ते में एक मित्र के पास छोड़ गए। शरत को बिना बताए उनमें से एक रचना ''बड़ी दीदी'' का 1907 में धारावाहिक प्रकाशन शुरू हो गया। दो एक किश्त निकलते ही लोगों में सनसनी फेल गई और वे कहने लगे कि शायद रवींद्रनाथ नाम बदलकर लिख रहे हैं। शरत को इसकी खबर साढ़े पाँच साल बाद मिली। कुछ भी हो ख्याति तो हो ही गई, फिर भी ''चरित्रहीन'' के छपने में बड़ी दिक्कत हुई। भारतवर्ष के संपादक कविवर द्विजेंद्र लाल राय ने इसे यह कहकर छापने से इन्कार कर दिया कि यह सदाचार के विरूद्ध है। शरतचन्द्र ने अनेक उपन्यास लिखे जिनमें पंडित मोशाय, बैकुंठेर बिल, मेज दीदी, दर्पचूर्ण, श्रीकांत, अरक्षणीया, निष्कृति, मामलार फल, गृहदाह, शेष प्रश्न, दत्ता, देवदास, बाम्हन की लड़की, विप्रदास, देना पावना आदि प्रमुख हैं। बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन को लेकर ''पथेर दावी'' उपन्यास लिखा गया। पहले यह ''बंग वाणी'' में धारावाहिक रूप से निकाला फिर पुस्तकाकार छपा तो तीन हजार का संस्करण तीन महीने में समाप्त हो गया। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने इसे जब्त कर लिया। शरत के उपन्यासों के कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। कहा जाता है कि उनके पुरूष पात्रों से उनकी नायिकाएँ अधिक बलिष्ठ हैं। शरतचंद्र चट्टोपाध्याय वैसे तो स्वयं को रवींद्रनाथ ठाकुर के साहित्य से प्ररित बताते थे लेकिन उनके साहित्य ने समाज के निचले तबके को पहचान दिलाई और यही नहीं उन्हें उनके इसी दुस्साहस के लिए समाज के रोष का पात्र भी बनना पड़ा, शायद यही वजह रही कि हिंदी साहित्य के रचनाकार विष्णु प्रभाकर ने उन्हें 'आवारा मसीहा' की संज्ञा दी। दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य करने वाले और हिंदी साहित्य में लेखन के लिए 'प्रेमचंद कथा सम्मान' जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित प्रभात रंजन कहते हैं, ''शरतचन्द्र ने अपनी रचनाओं में समाज के निचले तबके को उभारने का काम किया है, सुंदरता की जगह कुरूपता को अधिक प्रमुखता दी और इसी कारण उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक लगती हैं।'' शरतचन्द्र की 'देवदास' पर तो 12 से अधिक भाषाओं में फिल्में बन चुकी हैं और सभी सफल रही हैं। उनकी 'चरित्रहीन' पर बना धारावाहिक भी दूरदर्शन पर सफल रहा। 'चरित्रहीन' को जब उन्होंने लिखा था तब उन्हें काफी विरोध का सामना करना पड़ा था क्योंकि उसमें उस समय की मान्यताओं और परंपराओं को चुनौती दी गयी थी।

गृहदाह शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय जी का 1919 में प्रकाशित उपन्यास था। ये उपन्यास कहानी है महिम, सुरेश और अचला की महिम एक गरीब घर का लड़का है और उनका घनिष्ट मित्र सुरेश एक धनी परिवार का है। वो महिम पर बहुत स्नेह रखता है। जब उसे पता लगता है की महिम एक ब्रह्मो समाजी लड़की से विवाह करना चाहता है तो महिम से नाराज हो जाता है और उससे इस विवाह को तोड़ने के लिए कहता है। इसी उद्देश्य से वो उस लड़की यानि अचला के घर भी जाता है, ताकि महिम का रिश्ता तुड़वा सके लेकिन वहाँ जाकर कुछ ऐसी घटनायें होती हैं की सुरेश भी अचला पे मोहित हो जाता है। आगे की कहानी एक प्रेम त्रिकोण में तब्दील हो जाती है। शरत चन्द्र जी के उपन्यास अपन समाज का चित्र भी पाठकों के सामने दिखाते है। शरतचंद्र बाबू ने मनुष्य को अपने विपुल लेखन के माध्यम से उनकी मर्यादा सौंपी और समाज की उन तथाकथित परम्पराओं को ध्वस्त किया, जिनके अन्तर्गत नारी की आँखें अनिच्छित आँसुओं से हमेशा छल-छलाई रहती हैं। शरत बाबू ने समाज द्वारा अनसुनी रह गई वंचितों की विलख-चीख और आर्तनाद को परखा और यह जाना कि जाति, वंश और धर्म आदि के नाम पर एक बड़े वर्ग को मनुष्य की श्रेणी से ही अपदस्थ किया जा रहा है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से इस षड्यन्त्र के अर्न्तगत पनप रही तथाकथित सामाजिक 'आम सहमति' पर रचनात्मक हस्तक्षेप किया, जिसके चलते वह लाखों करोड.ों पाठकों के चहेते शब्दकार बने। नारी और अन्य शोषित समाजों के धूसर जीवन का उन्होंने चित्रण ही नहीं किया, बल्कि उनके आम जीवन में आच्छादिक इन्दधनुषी रंगों की छाया भी बिखरी थी। शरत का प्रेम को आध्यात्मिकता तक ले जाने में विरल योगदान है। शरत-साहित्य आम आदमी के जीवन को जीवंत करने में सहायक जड़ी-बूटी सिद्ध हुआ है। चट्टोपाध्यायजी के उपन्यास बिराज में बिराज एक स्वाभिमानी अति सुन्दर स्त्री है जो अंत में पतिप्रेम को ही सबसे महत्व पूर्ण मानती है। इससे अधिक आनंद और समाधान हुआ बिराज के पति नीलाम्बर के शांतचित, दार्शनिक एवं स्नेहपूर्ण वृत्ति को जानकर अपनी धर्म पत्नी के प्रति नीलाम्बर के गहरे प्रेम और उन दोनों के बीच का अटूट रिश्ता इस संपूर्ण कहानी के दूखाद वृत्तान्त पर भारी हो गया और मेरे मन में एक सकारात्मक प्रभाव छोड़ गया। बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन को लेकर ''पथेर दावी'' उपन्यास लिखा गया। पहले यह ''बंग वाणी'' में धारावाहिक रूप से निकाला, फिर पुस्तकाकार छपा तो तीन हजार का संस्कारण तीन महीने में समाप्त हो गया। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया। शरत के उपन्यासों के कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। कहा जाता है कि उनके पुरूष पात्रों से उनकी नायिकाएँ अधिक बलिष्ठ हैं। शरतंचद्र की जनप्रियता उनकी कलात्मक रचना और नपे तुले शब्दों या जीवन से ओत-प्रोत घटनावलियों के कारण नहीं है बल्कि उनके उपन्यासों में नारी जिस प्रकार परंपरागत बंधनों से छटपटाती दृष्टि-गोचर होती है, जिस प्रकार पुरूष और स्त्री के संबंधों को नए आधार पर स्थापित करने के लिए पक्ष प्रस्तुत किया गया है, उसी से शरत् को जनप्रियता मिली। उनकी रचना हृदय को बहुत अधिक स्पर्श करती है। पर शतसाहित्य में हृदय के सारे तत्व होने पर भी उसमें समाज के संघर्ष, शोषण आदि पर कम प्रकाश पड़ता है। पल्ली समाज में समाज का चित्र कुछ-कुछ सामने आता है। महेश आदि कुछ कहानियों में शोषण का प्रश्न उभरकर आता है। उनके कुछ उपन्यासों पर आधारित हिन्दी फिल्में भी कई बार बनी हैं। इनके उपन्यास चरित्रहीन पर आधारित 1974 में इसी नाम से फिल्म बनी थी। उसके बाद देवदास को आधार बनाकर देवदास फ़िल्म का निर्माण तीन बार हो चुका है।

उपन्यास :

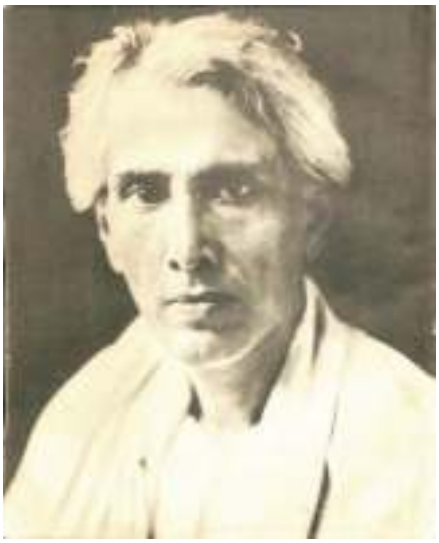

श्रीकान्त
पथ के दावेदार
देहाती समाज
देवदास
चरित्रहीन
गृहदाह
बड़ी दीदी
ब्राह्मण की बेटी
सविता
वैरागी
लेन-देन
परिणीता
मझली दीदी
नया विधान
दत्ता
ग्रामीण समाज
शुभदा
विप्रदास

कहानियाँ :

सती तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह)
विलासी (कहानी संग्रह)
गुरूजी
अनुपमा का प्रेम

मृत्यु :

प्रसिद्ध उपन्यासकार शरत चंद्र चट्टोपाध्याय की मृत्यु 16 जनवरी सन् 1938 ई0 को हुयी थी। शरतचंद्र चट्टोपाध्याय को यह गौरव हासिल है कि उनकी रचनाएँ हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं में आज भी चाव से पढ़ी जाती है। लोकप्रियता के मामले में बंकिम चन्द्र चटर्जी और शरतचंद्र रवीन्द्रनाथ टैगोर से भी आगे हैं।

-अनुष्का और गुंजन
ग्यारहवीं 'अ'

मजहब की शुरूआत कब हुई

नेहरू ने अपने खतों में बताया कि पहले के जमाने में लोग भगवान से बहुत डरते थे और इसलिए वह उन्हें भेंट देकर, खासकर खाना पँहुचा कर, हर तरह की रिश्वत देने की कोशिश करते रहते थे। देवताओं को खुश करने के लिए वे मर्दों-औरतों का बलिदान करते, यहाँ तक कि अपने ही बच्चों को मार कर देवताओं को चढ़ा देते। यही बड़ी भयानक बात मालूम होती है लेकिन डरा हुआ आदमी जो कुछ कर बैठे, थोड़ा हैं। नेहरू ने खत में लिखा है, ''मजहब पहले डर के रूप में आया और जो बात डर से की जाए बुरी है। तुम्हें मालूम है कि मजहब हमें बहुत-सी अच्छी-अच्छी बातें सिखाता है। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया के मज़हबों का हाल पढ़ोगी और तुम्हें मालूम होगा कि मजहब के नाम पर क्या-क्या अच्छी और बुरी बातें की गई हैं। यहाँ हमें सिर्फ यह देखना है कि मजहब का ख्याल कैसे पैदा हुआ और क्यों बढ़ा लेकिन चाहे वह जिस तरह बढ़ा हो, हम आज भी लोगों को मजहब के नाम पर एक-दूसरे से लड़ते और सिर फोड़ते देखते हैं। बहुत-से आदमियों के लिए मजहब आज भी वैसी ही डरावनी चीज है। वह अपना वक्त फर्जी देवताओं को खुश करने के लिए मंदिरों में पूजा, चढ़ावा और जानवरों की कुर्बानी करने में खर्च करते है।''

रामायण और महाभारत

सबसे बड़े धार्मिक ग्रंथों में शामिल रामायण और महाभारत को लेकर भी जवाहरलाल नेहरू ने अपनी बेटी इंदिरा को पत्रों के जरिए बताया था। उन्होंने लिखा था, रामायण पढ़ने से मालूम होता है कि दक्खिनी हिंदुस्तान के बंदरों ने रामचंद्र की मदद की थी और हनुमान उनका बहादुर सरदार था। मुमकिन है कि रामायण की कथा आर्यों और दक्खिनी के आदमियों की लड़ाई की कथा हो, जिनके राजा का नाम रावण रहा हो। रामायण में बहुत-सी सुंदर कथाएं हैं। लेकिन यहाँ मैं उनका जिक्र न करूँगा, तुमको खुद उन कथाओं को पढ़ना चाहिए। नेहरू रामायण की तरह महाभारत के बारे में लिखते हैं, ''महाभारत रामायण के बहुत दिनों बाद लिखा गया। यह रामायण से बहुत बड़ा ग्रंथ है। यह आर्यो और दक्खिन के द्रविड़ों की लड़ाई की कथा नहीं; बल्कि आर्यो के आपस की लड़ाई को छोड़ दो, तो भी सह बड़े ऊँचे दरजे की किताब हैं जिसके गहरे विचारों और सुंदर कथाओं को पढ़कर आदमी दंग रह जाता है। सबसे बढ़कर हम सबको इसलिए इससे प्रेम है कि इसमें वह अमूल्य ग्रन्थ रत्न है जिसे भगवद्गीता कहते हैं। ये किताबें कई हजार वर्ष पहले लिखी गई थीं। जिन लोगों ने ऐसी-ऐसी किताबें लिखी वे जरूर बहुत बड़े आदमी थे। इतने दिन गुजर जाने पर भी ये पुस्तकें अब तक जिंदा हैं, लड़के उन्हें पढ़ते हैं और सयाने उनसे उपदेश लेते हैं इसी तरह इस संसार में जाति, जबानं, कौमें, खानदान और खानदान और जाति का सरगना कैसे बना इसके बारे में भी उन्होंने अपने खत में लिखा है। साथ ही चीन और भारत के रिश्तों पर भी इन खतों में प्रकाश डाला गया है नेहरू ने हमेशा इंदिरा को बताया कि यह दुनिया रहस्यों से भरा संसार है। इसलिये हममे से किसी को भी ये सोचना नहीं चाहिये कि हम सबकुछ सीखकर बहुत बुद्धिमान हो गये हैं। सीखने को हमेशा बहुत कुछ बचा रहता हैं। नेहरू ने जो खत इंदिरा को लिखे वह वाकई सभ्यता और संस्कृति को समझने का सबसे सरल तरीका था।

-शैली दुबे
ग्यारहवीं-अ

''सत्यजीत रे की जीवनी''

सत्यजीत रे भारतीय फिल्म निर्माता, पटकथा लेखन, संगीतकार, ग्रफिक कलाकार, गीतकार और लेखक थे। वह 20वीं शताब्दी में अपनी महानतम् फिल्म निर्माणों के लिये जाने जाते हैं। उनका परिवार कला और साहित्य में रूचि रखता था। 1955 में उन्होंने बंगाली 'पाथेर पांचाली' से अपने केरियर की शुरूआत की। उसके बाद उन्होंने कई फिल्मों में पटकथा, निर्माता के रूप में काम किया, जैसे जलसाघर, महापुरूष, अपूर संसार, तीन कन्या, शाखा प्रशाखा, कंचनजंघा, नायक और बाला। उन्होंने 36 फ़िल्मों में निर्देशन किया, जिनमें फीचर फिल्में, वृत्तचित्र और शॉर्टस शामिल है। वह एक फिक्शन लेखन, प्रकाशन, चित्रकार, सुलेखन, संगीत संगीतकार, ग्राफिक डिजाइनर और फिल्म समीक्षक भी थे। उन्होंने बहुत-सी लघु कथायें और उपन्यास और बच्चों पर आधारित किताबें भी लिखी है। उन्होंने फ़िल्मी केरियर में कई पुरस्कार प्राप्त किये, जिसमें दादासाहेब फालके पुरस्कार, 32 इंडियन नेशनल फिल्म अवार्ड और कुछ इंटरनेशनल फिल्म अवार्ड शामिल है, 2004 में उन्हें बीबीसी के अब तक के सबसे महान बंगाली पोल में 13 वें स्थान पर रखा गया।

व्यक्तिगत जीवन

सत्यजीत रे का जन्म 2 मई 1921 को कलकत्ता, बंगाल प्रेसीडेंसी, ब्रिटिश भारत में हुआ था। उनके पिता का नाम सुकुमार था। जब सत्यजीत रे तीन साल के थे तब उनके पिता सुकुमार राय का निधन हो गया था। उनकी माता का नाम सुप्रभा राय था। सत्यजीत रे के दादा उपेन्द्रकिशोर राय चौधरी लेखक, चित्रकार, दार्शनिक, प्रकाशक, अपेशेवर खगोलशास्त्री और ब्रह्म समाज के नेता थे। उन्होंने गर्वनमेंट हाई स्कूल बल्लीगुंग, कलकत्ता से शुरूआती पढ़ाई पूर्ण की। उसके बाद उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता से अर्थशास्त्र की डिग्री ली। उनकी माता ने आग्रह किया कि वह गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित विश्व-भारती विश्वविद्यालय में अपनी आगे की पढ़ाई करें। सत्यजीत रे कलकत्ता को छोड़ना नहीं चाहते थे लेकिन अपनी माँ के आग्रह से वह शान्तिनिकेतन चले गए। सत्यजीत रे शान्तिनिकेतन की पूर्वी कला से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने प्रसिद्ध पेंटर नंदलाल बोस और बेनोड़े बहरी मुखर्जी से काफी कुछ सिखा, बाद में उन्होंने मुखर्जी पर आधारित एक डाक्यूमेंटी फिल्म 'द इनर आँय' बनाई भारतीय कला को पहचानने में अंजता, एल्लोरा और एलीफेंटा ने उनकी काफी सहायता की। 1943 में, उन्होंने ब्रिटिश विज्ञापन अभिकरण डी0 जे0 केमर में नौकरी करना शुरू किया। उन्हें महीने के 80 रूपये मिलते थे।

उन्हें विसुअल डिजाईन काफी पसंद था लेकिन फर्म में ब्रिटिश और भारतीय कर्मचारियों के बीच हमेशा कुछ ना कुछ मतभेद रहता था। 1943 में, वह डी0 के0 गुप्ता द्वारा स्थापित सिग्रेट प्रेस के साथ भी काम करने लगे। गुप्ता ने उन्हें प्रेस में छापने वाली नई किताबों के मुखपृष्ठ रचने को कहा और पूरी कलात्मक मुक्ति दी। सत्यजीत ने बहुत किताबों के मुखपृष्ठ बनाए, जिनमें जिम कार्बेट की मैन-ईटर्स ऑफ कुमाऊँ (Man-eaters of Kumaon, कुमाऊँ के नरभक्षी) और जवाहर लाल नेहरू की डिस्कवरी ऑफ इंडिया (Discovery of Indias, भारत की खोज) शामिल है। उन्होंने पाथेर पांचाली के चिल्ड्रेन वर्जन पर भी काम किया है, जो की विभूतिभूषण वनद्योपाध्याय का बंगाली उपन्यास है, वे किताबों के कवर को डिजाईन करने के साथ-साथ उसपर चित्रकारी भी करते थे, उनके कामों की काफी प्रशंसा की जाती थी।

कैरियर

1955 में, उन्होंने फिल्म 'पाथेर पांचाली' से एक पटकथा के रूप में अपने फ़िल्मी कैरियर की शुरूआत की। उसके बाद, उन्होंने बतौर निर्देशक, निर्माता और लेखक के रूप में कई फिल्मे की जैसे अपराजितो, पारश पत्थर, देवी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महानगर, महापुरूष, चिडित्रयाखाना, गुपी गाइन, बाघा बाइन, सीमाब), द इनर आइ, प्रतिद्वंदी, सोनार केल्ला, जन अरण्य, हीरक राजार देशे, सुकुमार राय, शाखा-प्रशाखा, गन्तुक, चिनमूल, अभियान, सिक्किम, अशनि संकेत, शंतरंज के खिलाड़ी, पिकूर डायरी, टार्गेट और बॉम्बईयर बॉम्बेटे। उन्होंने कई अंग्रेजी फिल्मों में भी अपना योगदान दिया है। सत्यजित राय मानते थे कि कथानक लिखना निर्देशन का अभिन्न अंग है। यह एक कारण है जिसकी वजह से उन्होंने प्रारंभ में बांग्ला के अतिरिक्त किसी भी भाषा में फि ल्म नहीं बनाई। उनकी कला निर्देशक बंसी चन्द्रगुप्ता की दृष्टि भी राय की तरह ही पैनी थी। शुरूआती फि ल्मों पर इनका प्रभाव इतना महत्वपूर्ण था कि राय कथानक पहले अंग्रेजी में लिखते थे ताकि बांग्ला न जानने वाले उसे समझ सकें। फि ल्मों के अलावा, उन्होंने बांग्ला भाषा के बाल-साहित्य में दो लोकप्रिय चरित्रों की रचना की 'गुप्तचर फेलुदा' और 'वैज्ञानिक प्रोफ़ेसर शंकु'। उन्होंने कई लघु-कथाएँ भी लिखीं, जो बारह- बारह कहानियों के संकलन में प्रकाशित होती थी। उन्हें पहेलियों और बहुअर्थी शब्दों के खेल से बहुत प्रेम था। इसे इनकी कहानियों में भी देखा जा सकता है। फेसर शंकु की विज्ञानकथाएँ एक दैनन्दिनी के रूप में हैं जो शंकु के अचानक गायब हो जाने के बाद मिलती है।

राय ने इन कहानियों में अज्ञात और रोमांचक तत्वों टटोला है, जो उनकी फ़िल्मों में नहीं देखने को मिलता है। इनकी लगभग सभी कहानियाँ हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुवाद हो चुकी है। उनके सभी कथानक भी बाग्ंला भाषा में साहित्यिक पत्रिका एकशान में प्रकाशित हो चुके है।1982 में, उन्होंने एक आत्मकथा 'जखन छोटो छिलम' लिखी। उसके बाद, उन्होंने फ़िल्मों के विषय पर कई पुस्तकें लिखी है, जिनमें से प्रमुख है (Our Films, Their Films, हमारी फ़िल्में, उनकी फ़िल्में)1976 में प्रकाशित इस पुस्तक में उनकी लिखी आलोचनाओं का संकलन है। इस प्रकार, उन्होंने बंगाली सिनेमा पर अमिट छाप छोड़ी है। वह भारत सरकार ने फ़िल्मों से सम्बन्धित अध्ययन के लिए सत्यजित राय फ़िल्म एवं टेलिविज़न संस्थान की स्थापना की। लंदन फ़िल्मोत्सव में नियमित रूप से एक ऐसे निर्देशक को सत्यजित राय पुरस्कार दिया गया जाता है जिसने पहली फ़िल्म में ही ''राय की दृष्टि की कला, संवेदना और मानवता'' को अपनाया हो।

पुरस्कार और सम्मान

सत्यजीत रे को अपने कैरियर में फिल्मों में अपना योगदान देने के लिए कई पुरूस्कार व सम्मान प्राप्त हुए है जिनमें 32 नेशनल फिल्म अवार्ड और इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल अवार्ड भी शामिल है। इसके अलावा, उन्हें कई पुरूस्कार प्राप्त है जैसे पद्म भूषण, रमन मैगसेसे पुरस्कार, स्आर ऑफ यूगोस्लाविया, पद्म श्री, विशेष पुरस्कार, डी0 लिट0, विद्यासागर पुरस्कार, दादा साहेब फाल्के पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुस्कार, ऑस्कर और अन्य फिल्म पुरस्कार।

-उर्मिला
नवीं 'अ'

हिंदी पखवाड़ा/शिक्षक दिवस

क्षेत्रीय खेलकूद प्रतियोगिता

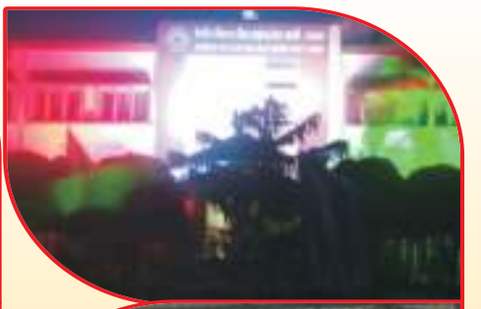

HEROES

केंद्रीय विद्यालय सिख लाइंस के बच्चों ने संभागीय प्रतियोगिताओं में लहराया परचम

के०वि० सिख लाइंस के छात्रों का खेल प्रतियोगिता में दबदबा

मेरठ: केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आगरा संभाग की खेलकूद प्रतियोगिताओं में केन्द्रीय विद्यालय सिख लाइंस मेरठ के 137 बच्चों ने हिस्सा लिया। बच्चों ने बास्केट-बॉल, खो-खो, एथलेटिक्स, बॉक्सिंग, योगा व स्विमिंग आदि खेलों में भाग लिया जिनमें 122 मेडल प्राप्त किए। साथ ही 38 बच्चों को केन्द्रीय विद्यालय संगठन की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चुना गया है। यह प्रतियोगिता अगले माह अक्टूबर में चंडीगढ़, भोपाल व नोएडा आदि संभागों में आयोजित होंगी। विद्यालय के खेल शिक्षक राजीव चौधरी ने बताया उनका लक्ष्य विद्यालय के प्रत्येक बच्चों को खेल के प्रति जागरूक करने के साथ विभिन्न खेलों में उच्च स्तर की कोचिंग देकर उनको आगे बढ़ाना है। विद्यालय के प्राचार्य नवल सिंह ने विद्यालय की खेल विभाग की उपलब्धि को सराहा।

विविध

केवि संगठन की खेलकूद प्रतियोगिताओं में प्रतिभागी व पदक विजेता बच्चों के साथ सिख लाइंस के प्राचार्य नवल सिंह व अन्य • सौ. विद्यालय

केवि सिख लाइंस के 38 बच्चे खेलेंगे राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं

मेरठ : केंद्रीय विद्यालय संगठन के आगरा संभाग की खेलकूद प्रतियोगिताओं में केंद्रीय विद्यालय सिख लाइंस के 137 बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने बास्केटबाल, खो-खो, एथलेटिक्स, बाक्सिंग, योग, तैराकी आदि खेलों में भाग लियाा। इनमें 122 ने पदक जीता और 38 बच्चों का चयन केंद्रीय विद्यालय संगठन की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए किया गया है। राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं अक्टूबर में चंडीगढ़, भोपाल, नोएडा आदि संभागों में आयोजित होगी। खेल शिक्षक राजीव चौधरी ने उत्साहवर्धन किया। शनिवार को विद्यालय के प्राचार्य नवल सिंह ने विद्यालय की खेल विभाग की उपलब्धि को सराहा और बच्चों को सम्मानित किया। जासं

मेरठ 17 सितंबर। केंद्रीय विद्यालय संगठन के आगरा संभाग की खेलकूद प्रतियोगिताओं में केंद्रीय विद्यालय सिख लाइंस मेरठ के 137 बच्चों ने भाग लिया बच्चों ने बास्केटबॉल, खो-खो, एथलेटिक्स, बॉक्सिंग, योगा स्विमिंग आदि खेलों में भाग लिया जिनमें 122 मेडल प्राप्त करते हुए 38 बच्चों का स्थान, केंद्रीय विद्यालय संगठन की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए सुनिश्चित किया, जो अगले माह अक्टूबर में चंडीगढ़, भोपाल, नोएडा आदि संभागों में आयोजित होंगी।

विद्यालय के खोल शिक्षक राजीव चौधरी के अनुसार उनका विद्यालय के प्रत्येक बच्चों को खेल के प्रति जागरुक करना और विभिन्न खेलों में उच्च स्तर की कोचिंग देकर उनको आगे बढ़ाना ही उनका एकमात्र लक्ष्य है। विद्यालय के प्राचार्य श्री नवल सिंह जी ने विद्यालय की खेल विभाग की इस उपलब्धि को सराहना करते हुए बच्चों को आशीर्वाद

हमसे फेसबुक पर भी जुड़े https://www.facebook.com/meerutreport/

के०वि० सिख लाइंस ने खेलों में लहराया परचम

मेरठ। केंद्रीय विद्यालय सिख लाइंस के छात्रों ने संभागीय प्रतियोगिताओं में परचम लहराया। सिख लाइंस के 137 बच्चों ने बास्केटबॉल, खो-खो, एथलेटिक्स, बॉक्सिंग, योग, स्विमिंग आदि खेलों में भाग लिया। इसमें 122 मेडल प्राप्त करते हुए 38 छात्रों ने केंद्रीय विद्यालय संगठन की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में जगह पक्की की। यह प्रतियोगिता अक्टूबर में चंडीगढ़, भोपाल, नोएडा आदि संभागों में आयोजित होगी। विद्यालय के खेल प्रशिक्षक राजीव चौधरी ने बताया कि बच्चों को खेल के प्रति जागरूक कर आगे बढ़ाने का लक्ष्य है। प्रधानाचार्य नवल सिंह ने छात्रों के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। संवाद

प्रतियोगिता में मेडल जीतने वाले केंद्रीय विद्यालय सिख लाइंस के छात्र-छात्राएं। संवाद

संस्कृत विभागः

महाकविः कालिदासः

कविकुलगुरूः कालिदासः अस्मिन्युगे को न जानाति। विद्वदिमिः विश्वस्य साहित्यकारेषु अस्य गणना कृता। बहवः विद्वांसः उज्जयिन्यामेव अस्य जन्मभूमि मन्यन्ते। अनेनैव हेतुना तस्य कृतिषु उज्जयिन्याः वर्णनं सञ्जातम्। उक्तम् च ''विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु कालिदासः एकः''। कथ्यते– कालिदासः महामूर्खः आसीत्। राज्ञः शारदानन्दस्य विद्योतमा नाम्नी एका विदुषी कन्या आसीत्। सा स्वविद्यया अतिदर्पशीला आसीत्। सा प्रतिज्ञातवती यत् शास्त्रार्थे यः मां पराजेष्यति तेन सह विवाह करिष्यामीति। तां प्रतिज्ञा श्रुत्वा बहवः विद्वांसः आगच्छन् तया सह शास्त्रार्थे सर्वे पराजिता अभवन्। ईर्ष्यावशात् ते राजकन्यायाः विवाहं महामूर्खेण सह सम्पादयितुं वयचारयन्। ते मूर्खस्य अन्वेषणार्थं निर्गताः। सहसा कस्यचिद् वृक्षस्य शाखायां स्थित्वा तां शाखां कर्तयन्तम् एकं मूर्खम् अपश्यन्। तस्मात् वृक्षात् अधः अवतीर्य ते अवदन् तं भो पुरूष! वयं परमसुन्दर्या राजकन्याया सह तव विवाहं कर्तुमिच्छामः। स्वगुरूरूपेण तव परिचयं दास्यामः परम् त्वं किमपि न ध्वक्ष्यसि। तं मूर्ख नीत्वा विद्वांस राजकन्यायाः समीपम् आगतवन्तः अवदन् च।

आरजू यादव
अष्टमी 'स'

गुरूवंदना

वंदे स्वपितरं नित्यं पठने–पाठनेरतम्।
सुधिरा धार्मिक विज्ञभावुक वचनाभिध्म्।।
वंदे गुरूवरं देवं निष्पक्षं सत्यवादिनम्।
पठने–पाठनेलग्र सरल जनकाभिधम।।
वंदे गुरूवरं देवं निर्हेतुकपांठितम्।
मम् प्राणसुरक्षार्थं शिवरूपं जगत्पतिम्।।
वंदे गुरूवरं देवं सूर्यानंद मनस्विनम्।
सरल सात्विकं सम्यक् शिष्याणां हितचिंतकम्।
वंदे वक्तृत्वसम्पन्नं कृष्णदेवं गुरूं शुभम्।
तार्किक धार्मिक विज्ञ स्वाध्यायेनिरतं सदा।।

–वंशिका
षष्ठी 'स'

गीतायाः उपदेशाः

1. 'आत्माऽजरः अमरः।'
2. 'स्वकर्मानुसारं पुनर्जन्म भवति।'
3. 'निष्कामभावनया कर्म करणीयम्।'
4. 'सेवाधर्मः न कदाचिदपि त्याज्याः।'
5. 'सदा स्वकीर्तेः रक्षा करणीया।'
6. 'शुभ कर्म सदा भयात् त्रायते।'
7. 'यज्ञः कर्म समुद्भवः।'
8. 'सततं कार्य कर्म समाचर।'
9. 'कृपणाः कलहहेतवः।
10. 'योगः कर्मसु कौशलम्।'
11. 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'
12. 'बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।'
13. 'अशान्तस्य कुतः सुखम्।'
14. निरहङ्कार शान्तिमधिगच्छति।'
15. 'भुक्तसाड.गः समाचर।'
16. 'गीता सुगीता कर्त्तव्या।'

–दीपाली
अष्टमी 'ब'

परोपकार:

न केवल मानवः अपितु पशुपक्षिणः प्रकृतिः अपि परोपकारं कुर्वन्ति
वृक्षाः नद्यः अपि परोपकारमं कुर्वन्ति।
यथा वृक्षाः स्वयं ताप आतपे
परेभ्यः मधुराणि फलानि यच्छन्ति।
नद्यः सर्वजलं परेभ्यः दत्वा परोपकारं कुर्वन्ति।
गावः सर्व दुग्धं परेभ्यः यच्छन्ति
यथा कविना कथितम्-परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः
परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः।
परोपकारार्थमिदं शरीरम्।

–अस्तित्व चौधरी
षष्ठी 'अ'

सूर्यः

करोति तमः दूरं प्रकाशं विकीर्णयति
जीवनम् दास्यति पशु-पक्षी येन
भवति पृथ्वी एवं करोति पूजा तव सर्वा।।
भानुः रविः तव नाम भास्करः आदित्यः दिवाकरः च।
हे! त्वाम् प्रणामः सदैव करिष्यामः,
तव गुणगानः।

–अंजली यादव
षष्ठी 'अ'

प्रहेलिकाः

१.चक्र त्रिशूली न हरो न विष्णुः, महान् बलिष्ठोन च भीमसेनः।
स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि, सीतावियोगी न च रामचन्द्रः।।
उत्तर- वृषभ
२.न तस्यादिर्न तस्यान्तः मध्ये यस्तस्य तिष्ठति।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जनासि तद्वद।।
उत्तर- नयनम
३.भोजनम् न खादति पिबति न जलम्।
निरन्तरम् चलति बोधयति च समयं।।
उत्तर- घटिका
४.वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणि।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी, जलं च बिभ्रन् न घटः न मेघः।।
उत्तर- नारिकेलं (नारियल)
५.अपदो दूरगामी च, साक्षरः न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यः जानाति सः पण्डितः।।
उत्तर- कलमं
६.धरायाः उपरि, अधः अपि वसति।
धूम्रः भूत्वा गगने इतस्ततः भ्रमति।।
उत्तर- मेघ (बादल)

–शिवांगी मालिक
अष्टमी 'अ'

संस्कृत चुटकला

- अध्यापकः- रमेश! मम मानचित्रे गंगानदीं निर्मितु शक्ये।
  रमेशः- श्रीमान्! मानचित्रे जलमोचनेन मानचित्रं आर्द्रम् भविष्यति।

- शिक्षकः- गणेश! श्वः''गौ तृणं चरन्ती'' इत्यस्याः चित्रनिर्माणं कृत्वा आनय।(अग्रिमे दिवसे) गणेश! मया त्वां गत दिवसे चित्र निर्माण कृत्वा आनेतुं कथ्यते स्म कि चित्रं निर्माय आनयसि?
  गणेशः- श्रीमान् अहं मित्रं निर्माणं कुर्वन् एवं आसीत् यत् गौ तृणं खादित्वा अगच्छत्।

- साधु- (बालकम्) भिक्षाम् देहि(बालकः शिक्षाम् आनीय आगच्छति)
  साधु- अहं प्रसन्नोऽस्मि। याचताम् यत् किमपि इच्छसि?
  बालकः- मम रूप्यकाणि पुनः ददातु?

- एक पुरुष- (ऑटो चालकं प्रति) भ्राता! कति रूप्यकाणि अभवत्?
  ऑटोचालकः- श्रीमान् त्रिशत् रूप्यकाणि।
  पुरुषः- गृह्णातु पञ्चाशत् रूप्यकाणि।
  ऑटो चालाकः- श्रीमान् इदं तु न उचितम्।
  पुरुषः- अरे! इदं तु उचितमेव त्वमपि ऑटो याने स्थित्वा आगच्छसि अतः अर्धभागं त्वया दातव्यम्।

–प्राची पाल
अष्टमी 'अ'

हास्य चुटिका

- अध्यापकः (छात्रान् प्रति) भो छात्राः! स्वर्ण कुत्र लभ्यते एकः छात्रः
  श्रीमान्! मम मातुः पेटिकायाम्।
- प्रथम मित्रम्– भो मित्र? तव पिता किं कार्य करोति?
  द्वितीय मित्रम्– जनेषु सुखं– दुखं च वितरति।
- प्रथम मित्रम्– किं सः ईश्वरः अस्ति?
  द्वितीय मित्रम्– नहि सः पत्रवाहकः अस्ति?

- कक्षायां शान्ति किमर्थं नास्ति।
  छात्रः– श्रीमान् शान्तितु अद्य अनुपस्थिताः अस्ति।
- अध्यापकः– किं मम प्रश्न तु कठिनं अस्ति।
  छात्रः– न किन्तु उत्तरम् अतीव कठिनं अस्ति।

–कावेरी
अष्टमी 'ब'

भारत देशः

भारतं एशिया महाद्वीपे दक्षिणं एक महत्वपूर्ण देशः अस्ति। अस्य जनसंख्या १२५ कोटि। एतद् विश्वस्य विशालः गणतंत्रदेशः। अस्माकं भाषाः शताधिकाः भारतवर्षस्य उत्तरदिशि पर्वतराजः हिमालयः अस्ति। दक्षिणे सिन्धु महासागरः अस्ति। भारतस्य उत्तरे नेपाल, तिब्बत, चीन च देशाः सन्ति। पश्चिमे पाकिस्तान, अफगानिस्तान च देशाः सन्ति। पुर्वे बर्मा एवं दक्षिणे श्रीलंका, मालदीव च देशाः सन्ति। कृष्णद्वीप निकोबार च निकटः इंडोनेशिया, थाईलैंड च देशाः सन्ति। भारतस्य राजधानी दिल्ली अस्ति।

–दिव्यांशी
षष्ठी 'ब'

अनमोल वचनानि

भंयकरं वस्तुः पापम् भयम्
परम रोगं
परम शूरवीरता आत्मविश्वास
धर्मः सत्यं तपः
निस्वार्थ सेवा उत्तमः भक्ति
दश अंगुल्शः परमं मित्रं
जीवनस्य सम्पत्तिः।

–कनक
षष्ठी 'द'

समय

समयः निरंतरं चलति न कदापि सुस्थः भवति,
यः अस्य पालनं करोति,
सः एवं सर्वदा उत्तमं फलं प्राप्नोति
अस्य एक-एक क्षणं मूल्यवान अस्ति,
अयं कस्यापि प्रतीक्षां न करोति,
न अयं कस्यापि मित्रं,
न अयं कस्यापि रिपुः,
न अस्य कोऽपि गुरूः।
यदि अस्य कोऽपि दुरूपयोगः करोति,
सः कदापि प्रगाति न कर्तुम् शक्नोतिः,
अयं जीवनस्य आधारः अस्ति,
अयमेव जीवनस्य सारः अस्ति।

–अनन्या रस्तोगी
षष्ठी 'द'

संस्कृत प्रार्थना

वक्र तुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभः।
निर्विघ्न कुरू मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा।।

भावार्थः– हे हाथी के जैसे विशालकाय जिसका तेज सूर्य की किरणों के सामान हैं। बिना विघ्न के मेरा कार्य पूर्ण हो और सदा ही मेरे लिए शुभ हो ऐसी कामना करते हैं।

शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपदः।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपजोतिर्नामोस्तुते।।

भावार्थः– ऐसे देवता को प्रणाम करती हूँ, जो कल्याण करता है, रोग मुक्त रखता है, धन सम्पदा देता हैं, जो विपरीत बुद्धि का नाश करके मुझे सद् मार्ग दिखाता हैं, ऐसी दिव्य ज्योति को मेरा परम नमस्कार हो।

आदित्यनमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने–दिने
दीर्घ आयुर्बलं वीर्य तेजस तेषां च जायत।
अकालमृत्युहरणम् सर्वव्याधिविनाशम
सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धरायाम्यहम।।

भावार्थः– भगवान सूर्य को नमस्कार जिस तरह वह बढ़ रहे हैं दिन का आरम्भ हो रहा है जिसका तेज, शक्ति को दीर्घ आयु प्राप्त है जिसे मृत्यु पर विजय प्राप्त है, जो सभी की रक्षा करता है ऐसे सूर्य देवता के चरणों में समस्त तीर्थ का सुख है।

सूर्य संवेदना पुष्पेः, दीप्ति कारुण्यगंधने।
लब्ध्वा शुभम् नववर्षेऽस्मिन् कुर्यात्सर्वस्य मंगलम्।।

भावार्थः– जिस तरह सूर्य प्रकाश देता है, पुष्प देता है, संवेदना देता है उसी तरह यह नव वर्ष हमें हर पल ज्ञान दे और हमारा हर दिन, हर पल मंगलमय हो।

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।।

भावार्थः– ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को मेरा नमस्कार, वर दायिनी माँ भगवती को मेरा प्रणाम। अपनी विद्या आरम्भ करने से पूर्व आपका नमन करता हूँ, मुझ पर अपनी सिद्धि की कृपा बनाये रखें।

या देवी सर्वभूतेषुः शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

भावार्थः– देवी सभी जगह व्याप्त है जिसमे सम्पूर्ण जगत की शक्ति निहित है ऐसी माँ भगवती को मेरा प्रणाम, मेरा प्रणाम, मेरा प्रणाम।

या कुंदेंदुतुषारहार धवला, या शुभ्र वस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमंडितकरा, या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा

भावार्थः– जो विद्या देवी कुंद के पुष्प, शीतल चन्द्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह श्वेत वर्ण की है और जिन्होंने श्वेत वर्ण के वस्त्र धारण किये हुए है, जिनके हाथ में वीणा शोभायमान है और जो श्वेत कमल पर विराजित हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश और सभी देवता जिनकी नित्य वन्दना करते हैं वही अज्ञान के अन्धकार को दूर करने वाली माँ भगवती हमारी रक्षा करें।

–निहारिका गौतम
षष्ठी 'ब'

विद्यार्थी जीवन विषयक श्लोकाः

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्रोति धनात् धर्म ततः सुखम्।।

भावार्थः- विद्या से विनय अर्थात विवेक व नम्रता मिलती है, विनय से मनुष्य को पात्रता मिलती है यानी पद की योग्यता मिलती है। वहीं, पात्रता व्यक्ति को धन देती है। धन फिर धर्म की ओर व्यक्ति को बढ़ाता और धर्म से सुख मिलता है। इस मतलब यह हुआ कि जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए विद्या ही मूल आधार है।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विधा यशोबलम्।।

भावार्थः- बड़े-बुजुर्गो का अभिवादन अर्थात नमस्कार करने वाले और बुजुर्गो की सेवा करने वालों की 4 चीजें हमेशा बढ़ती हैं। ये 4 चीजें हैं- आयु, विद्या, यश और बल। इसी वजह से हमेशा वृद्ध और स्वयं से बड़े लोगों की सेवा व सम्मान करना चाहिए।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

भावार्थः- महज इच्छा रखने भर से कोई कार्य पूरा नहीं होता, बल्कि उसके लिए उद्यम अर्थात मेहनत करना जरूरी होता है। ठीक उसी तरह जैसे शेर के मुँह में सोते हुए हिरण खुद-ब-खुद नहीं आ जाता, बल्कि उसे शिकार करने के लिए परिश्रम करना होता है।

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधुनामेक्रूपता।।

भावार्थः- साधु यानी अच्छे व्यक्ति के मन में जो होता है, वो वही बात करता है। वचन में जो होता है यानी जैसा बोलता है, वैसा ही करता है। इसके मन, वचन और कर्म में हमेशा ही एकरूपता व समानता होती है। इसी को अच्छे व्यक्ति की पहचान माना जाता है।

न चौरहार्य न राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।

भावार्थः- एक ऐसा धन जिसे न चोर चुराकर ले जा सकता है, न ही राजा छीन सकता है, जिसका न भाइयों में बंटवारा हो सकता है, जिसे न संभालना मुश्किल न भारी होता है और जो अधिक खर्च करने पर बढ़ता है, वो विद्या है। यह सभी धनों में से सर्वश्रेष्ठ धन है।

षड् दोषाः पुरूषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तद्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

भावार्थः- 6 अवगुण मनुष्य के लिए पतन की वजह बनते हैं। ये अवगुण हैं, नींद, तन्द्रा (थकान), भय, गुस्सा, आलस्य और कार्य को टालने की आदत।

काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं।।

भावार्थः- एक विद्यार्थी के पाँच लक्षण होते हैं। कौवे की तरह हमेशा कुछ नया जानने की प्रबल इच्छा। बगुले की तरह ध्यान व एकाग्रता। कुत्ते की जैसी नींद, जो एक आहट में भी खुल जाए। अल्पाहारी मतलब आवश्यकतानुसार खाने वाला और गृह-त्यागी।

रूप यौवन सम्पन्नाः विशाल कुल सम्भवाः।
विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धाः इव किंशुकाः।।

भावार्थः- अच्छा रूप, युवावस्था और उच्च कुल में जन्म लेने मात्र से कुछ नहीं होता। अगर व्यक्ति विद्याहीन हो, तो वह पलाश के फूल के समान हो जाता है, जो दिखता तो सुन्दर है, लेकिन उसमें कोई खुशबू नहीं होती। अर्थात मनुष्य की असली खुशबू व पहचान विद्या व ज्ञान ही है।

मूर्खस्य पञ्च चिह्नानि गर्वो दुर्वचनं मुखे।
हठी चैव विषादी च परोक्तं नैव मन्यते।।

भावार्थः- इस श्लोक में कहा गया है कि मूर्खो की पाँच पहचान होती हैं। सबसे पहला अंहकारी होना, दूसरा हमेशा कड़वी बात करना, तीसरी पहचान जिद्दी होना, चौथा हर समय बुरी-सी शक्ल बनाए रखना और पाँचवां दूसरों का कहना न मानना। श्लोक इन सभी पाँच चीजों से बचने की प्रेरणा देता है।

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यालंकृतो सन्।
मणिना भूषितो सर्पः किमसौ न भयंकरः।।

भावार्थः- दुर्जन अर्थात दुष्ट लोग भी अगर बुद्धिमान हों और विद्या प्राप्त कर लें, तो भी उनका परित्याग कर देना चाहिए। जैसे मणि युक्त सांप भी भंयकर होता है। इसका मतलब यह हुआ कि दुष्ट लोग कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों, उनकी संगत नहीं करनी चाहिए।

नीति श्लोकाः

देवो रुष्टे गुरुस्त्राता गुरो रुष्टे न कश्चनः।
गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशयः।।

भावार्थः- देवताओं के रूठ जाने पर गुरू रक्षा करते हैं, किन्तु गुरू रूठ जाए, तो उस व्यक्ति के पास कोई नहीं होता। गुरू ही रक्षा करते हैं, गुरू ही रक्षा करते हैं, गुरू ही रक्षा करते हैं, इनमें कोई संदेह नहीं। इसका मतलब यह है कि अगर पूरा विश्व व भाग्य भी किसी से विमुख हो जाए, तो गुरू की कृपा से सब ठीक हो सकता है। गुरू सभी मुश्किलों को दूर कर सकते हैं, लेकिन अगर गुरू ही नाराज हो जाए, तो कोई अन्य व्यक्ति मदद नहीं कर सकता।

अनादरो विलम्बश्च वैमुख्यम निष्ठुर वचनम।
पश्चतपश्च पश्चापि दानस्य दूषणानि च।।

भावार्थः- अपमान व अनादर के भाव से दान देना, देर से दान देना, मुँह फेरकर दान देना, कठोर व कटु वचन बोलकर दान देना और दान देने के बाद पछतावा करना। ये सभी पाँच बातें दान को पूरी तरह दूषित कर देती हैं।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

भावार्थः- छोटे चित यानी छोटे मन वाले लोग हमेशा यही गिनते रहते हैं कि यह मेरा है, वह उसका है, लेकिन उदारचित्त अर्थात बड़े मन वाले लोग संपूर्ण धरती को अपने परिवार के समान मानते हैं।

सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

भावार्थः- हमेशा प्रिय और मन को अच्छा लगने वाले बोल बोलने वाले लोग आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन जो आपके हित के बारे में बोले और अप्रिय वचन बोल व सुन सके, ऐसे लोग मिलना दुर्लभ है।

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

भावार्थः- सभी 18 पुराणों में महर्षि वेदव्यास जी ने दो विशेष बातें कही हैं। पहली बात तो यह है कि परोपकार करना पुण्य है और दूसरी बात लोगों को दुःख देना पाप हैं।

-गुनगुन शर्मा
नवमी 'ब'

मम विद्यालयः

मम विद्यालयस्य नाम केन्द्रीयः विद्यालयः अस्ति। एषः विद्यालयः नगरस्य एकस्मिन सुरम्ये सीले स्थितमस्ति। अत्र सप्ततिः (54) शिक्षकः-शिक्षिकाः च पाठयन्ति। अत्र सप्तदशशतमधिकं (1900) छात्राः पठन्ति। विद्यालये एकं सुन्दरं उद्यानं अस्ति। यत्र मनोहाणि पुष्पाणि विकसन्ति। मम विद्यालये एकः पुस्तकालयः अपि अस्ति। यत्र छात्राः पुस्तकानि पठन्ति। मम विद्यालये एका विज्ञान प्रयोगशाला, एका गणित प्रयोगशाला च अस्ति । विद्यालये त्रयः संगणककक्षाः अपि सन्ति। शिक्षायाः क्षेत्रे मम विद्यालयः सम्पूर्णनगरे प्रसिद्धः अस्ति। मम विद्यालयस्य सर्वे अध्यापकाः शिक्षायाम् अतीव निपुणाः, योग्याः च सन्ति। विद्यालये प्रतिसप्ताहे बालसभा अपि आयोज्यते। प्रतिवर्षेवार्षिकोत्सवः अपि आयोज्यते। क्रीड़यायाः क्षेत्रे अपि मम विद्यालयस्य प्रमुखं स्थानं अस्ति। अहम् आत्मनं गर्वितः, भाग्यशाली च अनुभवामि यत् अहम् अस्मिन् अत्युत्तमे विद्यालये पठामि ।.....

-वंशिका नेगी
नवमी 'ब'

माँ

माँ, माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार,
न त्वया सदृश्य कस्याः,
करुणा-ममतायाः त्वम् मूर्ति,
न कोऽपि कर्त्तुम् शक्नोति तव क्षतिपूर्ति।
तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति,
'माँ' शब्दस्य महिमा अपार,
न माँ सदृश्य कस्याः प्यार,
माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार।

-प्राची पाल
अष्टमी 'अ'

किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम्

एकस्मिन् ग्राम एक महिला वसति स्म। सा एकं नकुलं पालयति स्म। नकुलस्य विषये तस्याः बहुप्रीतिः आसीत्। महिलायाः एकः शिशुः अपि आसीत्। तस्याः गृहस्य समीपे जलं न आसीत्। जलम् आनेतुं सा दूरं गच्छति स्म। एकस्मिन् दिने जलम् आनेतुं सा अगच्छत्। गृहे कोऽपि न आसीत्। तस्याः शिशुः निद्रितः आसीत्। महिला बहिः गता। तदा एकः सर्पः गृहम् आगतः। नकुलः सर्पम् अपश्यत्। सर्पः शिशुसमीपम् अगच्छत्। नकुलः तत्क्षणे एव सर्पस्य उपरि अपतत्। क्षणमात्रेण एव सः सर्पम् अमारयत्। महिला जलं गृहीत्वा आगता। नकुलस्य मुखं रक्तमयम्। सा अचिन्तयत् अयं नकुलं मम शिशुम् अखादत्। अतः एव अस्य मुखं र क्तम्। सा तत्क्षणे एव एकं शिलाखण्डं नकुलस्य उपरि अक्षिपत्। नकुलः मृतः। अनन्तरं सा गृहस्य अन्तः गता। तत्र शिशुः क्रीडति। तत्रैव मृतं सर्पम् अपश्यत्। सा बहु दुःखिता अभवत्। अविचारेण मया नकुलः .....

-लवी
अष्टमी 'अ'

जय वृक्ष! जय वृक्ष

श्रूयताम् सर्वे वृक्षपुराणम्,
क्रियताम् तथा वृक्षारोपणम्।
वृक्षस्यास्ति सुन्दरम् याति मूलं बहुदूरम्।।
मूलेपी अन्नम्, तस्य काष्ठं कठिनम्,
काष्ठं कठिनं भवति इन्धनार्थम्।
पर्णेषु भवति हरितद्रव्यम्,
अतो हि अस्ति रे पर्ण हरितम्।।
पुष्पम् सुन्दरम्, अतीव मोहकम्,
पुष्पम् तस्य भवति रे देवपूजार्थम्।
फलम् रसमयं, तस्य फलं स्वादपूर्णम्,
फलम् हि अस्ति रे खगस्य अन्नम्।।
जलवातप्रकाशैः निर्माति अन्नम्,
तेन हि अन्नेन वर्धते नित्यम्।
वृक्षस्य दृश्यताम् सर्वम् हि कार्यम्,
जीवनं तस्यास्ति परोपकारार्थम्।।
वृक्षे हि कुर्वन्ति विहगाः नीडम्,
केचित् तु कुर्वन्ति काष्ठे हि छिद्रम्।
आतपे तिष्ठति वर्षानुवर्षम्,
अन्येषां करोति छायाप्रदानम्।।
वृक्षो नैव अत्ति रे स्वकीयं फलम्,
सर्वम् हि अंगम् तस्य लोकहितार्थम्।
जनाः न स्मरन्ति तस्य उपकारम्,
बहुधा कुर्वन्ति वृक्ष.....

-विधि जैन
सप्तमी 'अ'

कः किम् कर्त्तुम् न शक्तः

अन्धः किमपि न द्रष्टुम् शक्तः
पंगुः क्वापि प चलितुम् शक्तः।
मूकः किमपि न वक्तुम् शक्तः
बधिरः श्रोतुम् भवत्यशक्तः।।
मूढः बोद्धूम् न भवति शक्तः
न चापि भीरुः याद्धूम् शक्तः।
शयने रोगी भावत्य शक्तः
दीनः किमपि न दातुम् शक्तः।।
वृद्धः न भारं वोदुम् शक्तः
ईर्ष्युः कमपि न सोदुम् शक्तः।
नैव धावितुम् सोदुम् स्थूलः शक्तः
लोभी शान्त्या स्वपितुम शक्तः।।
अलसः मूर्खः निद्रायुक्तः
कार्यम् किमपि न कर्तुम शक्तः।
सदैव मिथ्याचरणे शक्तः
नैव स सत्यं द्रष्टुम् शक्तः।।

-प्रत्युष रथ
अष्टमी 'अ'

श्लोकाः

- तमसो मा ज्योतिर्गमय।
  अर्थ- अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये।
- वसुधैव कुटुंबकम्।
  अर्थ- पृथ्वी के सभी वासी एक परिवार है।
- परोपकाराय सतां विभूतयः।
  अर्थ- सज्जनों की विभूति हमेशा परोपकार के लिए होती है।
- विद्या विहीनः पशु।
  अर्थ- विद्याविहीन (विद्या को ग्रहण ना करने वाला) मनुष्य पशु के समान होता है।
- आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महानरिपुः।
  अर्थ- आलस्य घोर शत्रु है।
- अहिंसा परमो धर्मः।
  अर्थ- अहिंसा ही सबसे बड़ा (परम) धर्म होता है।
- मा कश्चिद् दुख भाग्भवेत।
  अर्थ- कोई दुःखी न हो अर्थात सभी सुखी रहे।
- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
  अर्थ- हमारी जन्मस्थली स्वर्ग से भी बड़ी होती है।
- नास्तिको वेदनिन्दकः।
  अर्थ- वेदों की निन्दा करने वाला इंसान नास्तिक होता है।
- मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।
  अर्थ- किसी दूसरे के धन का लोभ नहीं करना चाहिए।
- योगः कर्मसु कौशलम्।
  अर्थ- समत्वरूप योग ही कर्मबंधन से छूटने का उपाय है।
- सहसा विदधीत न क्रियाम्।
  अर्थ- कार्य को बिना विचारे नहीं करना चाहिए।
- अशांतस्य कुतः सुंखम्।
  अर्थ- अशांत व्यक्ति को कभी सुख नहीं मिल सकता है।
- अनुलङ्घनीयः सदाचारः।
  अर्थ- सदाचार का कभी उल्लङ्घन नहीं करना।
- अनतिक्रमणीया नियतिरिति।
  अर्थ- नियति को कोई नहीं टाल सकता।
- अत्यादरः शंकनीयः।
  अर्थ- अत्यधिक आदर करना शंका पैदा करता है।
- ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः।
  अर्थ- शार्ङ्गरव कहता है- भगवान् प्रिय व्यक्ति का हमेशा साथ
- देना चाहिए।
  गरीयषी गुरोः आज्ञा।
  अर्थ- गुरूजनों की आज्ञा महान् होती है, उनका पालन करना चाहिए।

-अंशिका चौधरी
षष्ठी 'द'

English Section

LIFE

Life is an opportunity, avail it
Life is a beauty, admire it
Life is a dream, realize it
Life is a challenge, meet it
Life is a duty, complete it
Life is a game, play it
Life is a promise, fulfil it
Life is a sorrow, overcome it
Life is a song, sing it
Life is a struggle, accept it
Life is a tragedy, confront it
Life is an adventure, dare it
Life is a luck, make it
Life is too precious, do not destroy it
Life is life, enjoy it.

–Prachi Tyagi
IX 'D'

My Motherland

The land of diversity
The land of various ethinicity
But united by one colour
That's my Motherland.
From Kashmir to Kanyakumari
From Arunachal Pradesh to Gujarat
Different languages different culture
Bonded as one nation
Our history of the freedom fighter
And their sacrifices
Always be remembered.
The Himalayas wear a crown
Give birth to the greatest rivers
Flow on with one colour
To meet Arabian sea and Bay of Bengal
And that's my motherland.

–Sonal
VIII 'B'

Say No to Plastic

- Plastic has become a serious ecological threat to humanity.
- Allmost 74 countries have called a ban on the use of plastic bags, and 34 states impose a charge per pack.
- In India, the P. M. has called a nation wide ban on single-use plastic product, especially plastic bottles, plastic cup and plastic bags.
- Despite the ban of plastic that weight under 50 micron in India, a large part of our India ecosystem is still under threat.
- Around one trillion plastic bags are consumed by the people of the world. Seas and oceans have become dangerously polluted with plastic bags.

–Manvi Singh
XII 'C'

Waste and Pollution

We all need to
reduce our waste
Let's do it now,
with plenty of haste.
It's also important,
for us to reuse,
If we are really lucky,
We'll be on the news.
Global warming,
and greenhouse gases,
to see the harm,
you don't need glasses.
As a team,
we'll reduce pollution,
Caring is
the first solution.

–Dipali
VIII 'B'

EASY TO SAY

Easy is to judge the mistakes of others,
Difficult is to recognize our own mistakes.

Easy is to hurt someone who loves you,
Difficult is to heal the wound.

Easy is to set rules,
Difficult is to follow them.

Easy is to dream every night,
Difficult is to fight for a dream.

Easy is to say we love,
Difficult is to show it every day.

Easy is to make mistakes,
Difficult is to learn from them.

–Divyank
XII 'B'

Why Is The School Magazine Important

The school and college's Magazines are useful in many ways. They have a great educative value. They encourage students to think and write. So they develop their writing skills and talent These magazines are a mean of bringing the ex-students and all the members closer. In schools and colleges, students are taught to read books and to acquire knowledge from the works of great authors. But the reading of books is not sufficient for education so, the students are also taught how to write and express their own ideas in a good from and in different languages. Here, the magazine serves a good purpose.

–Shrishti
VIII 'C'

Importance of School Magazine

School magazines give the talented writers an opportunity to feel intently, observe keenly, think deeply and thereby express themselves in a distinct way. The school magazine plays a very important role in an educational institution as it channelizes the budding talented writers and helps in encouraging their writing skills by appraisal which inspire and motivate them to read and write much more. It helps them to improve their reading and writing skills to a great extent. It even helps them in providing possible opportunities to improve their creative and imaginary writings. Students are given a chance to write and express their own ideas in a good form and in different languages through these magazines. These magazines contain a number of articles, poems, stories and plays as well that are written mainly by the students and sometimes by teachers and ex- students as well. In fact, the young talented writers find their first exposure through this specific medium only. Magazines also help them in developing their power of thinking and strengthen their imagination as well.

–Divyank
XII 'B'

Why God Made Teacher

When God Created Teachers,
He gave us Special friends
To help us to understand His world
And truly comprehend
The beauty and the wonder
Of everything we see,
And become a better person
With each discovery.

When God created Teachers,
He gave us special guides
To show us ways in which to grow
So we can all decide
How to live and what to do
What's right instead of wrong,
To lead us so that we can lead
and learn how to be strong.

Why God Created Teachers,
In his wisdom and his grace,
Was to help us and to learn how to make our world
A better and wiser place.

–Bhumika Chauhan
IX 'A'

Open A Book

Open a book
And you will find
People and places of every kind.

Open a book
And you can be,
Anything you want to be.

Open a book
And you can share
Wondrous words you find in there.

Open a book
And I will too,
you read to me
And I'll read to you.

–Vaishnavi Teotia
VIII 'B'

My Family

When I was just a little child,
I began to see,
I had a special family,
Who is always there for me.

A family that stands by you,
No matter what you've done;
Who picks you up and dries your tears.
And point you to the sun.

A family that laughs with you,
And helps you see the good.
A family that will love you,
More than you thought you could.

Since I was just a child,
I' ve been so much blessed,
To have a special family,
You simply are the best.

–Kaneeka
VIII 'B'

The Best Mom In The World

You make me feel loved,
You always cheer me up.
Some times I get angry,
But still you are my butter cup.

You always keep me company,
With you I'm always happy.
You are always helping me,
And you give me bravery.

Mom you are the best mom in the world,
And I love you more than the world.
You make me joyful,
And you are very beautiful.

–Narender Chautala
VIII 'D'

KEEPING UP WITH LIFE

It's day someday,
someday it's night...
so difficult it is...
Keeping up with life.

Life takes wild turns,
It goes up and down,
You ride by yourself,
You'r alone in the town.

You are never the same,
Once you turn the page!
And you are never free,
You keep changing the cage!

Everything keeps moving,
Life is not so stable,
Life spares no one,
Even if you duck under same table!

Everyday is a story,
Everyday is a fight,
I fall, I trip,
but still,
I'm keeping up with life!

–Princess Shivangi Verma
XII 'C'

You are Best

If you always try your best
Then you'll never have to wonder
About what you could have done
If you'd summoned all your thunder.
And if your best
Was not as good
As you hoped it would be,
You still cold say,
"I gave today
All that I had in me".

–Narender Chautala
VIII 'D'

How Music Helps To Heal People?

Music has a different ability to play with the state of mind. The base of the music is its rhythm, pitch, texture, timbre and dynamics. It is not of only one instead it can be used in different circumstances and purposes. Music has a different effect on the human body, sometimes it makes people happy, sometimes sad and emotional. It also improves the cognitive abilities of a person. Hearing a song or playing an instrument produces a neural connection that almost affect all the areas of brain. Scientists claim that music has extreme power to heal human beings. It affects directly the heart and mind including other organs in a way to help patients with circulatory condition. Music includes a continuous, dynamic and, to some extent, predictable change in the cardiovascular system. Music provides peace to the inner soul of a person.

–Manvi Singh
XII 'C'

Six Ethics of life

Before you pray-Believe.
Before you speak-Listen.
Before you spend-Earn.
Before you write-Think.
Before you quit-Try.
Before you die-Live.

–Tushal Singh
X 'D'

Discrimination With Girls

Girls are equally as important as boys in the society to maintain the social equilibrium. Few years ago, there was huge reduction in the number of women in comparison to the man. It was so because of the increasing crimes against women such as female foeticide, dowry deaths, rape, poverty, illiteracy, gender discrimination and many more. To equalize the number of women in the society, it is necessary to aware people to save girl child. Such positive steps are taken by the government of India for the protection of women from domestic violence ban of female infanticide, immoral traffic (prevention) act, proper education, gender equality, etc. The girl child is not treated properly in the family. People still prefer the birth of a boy rather than a girl. The girl child is basically trained for household work only. Even today, female infanticide is a common social evil.

–Anjali
X 'A'

Every Thing Mom

How did you find the energy, Mom
To do all the things you did,
To be teacher, nurse and counselor
To me, When I was a kid.

How did you do it all, Mom,
Be a chauffeur, cook and friend,
Yet find time to be a playmate,
I just can't comprehend.

I see now it was love, Mom
That made you come whenever I'd call,
Your inexhaustible love, Mom
And I thank you for it all.

–Vansh Kumar
IX 'A'

MOTHER

" You are in my life
Like an angel from heaven".
" Everybody left me alone,
But you didn't leave for a second even".
" You allowed me to sleep on your lap,
Without thinking about others".
" This is the reason why,
I started loving you more than ever".

" You scolded everybody mother,
But didn't scold me".
" This is the reason why,
My brother and sister were jealous of me".
" Whenever I think about my childhood,
My eyes filled with tears.
" For all the things you did for me,
In these past years".

–Tushal Singh
X 'D'

LIFE

Have you ever driven down a road?
Just to drive with no destination in mind
The road seems to go on and on with
no stopping point.

Life is like that long road going on and on
Not knowing when its going to end.
But still you strive for another tomorrow
Hoping that in the long run every thing will
turn out alright just like the road though-
It must come to an end.

–Sujal Sonkar
XII 'B'

A Visit To Statue Of Unity

Summer vacation brings rest after a long journey to clear the annual exams of a class and then to initiate a new journey in a new class. As soon as the summer vacation starts, everyone plans for a visit to some restful, peaceful as well as joyful place. In search of all these, I got an opportunity to visit the world's tallest statue located in Gujrat- The STATUE OF UNITY, a colossal statue of the ironman of India- Sardar Vallabh Bhai Patel.

I first reached Mumbai by air and from there by train, I proceeded to Kevadia, now renamed Ekta Nagar. From the first floor of the railway station the huge statue was quite visible. We started for the place and reached Bharat Nagar. After taking entry ticket through tourist bus we were taken ahead. The Vindhyachal hills and the Narmeda river provided good scenic beauty to the way. As soon as I dropped down from the bus, I was thrilled to view such a grand statue. The pathway, gardens and stairs everything was a source of attraction and finally. I reached near the statue. Through the lift, we got an opportunity to reach upto the chest of the statue. The 182 metres high statue, made of iron with fine carving on it acquaint us to the great architectural skill of our Indian engineers and workers. The place has a musseum highlighting life and adventure of Sardar Patel. The place also familiarises the tourists to the wildlife and lifestyle of the people of Gujrat. It has a children corner where children can enjoy some interesting activities. The reading of unity pledge and wall of heroes fill every visitor with a sense of patriotism. To view Sardar Sarovar Dam from the place is also a wonderful experience. The enchantment for the place is inreased by the light and sound show that starts after the sun sets. The heat waves turns into soft soothing breeze and on the Statue Of Unity, through the colourful laser lights, the biography. achievements, great power of Sardar Patel to work for farmers and common folk are sreened amazinghy. At last when at the end of the show, people stands for the national anthem, there are goosebumps in the body and a feeling to salute the iron man as well as Bharat Varsh arises itself. In a nut shell, the visit to the STATUE OF UNITY is one of the best journeys of my life till date.

–Aaradhya Kapoor
VIII 'D'

Mathematics And Cricket

Mathematics is a kind of cricket consisting of eleven players:

M - The opening player is memory, very important in both cricket and Mathematics.
A - Accuracy, the captain of the team.
T - Talent, an important quality of a player and Mathematics.
H - Hard work, for cricket keeper and students and the people who know it.
E - Enthusiasm, the game must be kept alive as well as lesson.
M - Maximum, try to make maximum score of number or runs.
A - Attention, essential in both the things.
T - Tact, helps in winning the match or solving the sum.
I - Intelligence, by it we get runs, wickets good marks and glory.
C - Cleverness, in stealing single and beat in the rival of Mathematician.
S - Smiles for the winners or the lossers.

–Daksh Kumar Kori
X 'C'

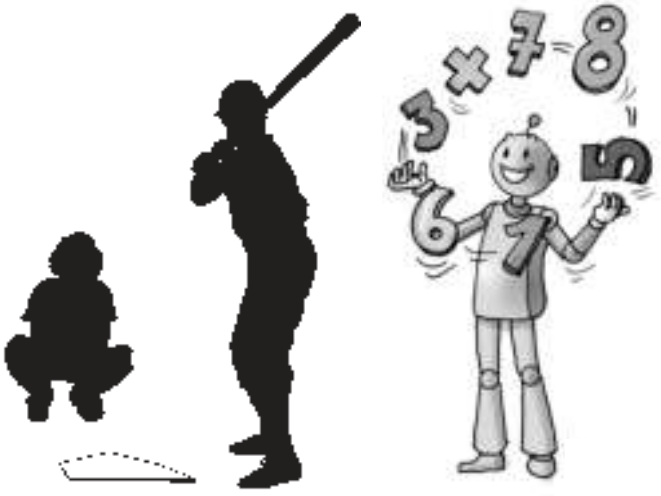

Riddles

1 - I am full of holes ; I can hold water. what am I?
– Sponge.

2 - What gets wet when drying?
– Towel.
3 - What are two things people never eat before breakfast?
– Lunch and Dinner.
4 - What is it the more you take away the larger it becomes?
– Hole.
5 - What has two hands and a face, but no arms and legs?

– Clock.
6 - What can't be used until it's broken?
– Egg.

7 - What has 4 legs and only 1 foot?
– Bed.
8 - What has many keys but can't open any door.
– Piano.

–Tushal Singh
X 'D'

Let's have fun

A person goes to the doctor with his 5 year son.

Person - Doctor my son has swallow a key? So we come to you.

Doctor - When did he swallow a key?
Person - 10 days back.
Doctor - And you are coming to me now after 10 days, why?
Person - We had a duplicate key but today it is lost.

–Tushal Singh
X 'D'

Each Day Is A Chance

1. Each day we wake up
   We have another chance
   We could just keep on moving
   Or we could decide to dance.
2. Dance if you are alone,
   And no one will ever see
   As this is your chance
   To see what you could be.

3. Remind yourself if you are someone
   Some one who can do anything,
   Believe you can do anything,
   Get up and take a stand.
4. Always keep looking forward
   Looking back is never good
   You want to look at the future
   And that is something you should.

–Susal Sonkar
XII 'B'

I And My Shadow

Days passed by,
I was waiting for them!
In the dark I used to cry,
They promised they would come...
I was pathetic,
Crying day and night...
Everything made me sick,
I wanted them to end 'my' fight!
Why would they leave me?
They promised they would never !
My situation could they not see?
Will they come? Ever?
I cried looking upside...
All I saw was the moonlight...
It was dark, it was night...
But I saw something beside...
It was my own shadow...
it was right there with me!
I sank down to the floor...
Sank down my shadow with me!

–Princess Shivangi Verma
XII 'C'

World Heritage Day

Our cultural and natural heritage are both irreplaceable sources of life and inspiration. 18th April, the day is celebrated as World Heritage Day. It is also known as the International Day for Monuments and sites. The aim behind the day is to promote awareness about the diversity of cultural heritage. It was proposed by the International Council On Monuments and Sites in 1982 was approved by the general assembly of UNESCO in 1983.

At present, there are 40 World Heritage Sites located in India. Out of these, 32 are cultural, 7 are natural and 1 is mixed. India has the 6th largest number of heritage sites in the world.

Some of the World Heritage Sites of India are as follows :

- Ajanta and Ellora caves in Maharashtra
- Taj Mahal in Agra
- Kaziranga National Park in Assam
- Valley of flowers in Uttarakhand
- Bhimbetka rock shelters in Madhya Pradesh
- Pink City Jaipur
- Konark Sun Temple in Odisha
- Red Fort in Delhi
- Sundarban National Park in West Bengal

Traditional Kumbh Mela is also the Heritage Festival.

Last but not the least, Preservation of Heritage Structures is not the sole responsibility of the government nor of any particular government agency but it is the collective responsibility of all the citizens of the nation. So we should contribute to possess & protect all the Heritage sites.

–Yunika
XII 'B'

Birds, Sky And River

The birds are chattering
About us,
About our sweet and sour friendship
The trees are listening to us
From under their nose
They bloom
As we crack another joke
The river is running down the hill,
With the memories that it gathered
The chit- chat we had done
while playing with its water
The sky roars and cries,
When we get into a fight,
And then shows up a rainbow
just after a slight
The birds, the sky and the river are friends
They look empty without one another
So are me and you
And our bond will grow further.

–Princess Shivangi Verma
XII 'C'

Time is like a river

You cannot touch the same water twice. Because the flow that has passed will never pass again. Enjoy every moment of your life.

–Tushal Singh
X 'D'

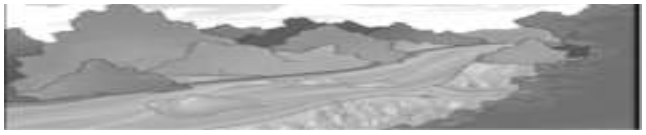

The Elephant Rope

As a man was passing the elephants, he suddenly stopped, confused by the fact that these huge creatures were being held by only a small rope tied to their front leg. No chains, no cages. It was obvious that the elephants could, at any time, break away from their bonds but for some reason, they did not. He saw a trainer nearby and asked why these animals just stood there and made no attempt to get away. "Well,"the trainer said, "When they are very young and much smaller we use the same size rope to tie them and, at that age, it's enough to hold them. As they grow up, they are conditioned to believe they cannot break away. They believe the rope can still hold them, so they never try to break it." The man was amazed. These animals could at any time break free from their bonds but because they believed they couldn't, they were stuck right where they were.

Like the elephants, how many of us go through life hanging onto a belief that we cannot do something, simply because we failed at it once before?

Failure is part of learning; we should never give up the struggle in life.

–Prachi Pal
VIII 'A'

Mother

Mother, my dear mother, Oh!
You love me, more than me!
Are such rhymes rather cheap today?
I write them wholeheartedly

How I wish I would even be
Just crying like a baby
Just on your arms with pain untold
But you wouldn't mistake.

But since today I have been a man
I have much and more to live and sprint
I have loved as much to all I can
But you are my intimate one.

Mother, my dear mother, Oh!
You love me more than me !
Are such rhymes rather cheap today?
I wish them wholeheartedly.

–Tarun Kumar
XI 'A'

School Rule

Come to school just in time,
Go for a prayer in a line,
Don't throw paper in the ground
Give the teacher what is found
Come to school neat and clean
Wish all the teacher whom you meet
Do your homework everyday
In your class you must not play
When you go out of your class
Do not forget to take your pass.
Follow, follow every rule
If you want to study in school.

–Chavi
VIII 'B'

Alice In Wonderland (Summary)

The story centres on Alice, a young girl who falls asleep in a meadow and dreams that she follows the White Rabbit down hole. She has many wondrous, often bizarre adventures with thoroughly illogical and very strange creatures, often changing size unexpectedly (she grows as tall as a house and shrinks to 3 inches [7 cm]). She encounters the hookah smoking Caterpillar, the Duchess (with a baby that becomes a pig), and the Cheshire Cat, and she attends a strange endless tea party with the Mad Hatter and the March Hare. She plays a game of croquet with an unmanageable flamingo for a croquet mallet and uncooperative hedgehogs for croquet balls while the Queen calls for the execution of almost everyone present Later, at the Queen's behest, the Gryphon takes Alice to meet the sobbing Mock Turtle, who describes his education in such subjects as Ambition, Distraction, Uglification and Derision. Alice is then called as a witness in the trial of the Knave of Hearts, who is accused of having stolen the Queen's tarts. However, when the Queen demands that Alice beheaded, Alice realizes that the characters are only a pack of cards, and she than awakens from her dream and finds herself sleeping on her sister's lap. Alice explains all the things she witnessed in her dreams to her sister and both go back to their house to have a sip of fresh tea.

–Lewis Caroll
–Akshay Singh
VIII

Count Wisely

One day, King Akbar asked a question in his court that left everyone in the courtroom puzzled. As they all tried to figure out the answer, Birbal Walked in & asked what the matter was. They repeated the question to him.

The question was, "How many crows are there in the city?" Birbal immediately smiled & went up to Akbar. He announced the answer; he said there were twenty-one thousand, five hundred & twenty-three crows in the city. When asked how he knew the answer, Birbal replied, "Ask your men to count the number of crows. If there are more, the relatives of the crows must be visiting them from nearby cities. If there are fewer, then crows from our city must be visiting their relatives who live outside the city." Pleased with the answer, Akbar presented Birbal with a ruby & pearl chain.

Moral of the story : Having an explanation for your answer is just as important as having an answer.

–Taniya
XI 'C'

Article On Independence Day

Independence Day in India is the most important day for every Indian citizen as our country got freedom from the British rule on that day. We celebrate this day every year on 15th August from 1947. Our country is counted as the world's largest democracy all over the world. India became an independent country on 15th August in 1947 after the contribution of numerable freedom fighters (such as M.K. Gandhi, Bhagat Singh, Netaji Subhash Chandra Bose, Sardar Vallabh Bhai Patel, Dr. Rajendra Prasad, Sukhdev, Lala Lajpat Rai, Chandra Shekhar Azad) etc. Who worked hard to get the independence from the British rule.

The Indian Independence Bill, which was a vital part of journey of freedom, was passed by the British parliament. It was Jawaharlal Nehru who declared India's independence & swore as the first Prime Minister of India.

–Ritika
XI 'C'

Covid Time And Values

Teenage is the age when the ones who no longer come in the category of children are discovering themselves. Ideals and beliefs are building at this time. Teenagers have some heroes in mind which they follow and idealize. They start to develop a strong belief in certain things and sometimes they are adamant about their understandings which they follow. Last years have taught us many things. Students were in the boundaries of their homes but thanks to the technologies and online classes, the world was in their hands. The thought process changed. While the old school students thought of prioritizing their academics newbees thought of more happening careers or side careers. They got swayed by glittering world of glamour. The advices of influencers were found to be more promising and appealing than their own parents. Again coming back to normalcy was challenging for students. Discipline somewhat lost its ground. Overexposure to social media and internet made students less social, less sporty and a little disobeying. Its not that students didn't know what is right or wrong for them but perhaps the love for gadgets was more than any thing else. We saw new normal. Again students were supposed to adapt to the daily routine of school life. Adaptation needs time. Slowly students are adjusting to it but a few are not able to maintain regularity and give excuses of absence. A lame excuse is always caught because lies come with certain body languages and people catch it. Truthfulness is a virtue, by abiding with it, you will never be in loss. A true person is always fearless and has nothing to hide. A false statement is always covered by another false statements and then you even don't remember what you said and at the end you become a liar. Never lie about your health, May you all be blessed with good health. One of the reason for absence of students from school is social engagements of parents. Parents are also requested to kindly prioritise the study and school of their wards.

In our day today teaching when we interact with students during teaching learning processes, certain home assignments are given to students which are sometimes not done. Writing practises of students today are not of the way that used to be during precovid times. A proper home study time table is required to repair the loss of learning. And reading a chapter is also a homework. Dear students do read daily, make it a habit to read something daily and then you will see the positive changes in your daily life and learning. Students you must learn by writing. Retention of knowledge needs small learnings at a time. Mostly the students only study during exams which is a wrong practise. Small learnings should be done over a period of time that is why curriculum is spread over an academic year. When you want to learn anything then read about and understand it and test your knowledge after a time gap, you will have more retention. One more value which one can inculcate in oneself which comes from Sanskrit words अहम ब्रह्मास्मि which means all knowledge lies within us.We know what is right or wrong, we have strong power of Introspection. We must practise introspection or meditation in any testing situation. Then we will behave in righteous manner. This will help you in building strong character. Each and every student wants to be loved, admired and recognized by their parents, teachers and institution or at least all of us want a contentment which will be achieved only by following the values talked about here. So dear students be truthful, make a daily timetable for studying, act just and remember be honest in these. Mark my words - Honesty is still the best policy.

–Sarita Yadav
TGT, Science

SEEMA DARSHAN 2.0 (TRUE SERENDIPITY)

Having been quite a while I escaped the madness of city life, a trip to Ladakh sound exciting. I got the golden opportunity to visit Drass- Kargil under the (Seema Darshan Programme 2.0)

Here the Journey begins.....

As soon as we landed at the Leh airport we were welcomed by the worthy Principal of JNV hostel where we stayed almost 4 days and we were advised to take complete bed rest, due to the harsh climatic conditions of LEH.

First we got a chance to visit Ladakh Scout Regimental Centre : The Ladakh Scout was formed in 1963 by spinning of the Ladakhi battalions of the Militia (Jammu and Kashmir). They were converted into an Army regiment in 2000.

Secondly, we visited Defence Institute Of High Altitude Reasearch(DIHAR) : It is a defence laboratory of the DRDO located in Leh city of Ladakh in india. It conducts research on cold arid agro- animal technologies.

Next, we visited Gurudwara Shri Pathar Sahib : It is the most revered place where Guru Nank Dev Ji, founder of the Sikh religion is believed to have conquered a demon. The boulder with the imprint of the body of Guru Nanak Dev Ji. It is maintained by the Indian Army, and one of the most interesting thing about that Gurudwara is that you can not face opposite to the holy pathar because it seems that you are disrespecting Guru Nanak Sahib Ji.

Next Secmol School : The Students' Educational and Cultural Movement of Ladakh (SECMOL) was founded in 1998 by a group of young Ladakhis with the aim to reform the educational system of Ladakh. I know its not so interesting but what if I tell you that this school is founded by none other than Mr. Sonam Wangchuk the real life man, who inspired the real life characterization of Phunsukh Wangdu the character which is played by great actor Mr. Aamir Khan in movie 3 idiots.

Last but not the least, we got a great chance to visit the Drass- Kargil War Memorial : The Kargil War Memorial which was constructed in November 2004, in memory of Indian soldiers, who made supreme sacrifice during operation VIJAY in 1999. The memorial was constructed at this location as some of the bloodiest battles were fought in Drass sector. The location also provides a view of some of the peaks where pakistan army had intruded, like Tiger hill, Tololing hill and Batra top. I know that visiting a war memorial is itself a great opportunity but believe me the aura of that place is something else which cannot be explained in words. The great wall of fame where all the names of great soilders were inscribed, literally stepping on that land evokes the feeling of nationality in one self, and trust me its orth visiting ones in a life time.

I am grateful after experiencing all the environment in Drass-Karagil and sharing it with you all. Lastly I would thank all the people from bottom of my heart and gratitude toword Respected Principal Sir and teachers for giving me an opportunity for this interesting visit. I enjoyed every minute of my journey.

Thank you so much to give time to read my article.

–Vansh Arya
XI 'A'

I LOVE FESTIVALS

Diwali, Holi, Gurupurab, Eid
I love all these festivals indeed,
They bring us a lot of happiness
And lots of gifts and sweets to eat.

Christmas teachers us to share
Rakhi tells us how to care,
Dussehra has also lots of fun
With family, friends and everyone !

-Pritesha
VII 'C'

Sets of Proverbs

1. Some sets of proverbs meaning almosts the same :
   A problem shared is a problem halved.
   Misery loves company.
2. In times of prosperity friends are plentiful.
   An empty purse frightens away friends.
3. Grasp all, loose all.
   One who is everywhere is nowhere.
4. A smooth sea never make a skilled Mariner Noting ventured, nothing gained.
5. A monkey in a silk is a monkey no less.
   Don't judge a book by its cover.
6. Kill not the goose that lays golden egg.
   Better to drink the milk than to eat the cow.
7. A guilty conscience needs no accuser
   A fault confessed is half redressed.
8. A young idler, an old begger.
   Poverty waits at the gate of idleness.
9. Practise what you preach.
   Saying is one thing doing is another.
10. However long the night, the down will break every cloud has a silver lining.

–Somdeep
IX 'D'

GENERAL KNOWLEDGE

1. Name a country except India which celebrates its Independence Day on August15?
2. Which country in Asia is the largest producer of Mica.
3. Who brought the first rose plant to India?
4. What was Chandragupta II also Known as?
5. Can you name 2 Presidents of U.S.A. who were father and son?
6. In which century did Korea because independent from China?
7. Who was the first woman in the world to because a Prime Minister?
8. Name a state in India which touches the border of six other states.

Answer :
1. South Korea, 2. India, 3. Babar,
4. Vikramaditya, 5. John Adams,
6. Quincey, 7. Smt. Sirimaud Bandara Naike,
8. Madhya pradesh

–Tushar Chauhan
X

BETTER LIFE

Better life is not because of luck,
But because of work
So, work and work
If you need a life perk
Also work and work
To avoid all this life Jerk.
Work, work and work
If you need the smile luck
Never forget to work;

To enjoy the pages of life's book,
Always do work, work and only work.

–Adharv Bhardwaj
VI 'B'

THE INDIA LOVE

The tradition of India makes us feel proud.
Our students are bright and hardworking.
Our country is progressing
At a tremendous pace.
Within no time effects of edu
Will start showing.
I want to put India on top.
Awake ! Arise ! Do not stop.
Progress India ! Oh India !
It's my constant player.

–Ayush Saini
VIII 'C'

For the very first time... English Shaayari Purely Scientific

When you Breathe, you repire.
When you Breathe, you repire !
When you don't breathe,
You Expire...

–Yeshu
VI 'B'

AMAZING TRUTH

The length of the tongue of a lizard is twice the lenght of its body.

A chimpanzee can recognise itself by looking into a mirror. However a monkey cannot identify itself in the mirror.

The smallest mammel in the world is Bamblabibat.

King Cobra is the only snake that makes its own nest.

Chamelons can change their colour completely in less than two minutes.

The cat fish has over 27,000 taste buds.

The Ostrich's eye is bigger than its brain.

–Bhoomika
IX 'A'

LITTLE THINGS BIG VALUES

A little candle gives light to all.
A little baby gives smile to all.
A little book gives knowledge to all.
A little bee gives knowledge to all.
A little cuckoo gives pleasure to all.
A little dew drop gives spark like a peart.
A little polester shows direction to all.
A little plant hold life of all.
A little smile gives happiness to all.
A little praise gives enegry to all.
Little things make big wonders.

–Drishti
IX 'D'

YOUR NAME START WITH ?

A - Romantic
B - Proud
C - Innocent
D - Lovable
E - Good but Hurtful
F - Compassionate
G - Logical Minded
H - Leadership Potential
I - Helpful
J - Free- Spirited
K - Irritating
L - Funny
M - Emotional
N - Sensible
O - Supportive
P - Awesome
Q - Unpredictable
R - Practical
S - Loving
T - Fake
U - Sensitive
V - Genius
W - Calm
X - Easy-Going
Y - Intelligent
Z - Energetic

–Avi
VI 'B'

SURE SUCCESS

Read but write more
Talk but think more
Play but read more
You will succeed sure.
Eat but chew more
Weep but laugh more
You will succeed sure.

Hate but love more
Order but obey more
Quarrel but agree more.
You will succeed sure.

Punish but save more
Spend but save more
Consume but produce more
You will succeed sure.

–Lakshay
XI 'C'

THE BABES IN THE WOOD

My Dear,
Do you Know,
How a long time ago,
Two poor little children,
Whose names I don't know,
Were stolen away,
On a fine summer day,
And left in a wood,
As I've heard people say?
And when it was night,
So sad was their plight,
The sun went down,
And the moon give no light,
They sobbed and they sighed
And they bitterly cried,
And the poor little things
They laid down and died.

–Abhishek
XII 'B'

Money ! Oh Money

Money ! Oh Money
Everyone wants money
A person who is very funny
Or a person like actor Sunny

Money can give you whatever you desire
But it can burn you like a fire
A richman loses his emotion
By buying cream and lotion

Without money a person is poor
But with money a person is cruel
Money is like the sand
It passes from hand to hand.

Rich man shows pride again and again
But after sometime he suffers from pain
to get money a person works hard
But his money eats him like a leopard.

To earn money is not wrong
But donot forget the love song
So use money carefully
I am saying this word factfully.

–Deepkaran
XI 'C'

DO'S AND DONT'S

Don't' deep in tears
They will not soothe you
Follow always with you
Don't' nourish the fears
They will not teach you
Timely you have to do
It always bring up you

Don't make a big Issue
If its reason is more
The issue must consider
Then solve It with care
Don't be so far to find joy
It is your so near
In heart's shell like a pearl
Find your bright future's pillar.

–Khushi Malik
XII 'B'

केन्द्रीय विद्यालय सिख लाईन्स, मेरठ छावनी

क्रम संख्या	कर्मचारियों के नाम	पद
1	श्री नवल सिंह	प्राचार्य
2	श्री प्रदीप कुमार शर्मा	पी.जी.टी. भौ0 वि0
3	श्रीमती कुसुम लता	पी.जी.टी. अंग्रेजी
4	श्रीमति इशरत परवीन	पी.जी.टी. रसायन विज्ञान
5	श्री विनय कुमार सिंह	पी.जी.टी. इतिहास
6	डॉ0 ऋतु त्यागी	पी.जी.टी. हिन्दी
7	श्री सौरभ कुमार	पी.जी.टी. गणित
8	श्री कृष्णा चन्द वर्मा	पी.जी.टी. भौ0 वि0
9	श्रीमती दिव्या कपूर	पी.जी.टी. अंग्रेजी
10	श्री अजय कुमार	पी.जी.टी. कम्प्यू0 वि0
11	श्री अंकुर गोयल	पी.जी.टी. वाणिज्य
12	श्री दिनेश कुमार	पी.जी.टी. रस0 वि0
13	श्री राकेश चन्द्र वर्मा	पी.जी.टी. भूगोल
14	श्री अमित कुमार सिंह	पी.जी.टी. अर्थशास्त्र
15	श्री विवेक जोहरी	पी.जी.टी. गणित
16	श्रीमती अमिता सैवानिया	पी.जी.टी. हिन्दी
17	श्रीमती शालिनी भंडारी	पी.जी.टी. जीव विज्ञान
18	श्रीमती मंजू सिंह	टी.जी.टी. अंग्रेजी
19	श्रीमती पीयूष लता भाटी	टी.जी.टी. हिन्दी
20	श्री ब्रह्मपाल सिंह नागर	टी.जी.टी. गणित
21	श्रीमती सिम्मी सिंह	टी.जी.टी. सा0 अ0
22	श्री राजकुमार	टी.जी.टी. गणित
23	श्रीमती विमलेश	टी.जी.टी. संस्कृत
24	श्री राजेन्द्र सिंह यादव	टी.जी.टी. सा0 अ0
25	सुश्री शहनाज बानो	टी.जी.टी. गणित
26	श्री उमेश चन्द्र	टी.जी.टी. अंग्रेजी
27	श्री अजय कीर्ति भूषण	टी.जी.टी. गणित
28	श्री जितेन्द्र कुमार	टी.जी.टी. विज्ञान
29	श्रीमती सरिता यादव	टी.जी.टी. विज्ञान
30	श्री लोकेश	टी.जी.टी. हिन्दी
31	श्री मान सिंह यादव	टी.जी.टी. हिन्दी
32	श्री मती मोनिका सखूजा	टी.जी.टी. हिन्दी
33	सुश्री उम्मेहानी	टी.जी.टी. अंग्रेजी
34	श्रीमती मधुबाला	टी.जी.टी. विज्ञान
35	श्रीमती शालिनी आहूजा	टी.जी.टी. अंग्रेजी
36	श्री राजीव	टी.जी.टी. पी.एच.ई.
37	श्री अब्दुल आजिम	टी.जी.टी. कला
38	श्री सुनील कुमार सिंह	टी.जी.टी. ड्ब्ल्यू.ई
39	श्री पंकज कुमार	पुस्तकालय अध्यक्ष
40	श्री दलीप कुमार	मुख्याध्यापक
41	श्रीमती नीलम कुमार	पी.आर.टी.
42	श्रीमती अनीता ठाकुर	पी.आर.टी.
43	श्री अशोक कुमार	पी.आर.टी.
44	डॉ0 प्रिया भार्गव	पी.आर.टी. संगीत
45	श्रीमती मधु अग्रवाल	पी.आर.टी.
46	श्रीमती मोनिका	पी.आर.टी.
47	श्रीमती श्वेता गौतम	पी.आर.टी.
48	श्रीमती आरती	पी.आर.टी.
49	सुश्री श्वेता तोमर	पी.आर.टी.
50	सुश्री डिम्पी तहलान	पी.आर.टी.
51	श्रीमती अर्चना	पी.आर.टी.
52	श्रीमती नीलम छोकर	पी.आर.टी.
53	श्री यशपाल सिंह	पी.आर.टी.
54	श्री दर्शन	पी.आर.टी.
55	श्रीमती रेखा रावत	पी.आर.टी.
56	श्रीमती शिवानी	पी.आर.टी.
57	श्रीमती कुमारी मंजू	पी.आर.टी.
58	श्रीमती मनीषा शर्मा	पी.आर.टी.
59	श्रीमती पूजा सहरावत	पी.आर.टी.
60	श्री पुष्पेन्द्र कुमार	पी.आर.टी.
61	श्री इश्तिकार अंसारी	पी.आर.टी.
62	श्रीमती अमृता रानी	पी.आर.टी.
63	श्रीमती शालू	पी.आर.टी.
64	श्री रजत वितेश कोठारिया	पी.आर.टी.
65	श्री नरेन्द्र कुमार	स0 अनु0 अ0
66	श्री विकास	क0 स0 सह0
67	श्री सिद्धान्त शर्मा	क0 स0 सह0
68	श्री दुर्गेश कुमार	सब स्टाफ

सत्र- 2021-22

आगमन			
क्र. संख्या	कर्मचारियों के नाम	पद	स्थान
1.	श्रीमती इशरत परवीन	पी.जी.टी. रसा. वि.	के.वि. मुजफ्फर नगर
2.	श्रीमती शालिनी भण्डारी	पी.जी.टी. जीव विज्ञान	के.वि. पाराद्वीप पोर्ट
3.	श्रीमती मधुबाला	टी.जी.टी. विज्ञान	के.वि. गुवाहाटी (बोरझर)
4.	श्रीमती मोनिका सखूजा	टी.जी.टी. हिंदी	के.वि. शिमला
5.	सुश्री उम्मेहानी	टी.जी.टी. अंग्रेजी	के.वि. नवरंगपुर
6.	श्रीमती शालिनी आहूजा	टी.जी.टी. अंग्रेजी	के.वि. कावरधा, महाराजपुर
7.	श्री अब्दुल आजिम	टी.जी.टी. कला	के.वि. ग्वालडम
8.	श्री यशपाल सिंह	पी.आर.टी.	के.वि. ग्वालियर नं0 1
9.	श्रीमती रेखा रावत	पी.आर.टी.	के.वि. जालन्धर कैन्ट नं0 1
10.	श्री रजत वितेश कोठारिया	पी.आर.टी.	के.वि. तुरा
11.	श्री पुष्पेन्द्र कुमार	पी.आर.टी.	के.वि. करेरा, आई.टी.बी.पी.
12.	श्री शालू	पी.आर.टी.	के.वि. दादरी, एन.टी.पी.सी.
13.	श्री दर्शन	पी.आर.टी.	के.वि. नीमच, सी.आर.पी.एफ
14.	श्रीमती कुमारी मंजू	पी.आर.टी.	के.वि. गोपाल गंज
15.	श्रीमती शिवानी	पी.आर.टी.	के.वि. अंबाला कैन्ट नं0 2
16.	श्रीमती अमृता रानी	पी.आर.टी.	के.वि. पठानकोट नं0 2
17.	श्री इश्तिकार अंसारी	पी.आर.टी.	के.वि. चेन्नई, सी.एल.आर.आर.
18.	श्रीमती मनीषा शर्मा	पी.आर.टी.	के.वि. बसोली, लखनपुर
19.	श्री गजे सिंह	वरिष्ठ स. सहा.	के.वि. हिंडन नं0 2, गां0 बाद
20.	श्री सिद्धांत शर्मा	कनिष्ठ स. सहा.	के.वि. मुजफ्फर नगर
प्रस्थान			
1.	सुश्री उमा	टी.जी.टी. अंग्रेजी	के.वि. डोगरा लाईन्स मेरठ कैंट
2.	श्रीमती नूतन	पी.आर.टी.	के.वि. बडोदरा नं0 2
3.	श्री विकास	टी.जी.टी. कला	के.वि. ए.एफ.एस., आदमपुर
4.	श्री गजे सिंह	वरिष्ठ स. सहा.	के.वि. संगठन क्षेत्रीय कार्यालय , आगरा
सेवा निवृत्ति			
1.	श्री भूदेव सिंह	टी.जी.टी. सा.अ.	
2.	श्रीमती पूनम	पी.आर.टी.	
3.	श्री बिजेन्द्र	सब स्टॉफ	